ख़ुतबात ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

8

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी

ख़ुत्बात

ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

8

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबंदी

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

नाम किताब

खुत्बात जुलफ़क़ार 'फ़क़ीर'

मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबंदी

पहला एडीशन: 2012 साइज़: 23x36/16

पेज: 268

पेशकर्दा : जनाब मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशक

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2

Phones 23289786, 23289159 Fax: 23279998

E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

KHUTBAT ZULFIQAR *FAQEER* Vol. 8

By: Prof. Muhammad Haneef Naqshbandi

Pages: 268 Size: 23x36/16

Composed at: QAYAM GRAPHICS, Dehra Dun-248001

Ph.: 9675042215, 9634328430

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

फ़हरिस्त-मज़ामीन

(विषय-सूची)

❋ ❋ ❋

इल्म की फ़ज़ीलत

❋ ❋ ❋

इल्म और उलमा की शान

❋ ❋ ❋

ईमान की अज़मत

❋ ❋ ❋

दीने इस्लाम के मुहाफ़िज़

❋ ❋ ❋

इस्तिक़ामत की फ़ज़ीलत

❋ ❋ ❋

वो जो बेचते थे दवाए दिल

❋ ❋ ❋

अख़्लाक़े हमीदा

❋ ❋ ❋

अर्ज़-ए-नाशिर

الحمد لله لوليه والصلوة والسلام على نبيه وعلى آله وصحبه اوتماعه

اجمعين الى يوم الدين. اما بعد

उलमा और नेक लोगों के महबूब हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़्क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दी दामतबरकातुहुम के उलूम व मारिफ़ वाले बयान को छापने का यह सिलसिला ख़ुत्बाते फ़क़ीर के उनवान से 1996 ई० से शुरू किया था और अब यह आठवीं जिल्द आपके हाथों में है। जिस तरह शाहीन (बाज़) की परवाज़ हर आन बुलन्द से बुलन्दतर और बढ़ती चली जाती है कुछ यही हाल हज़रत दामतबरकातुहुम के बयानात हिकमत व मारिफ़त का है। जिस बयान को भी पढ़ेंगे एक नई परवाज़े फ़िक्र नज़र आएगी। यह कोई पेशावर ख़ुत्बात या याद की हुई तक़रीरें नहीं हैं बल्कि हज़रत के दिल का सोज़ और रूह से निकले हुए अल्फ़ाज़ हैं जो अल्फ़ाज़ के सांचे में ढलकर आप तक पहुँच रहे होते हैं।

अल्हम्दुलिल्लाह इदारा मक्तबा फ़क़ीर को यह ऐज़ाज़ हासिल है कि हज़रत दामत बरकातुहुम के इन बयानात को किताबी सूरत में अवाम के नफ़ा उठाने के लिए छापता है। हर बयान को तहरीर में लाने के बाद हज़रत दामत बरकातुहुम से इस्लाह करवाई जाती है, फिर कंपोज़िंग और प्रुफ़रीडिंग का काम भी बड़ी बारीकी के साथ किया जाता है और आख़िर में प्रिन्टिंग और बाइन्डिंग का

पेचीदा और तकनीकी मरहला आता है। यह तमाम मरहले बड़ी तवज्जेह और मेहनत को चाहते हैं जोकि 'मक्तबतुल-फ़क़ीर' के ज़ेरे एहतिमाम अंजाम दिए जाते हैं। फिर किताब आपके हाथों में पहुँचती है। पढ़ने वालों से गुज़ारिश की जाती है कि छपाई के इस काम में कहीं कोई कमी कोताही महसूस हो या इसकी बेहतरी के लिए सुझाव रखते हों तो इत्तिला फ़रमाकर अल्लाह के हाँ अज्र के हक़दार बनें।

बारगाहे ईज़्वी में यह दुआ है कि अल्लाह जल्लेशानुहू हमें हज़रत दामत बरकातुहुम के इन बयानात की गूंज पूरी दुनिया तक पहुँचाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएं और इसे आख़िरत के लिए सदक़ा जारिया बनाएं, अमीन।

डा० शाहिद महमूद नक़्शबंदी अफ़ी अन्हु
ख़ादिम मक्तबातुल फ़क़ीर फ़ैसलाबाद

पेश लफ़्ज़

الحمد لله الذی نور قلوب العارفین بنور الایمان وشرح
صدور الصادقین بالتوحید والایقان وصلی اللّٰہ تعالیٰ علیٰ
خیر خلقہٖ سیدنا محمد وعلیٰ الہٖ واصحابہٖ اجمعین اما بعد.

इस्लाम ने उम्मते मुस्लिमा को ऐसी मशहूर हस्तियों से नवाज़ा है जिनकी मिसाल दूसरे मज़हबों में मिलना मुश्किल है। इस एतिबार से सहाबा किराम पहली सफ़ के सिपाही हैं। जिनमें हर सिपाही ﴿اصحابی کالنجوم﴾ "मेरे सहाबी सितारों की तरह हैं" की तरह चमकते हुए सितारे की तरह है जिसकी रोशनी में चलने वाले ﴿اهتدیتم﴾ कि बड़ी बशारत पाते हैं और रुश्द व हिदायत उनके क़दम चूमती है। उसके बाद ऐसी-ऐसी रुहानी हस्तियाँ दुनिया में आयीं कि वक़्त की रेत पर अपने क़दमों के निशानात छोड़ गयीं।

मौजूदा दौर में एक ज़बरदस्त हस्ती, तरीक़त के शहसवार, हक़ीक़त के दरिया के ग़ोताख़ोर, दीन की गहराईयों को जानने वाले, नूर की तस्वीर, जाहिद, आबिद, नक़्शबंदी सिलसिले के असल, (मौलाना पीर ज़ुलफ़ुक़्क़ार साहब) दामतबरकातुहुम हैं। आप परवाने की तरह एक ऐसी कामिल हस्ती हैं कि जिसको जिस पहलू से भी देखा जाए उसमें क़ौज़-क़ज़ह (इंद्रधनुष) की तरह रंग सिमटे हुए नज़र आते हैं। आपके बयानात में ऐसी तासीर होती है कि हाज़िरीन के दिल मोम हो जाते हैं। आजिज़ के दिल में यह

जज़्बा पैदा हुआ कि उनके ख़ुत्बात को तहरीरी शक्ल में एक जगह कर दिया जाए तो आम लोगों के लिए बहुत मुफ़ीद साबित होंगे। इसलिए आजिज़ ने सारे ख़ुत्बात काग़ज़ पर लिखकर हज़रत अक़्दस की ख़िदमत आलिया में इस्लाह के लिए पेश किए। अल्लाह का शुक्र है कि हज़रत्त अक़्दस दामत बरकातुहुम ने अपनी बहुत ज़्यादा मश्ग़ूलियों के बावजूद ज़र्रा नवाज़ी फ़रमाते हुए न सिर्फ़ उनको सही किया बल्कि उनकी तर्तीब वग़ैरह को पसंद भी फ़रमाया। यह उन्हीं की दुआ और तवज्जेह हैं कि इस आजिज़ के हाथों यह किताब तर्तीब दी जा सकी।

ममनून हूँ मैं आपकी नज़रे इंतिख़ाब का

हज़रत दामतबरकातुहुम का हर बयान बेशुमार फ़ायदे और असरात अपने में रखता है। उनको पन्नों पर लाते हुए आजिज़ की अपनी कैफ़ियत अजीब हो जाती है। बीच-बीच में दिल में यह बहुत ज़्यादा तमन्ना पैदा होती है कि काश! कि मैं भी इन बयान किए हुए हालात से आरास्ता हो जाऊँ। यह ख़ुत्बात यक़ीनन पढ़ने वालों के लिए भी नफ़े का ज़रिया बनेंगे। ख़ालिस नीयत और दिल के ध्यान से इनका पढ़ना हज़रत की बरकत वाली ज़ात से फ़ैज़ उठाने का ज़रिया होगा, इंशाअल्लाह।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर दुआ है कि वह इस मामूली सी कोशिश को क़ुबूल फ़रमाकर बंदे को भी अपने चाहने वालों में शुमार फ़रमा लें। (आमीन सुम्मा आमीन)

फ़क़ीर मुहम्मद हनीफ़ अफ़ी अन्हु
एम०ए०बी०एड०
मौज़ा बाग़, झंग

वराकुस्ली

इंसान को चाहिए कि वह अपनी अवक़ात को याद रखे। याद रखना कि जो बंदा अपनी अवक़ात भूल जाता है उसको अल्लाह तआला आज़माइश में डाल देते हैं। इस बात का ध्यान रहे कि हम क्या थे और क्या बने फिरते हैं। ज़रा बताएं कि जब हम द दुनिया में आए थे उस वक़्त क्या माल हमारे पास था? लिबास था? मकान था? क्या बीवी बच्चे थे? नहीं कुछ भी नहीं था, सब कुछ दुनिया में मिला। ये सब कुछ किसने दिया? अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने दिया।

वराकुरली

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

فَـاذْكُرُوْنِىْ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْالِىْ وَلَا تَكْفُرُوْنَ o سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ

عَـمَّـا يَصِفُوْنَo وَسَـلٰـمٌ عَـلَـى الْمُرْسَلِيْنَo وَالْـحَـمْـدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ o

इर्शादे बारी तआला है :

﴿فَاذْكُرُوْنِىْ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْالِىْ وَلَا تَكْفُرُوْنَo(سورة البقرة:١٥٢)﴾

इस आयत के अव्वल हिस्से में ज़िक्र के बारे में मज़मून है और दूसरे हिस्से में शुक्र का बयान है। ज़िक्र के बारे में तो अक्सर बयानात होते हैं। लिहाज़ा इरादा है कि आज शुक्र के उनवान पर बात कही जाए।

दौरे हाज़िर में माद्दी नेमतों की बहुतात

माद्दी (साज़ व सामान के) एतिबार से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की जितनी नेमतें आज हैं उतनी इससे पहले नहीं थीं। आज का आम बंदा भी पहले के बादशाहों से कई मामलात में बेहतर ज़िंदगी गुज़ार रहा है। पहले वक़्त के बादशाहों के घरों में घी के चिराग़ जलते थे जबकि आज के ग़रीब आदमी के घर में बिजली का क़ुमक़ुमा जलता है। ऐसी रोशनी पहले वक़्त के बादशाहों को

भी नसीब नहीं थी। बादशाहों के ख़ादिम उनको हाथ से पंखा किया करते थे जबकि आज के ग़रीब आदमी के घर में भी बिजली का पंखा मौजूद है। जो ठंडा पानी आज एक आम आदमी को हासिल है वह पहले वक़्त के बादशाहों को भी हासिल नहीं था। इस पर क़यास करते जाइए कि पहले वक़्त के बादशाह अगर सफ़र करते थे तो उनको घोड़ों पर सफ़र करना पड़ता था और उन्हें एक-एक महीना सफ़र में लग जाता था। आप घोड़े पर सवार होकर पेशावर से कराची चलें तो एक महीने का सफ़र बनेगा। लेकिन आज का एक आम इंसान अगर रेलगाड़ी पर बैठकर कराची जाना चाहे तो एक दिन सवार होगा और दूसरे दिन सूरज डूबने से पहले कराची पहुँच चुका होगा। पहले वक़्त के बादशाहों को सिर्फ़ मौसम के फल मिलते थे जबकि आज एक ग़रीब आदमी को भी बेमौसम फल नसीब हैं। पहले इलाक़ाई फल मिला करते थे जबकि आज आदमी को दूसरे मुल्कों के फल भी हासिल हो जाते हैं और वह मज़े से खा रहा होता है। अल्लाह तआला ने अपने बंदों की कमज़ोरी को देखते हुए ये नेमतें आम कर दी हैं।

नाशुक्री में इज़ाफ़ा

गोया माद्दी ऐतिबार से नेमतों की जितनी बारिश आज है उतनी पहले कभी नहीं थी लेकिन इसके बावजूद अल्लाह तआला की जितनी नाशुक्री आज है उससे पहले कभी नहीं थी। जिसकी ज़बान से सुनो, उसी की ज़बान पर नाशुक्री है। हर बंदा कहेगा कि कारोबार अच्छा नहीं है, घर में मुश्किलात हैं और सेहत ख़राब है। हज़ारों में से कोई एक बंदा होगा कि जिससे बात करें तो वह

अल्लाह तआला का शुक्र करेगा। आख़िर वजह क्या है? खाने पीने की बहुतात का यह आलम यह है कि आज फ़क़ीर और भिखारी भी रोटी नहीं मांगता बल्कि सिगरेट पीने के लिए दो रुपए मांगता है। इसलिए कि उसे नशा करना है।

ज़्यादा खाकर मरने वाले

आज के ज़माने में ज़्यादा खाकर मरने वालों की तादाद फ़ाक़ों से मरने वालों के मुक़ाबले बहुत ज़्यादा है। ज़रा बताइए कि जो दिल की शिरयाने (वाल्व) बंद हैं वे फ़ाक़े से बंद होती हैं या चिकनाई ज़्यादा खाने से बंद होती हैं? शूगर की बीमारी ज़्यादा खाने से होती है या फ़ाक़े करने से होती है? ब्लडप्रेशर की बीमारी ज़्यादा खाने से होती है या फ़ाक़े से होती है? यक़ीनन ज़्यादा खाने से ये बीमारियाँ होती हैं जिनकी वजह से आज अक्सर लोग मर रहे हैं। खा-खा कर लोग मर रहे हैं लेकिन फिर भी ज़बान पर शिकवे हैं।

अल्लाह तआला का हिल्म (बर्दाश्त)

अता बिन रबाह रह० अल्लाह के एक नेक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। वह फ़रमाते थे कि एक बार अल्लाह तआला ने मेरे दिल में यह बात डाली कि ऐ अता! उन लोगों से कह दो कि अगर उनको रिज़्क़ में थोड़ी सी तंगी पहुँचे तो ये फ़ौरन महफ़िल में बैठकर मेरे शिकवे करना शुरू कर देते हैं जबकि उनके आमालनामे गुनाहों से भरे हुए मेरे पास आते हैं मगर मैं फ़रिश्तों की महफ़िल में उनकी शिकायतें तो नहीं बयान करता।

पहली बड़ी नेमत

हज़रत शाह वलिउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० फ़रमाते हैं कि हमारे पास अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की सबसे बड़ी नेमत तो यह है कि उसने हमें इंसान बनाया। अगर वह चाहता तो गधा बना देता। किसी ने हमारे ऊपर बोझ लादा होता और डंडे लगा रहा होता। हम डंडे भी खा रहे होते और सामान भी एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाते। अगर वह हमें बंदर बना देता तो किसी ने हमारे गले में लगाम डाली होती। वह हमें गलियों में नचा रहा होता और हम नाच रहे होते। परवरदिगार का यह कितना बड़ा एहसान है कि उसने हमें बिन मांगे इंसानियत की नेमत से नवाज़ा। इस नेमत पर अल्लाह तआला का जितना शुक्र अदा करें उतना ही कम है।

सही सालिम आज़ा

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हमें अशरफ़ुल मख़्लूक़ात बनाकर सही सालिम आज़ा दिए। अगर वह इंसान तो बना देता मगर अक़्ल न देता तो पागलों की भी कोई ज़िंदगी होती है? अगर वह इंसान तो बना देता मगर आँखें न देते तो हम गलियों में ठोकरे खा रहे होते। जिसको हम माँ-बाप कहते हैं उनके चेहरे को देखने से भी तरस रहे होते। परवरदिगार आलम अगर ज़बान न देता तो हमारे अंदर जज़्बात तो होते लेकिन हम अपनी मुहब्बत के जज़्बात को अपने माँ-बाप, बहन-भाईयों के सामने बयान भी न कर सकते। अगर वह सुनने की ताक़त न देते तो लोग इशारों से बातें करते और हम उनकी बातें इशारों से समझा करते। अगर वह टांगे न

देते तो हम कैसे पैदल चल सकते? अगर हाथ न देते तो हम कैसे काम कर सकते थे? परवरदिगार आलम ने ये सब नेमतें हमें बिन मांगे अता फ़रमायीं। अगर कोई आदमी आपको एक लाख रुपए दे और कहे कि ज़रा आप दोनों आँखें निकाल दीजिए तो कौन तैयार होगा? कोई भी तैयार नहीं होगा। भई आपको एक लाख रुपया दे देते हैं आप अपनी ज़बान काटकर दे दीजिए, कोई भी तैयार नहीं होगा। यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की कितनी बड़ी नेमतें हैं जिन्हें कोई बंदा पैसों से भी नहीं ख़रीद सकता और हम देने को तैयार भी नहीं होते।

फ़िक्र की घड़ी

मेरे दोस्तो! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अगर हमें अक़्ल न देते तो हम पागल होते, अगर बीनाई न देते तो हम अंधे होते, अगर सुनने की ताक़त न देता तो हम बहरे होते, अगर बोलने की ताक़त न देते तो हम गूंगे होते, अगर सेहत न देते तो हम बीमार होते, अगर घर न देते तो हम बेघर होते, अगर औलाद न देते तो बेऔलादे होते। अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें माल न देते तो हम भिखारी होते और अगर वह हमें इज़्ज़त न देते तो हम ज़लील होते। सुब्हानअल्लाह यह इज़्ज़तों भरी ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं यह उस मालिक का एहसान ही तो है।

दूसरी बड़ी नेमत

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का दूसरा बड़ा ईनाम यह है कि उसने ईमान अता फ़रमाया। परवरदिगार ने मुसलमानों के घरों में पैदा कर दिया। हमें अभी दाएं बाएं का भी पता नहीं था कि जब

हमारे एक कान में अज़ान कही गई और दूसरे कान में इक़ामत। यूँ हमारे कानों में अल्लाह का नाम पहुँचाया गया। माँ हमें सुलाने के लिए थपकियाँ देती तो "हस्बी रब्बि जल्लल्लाह माफ़ी क़ल्बी ग़ैरुल्लाह" की लोरियाँ सुनाया करती थीं। बहन झूला झुलाया करती थी तो "ला इलाहा इल्लल्लाह" और "अल्लाह, अल्लाह" की लोरियाँ सुनाती थी। जब हम ज़रा बड़े हुए तो हमारे वालिद जुमा के दिन हाथ पकड़कर मस्जिद की तरफ़ ले जाते और इस तरह उन्होंने हमें अल्लाह के घर का रास्ता दिखाया। ज़रा सोचिए कि इतनी छोटी सी उम्र में अल्लाह तआला ने हमें ये नेमतें अता फ़रमायीं जिसकी वजह से आज हम मुसलमान हैं। यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का कितना बड़ा करम है।

तीसरी बड़ी नेमत

इससे बढ़कर यह नेमत अता फ़रमाई कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हमें अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में से बनाया। यह वह फ़ज़ीलत है जिसे हासिल करने के लिए पहले वक़्त के अंबिया किराम भी तमन्नाएं किया करते थे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दुआ क़ुबूल फ़रमाई और वह क़यामत के क़रीब दुनिया में दोबारा तशरीफ़ लाएंगे और इस उम्मत में आकर ज़िंदगी गुज़ारेंगे। उम्मती होने के नाते रोज़े महशर नबी अलैहिस्सलाम की शफ़ाअत नसीब होगी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जन्नतियों के तीन हिस्से बनाए जाएंगे। उनमें से दो हिस्से मेरी उम्मत के होंगे और एक हिस्सा बाक़ी तमाम अंबिया किराम की उम्मतों का होगा। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने

हर नबी को एक-एक दुआ मांगने का अख़्तियार दिया जिसे ठीक उसी तरह क़ुबूल कर लिया जाएगा चुनाँचे सब अंबिया किराम ने दुआ मांगीं और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुबूल फ़रमायीं। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब! क्या आप ने भी कोई दुआ मांगी? इर्शाद फ़रमाया, मैंने अपनी दुआ को आख़िरत के लिए ज़ख़ीरा बना लिया। मैंने दुआ नहीं मांगी। मैं क़यामत के दिन वह दुआ मांगूगा और उस वक़्त तक जन्नत में नहीं जाऊँगा जब तक मेरा आख़री उम्मती भी जन्नत में दाख़िल नहीं हो जाएगा। तो यह अल्लाह रब्बुल-आलमीन का कितना बड़ा करम है कि उसने हमें रहमतुल्लिलआलमीन की उम्मत में से पैदा फ़रमा दिया।

नेमतों का शुमार

अच्छा आप मुझे बताएं कि क्या कोई आदमी बारिश के पानी के क़तरों को गिन सकता है? नहीं गिन सकता। सारी दुनिया के पेड़ों के पत्तों को गिन सकता है? नहीं गिन सकता। सारी दुनिया की रेत के ज़र्रात को गिन सकता है? नहीं गिन सकता लेकिन इस के बावजूद आजिज़ कहता है कि आसमान के सितारों को गिनना मुमकिन है, बारिश के क़तरों को गिनना मुमकिन है, सारी दुनिया के पेड़ों के पत्तों को गिनना मुमकिन है, सारी दुनिया के रेत ज़र्रात को गिनना मुमकिन है लेकिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की जो नेमतें हम पर बरस रही हैं उन नेमतों को गिनना हमारे लिए नामुमकिन है क्योंकि क़ुरआन पाक में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़रमाया :

﴿وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا. (سورۃ ابراہیم ۳۴)﴾

और अगर तुम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नेमतों को गिनना भी चाहो तो तुम उसको गिन भी नहीं सकते।

बेहतरीन निज़ामे अस्बी

डाक्टरों ने लिखा है कि इंसान के दिमाग़ को पूरे जिस्म से एक सेकन्ड में एक लाख ख़बरें मिल रही होती हैं और दिमाग़ उनको कंट्रोल कर रहा होता है। अब सोचिए कि दिमाग़ का सलामत रहना अल्लाह तआला की कितनी बड़ी नेमत है। अल्लाह तआला ने जो दिमाग़ से जिस्म के आज़ा को कंट्रोल करवाया, उसकी वाएरिंग करवाई, उसे नर्वस सिस्टम कहते हैं। इस वाएरिंग के ज़रिए दिमाग़ आज़ा को सिगनल भेजता है और उसी सिगनल परआज़ा काम करते हैं। ये सब सिग्नलस दिमाग़ से रीढ़ की हड्डी में जाते हैं। इसको स्पाइनल कार्ड कहते हैं और फिर वहाँ से पूरे जिस्म में जाते हैं। मैं कोई हवाई बातें नहीं कर रहा हूँ बल्कि ज़िम्मेदारी के साथ पक्की बातें कर रहा हूँ। इंसान के जिस्म में इतनी नर्वज़ हैं। बुक ऑफ़ साइन्स में डाक्टरों ने यह बात लिखी है कि हर इंसान के अंदर इतनी वायरिंग इस्तेमाल हुई है कि अगर एक नर्व को दूसरी नर्व से जुदा कर दिया जाए और सब नर्वज़ को एक दूसरे से गांठ बांधते चले जाएं तो यह इतनी लंबी होगी कि पूरी दुनिया के चारों तरफ़ इसके दो चक्कर आ सकते हैं। इतनी वाएरिंग एक बंदे में काम कर रही होती है। यह सारी वायरिंग ठीक काम करती है तो हमारी सेहत ठीक रहती है और कहीं सर्किट शाट हो जाए तो बंदा बीमार हो जाता है। कहते हैं कि इसको Misthenia Gravous की बीमारी है, इसको फ़लाँ बीमारी है, इसको फ़लाँ बीमारी है। यूँ बंदे की ज़िंदगी ख़त्म हो जाती है।

जिस तरह हमारे घरों में बिजली के तारों पर पीवीसी इंसूलेशन चढ़ी होती है उसी तरह हमारे जिस्म में भी अल्लाह तआला ने हर नर्व को इन्सुलेट किया हुआ है। एक नर्व दूसरी नर्व से शार्ट सर्किट नहीं हो सकती। अब आप सोचिए कि यह कितना पेचीदा निज़ाम है जो हमारे जिस्म में ठीक काम कर रहा है। कभी हमने अल्लाह की इस नेमत का शुक्र अदा किया है?

याद रखें कि कुछ चीज़ों का होना इसांन के लिए नेमत है और कुछ चीज़ों का न होना इंसान के लिए नेमत है। मिसाल के तौर पर हम कोई चीज़ खाएं तो वह आराम से पेट में चली जाती है। यह अल्लाह की नेमत है। लेकिन कुछ ऐसे भी लोग होते हैं कि हर चीज़ नहीं खा सकते। एक औरत ने फ़ोन पर दुआओं के लिए कहा। वह लाहौर में रहती है। वह कहने लगी कि पूरे सात साल गुज़र गए, मैं सेवन-अप या कोई जूस वग़ैरह पीने के अलावा और चीज़ रोटी वग़ैरह खा नहीं सकती। अगर खाने की कोशिश करूं तो फ़ौरन उल्टी आ जाती है। कहने लगी कि मैं सात साल से घरवालों और रिश्तेदारों के लिए दावतों के खाने पकाती हूँ मगर खुद उन खानों के खाने से महरूम हूँ। मैं तो खाने को तरस गई हूँ। अब बताइए कि वह तो सात साल से खाना नहीं खा सकी। अगर हम सुबह, दोपहर, शाम खाते हैं। कभी हमने यह भी महसूस किया कि यह अल्लाह तआला की नेमत है कि आसानी से खाना अंदर चला जाता है और अंदर का खाना बाहर नहीं आता।

ग़िज़ा की नाली का वाल्व

ग़िज़ा की नाली के अंदर एक वाल्व है। वह ऐसा वाल्व है कि

इंसान जो खाना खाता है वह उसको तो अंदर जाने देता है लेकिन वह उसको बाहर नहीं आने देता। वह नॉन-रिटर्न वाल्व यानी जब ग़िज़ा अंदर जाती है तो वह खुल जाता है और जब बाहर आने लगती है तो बंद हो जाता है और ग़िज़ा को वापस नहीं आने देता। इसलिए आप अभी रोटी खाएं और अभी सर के बल उल्टे खड़े हो जाएं तो आपके मुँह से खाना बाहर नहीं निकलेगा।

लेटने से महरूम होने वाले डाक्टर

अमरीका में हमारे एक दोस्त डाक्टर हैं। वह ख़ुद एमबीबीएस डाक्टर हैं। अल्लाह की शान कि उनका यह वाल्व ख़राब हो गया। नतीजा यह निकला जो कुछ मैदे में होता है वह ज़रा भी उल्टे हों तो वह सब कुछ मुँह से बाहर निकलता है। उनकी परेशानी हद से बढ़ गई। डाक्टरों ने कहा कि इसका कोई ईलाज नहीं। लिहाज़ा आप को अपनी बाक़ी ज़िंदगी बैठकर गुज़ारना पड़ेगी। आप लेट भी नहीं सकते। चुनाँचे जब वह हमें मिलने के लिए आते हैं तो सब लोग मीठी नींद सो रहे हाते हैं लेकिन वह बेचारे दीवार के साथ टेक लगाकर पाँव लंबे करके बैठे होते हैं और इस हालत में उनको नींद आ जाती है। वह कहते हैं कि अब अल्लाह तआला ने मुझ से लेटकर सोने वाली नेमत छीन ली है। उनको देखकर हमें एहसास हुआ कि ऐ मालिक! लेटकर बिस्तर पर आराम से सो जाना कितनी बड़ी नेमत है।

आँख का वाइपर

एक आदमी का एक्सीडेंट हुआ। उनकी आँख का पपोटा कट गया। उनकी एक आँख पर पर्दा था और दूसरी पर नहीं, जैसे

मछली की आँख होती है। कुछ दिनों में उनका ज़ख़्म तो ठीक हो गया मगर परेशानी यह थी कि हर दो तीन घंटों के बाद आँख की बीनाई धुंधली हो जाती। डाक्टर ने कहा, हवा में मिट्टी के छोटे छोटे ज़र्रात होते हैं, वे आँख पर जम जाते हैं। इसलिए आपको बार-बार आँख धोना पड़ेगी। चुनाँचे उसे हर दो घंटे बाद आँख धोना पड़ती। आप जानते हैं कि जब आदमी पानी में ज़्यादा देर नहाए या कपड़े या बर्तन धोए तो हाथ कैसे हो जाते हैं। इसी तरह जब वह बार-बार आँख धोने लगे तो उनके गाल के ऊपर ज़ख़्म सा बन गया। उसके बाद पानी लगने से उन्हें जलन महसूस होने लगी। वह परेशान थे। डाक्टरों को बताया तो वह कहने लगे कि हम कुछ नहीं कर सकते। एक दिन वह बड़ा रोया और डाक्टरों से कहा कि इसका कोई हल निकालें। मगर डाक्टरों ने कहा कि बात दरअसल यह है कि इंसान आँख को साफ़ रखने के लिए अल्लाह तआला ने आँख का यह पर्दा बनाया है और इस पर्दे को वाइपर बना दिया जो आँख की स्क्रीन को अपने आप साफ़ करता रहता है। हम खाना खा रहे होते हैं, पानी पी रहे होते हैं, बात कर रहे होते हैं मगर हमें पता नहीं होता और पलक अपने आप झपक रही होती है। अब आपकी आँख का वाइपर ख़त्म हो चुका है। इसलिए आपको यह आँख बार-बार साफ़ करना पड़ेगी। डाक्टर की बात सुनकर वह कहने लगे, ऐ अल्लाह! पलक झपकना तेरी कितनी बड़ी नेमत थी।

दमे के मरीज़ों की बेचैनी

आप ज़रा उस आदमी को देखें जो दमे का मरीज़ हो हम ने

ऐसे मरीज़ों को देखा है। उन बेचारों की अंदर की सांस अंदर और बाहर की सांस बाहर रहती है। उनकी हालत बिल्कुल ऐसी होती है जैसे मुर्ग़ बेमिस्मिल की तड़पते वक़्त होती है। सांस उनके क़ाबू में नहीं होती। गोया सांस का आराम से अंदर चले जाना और फिर अंदर से आराम से बाहर आ जाना अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की बहुत बड़ी नेमत है। ऐसे मरीज़ों ने अपने पास पम्प रखे होते हैं। ज़रा सी गर्द या मिट्टी आ जाए तो पम्प लगा लेते हैं और कहते हैं जी कि क्या करें, सांस उखड़ जाता है।

प्याला भर पानी की क़ीमत

एक बार सुलेमान बिन हर्ब रह० तशरीफ़ ले जा रहे थे। वक़्त का बादशाह हारून रशीद उस वक़्त उनके दरबार में मौजूद था। हारून रशीद को प्यास लगी। उसने अपने ख़ादिम से कहा कि मुझे पानी पिलाओ। ख़ादिम एक गिलास में ठंडा पानी लेकर आया। जब बादशाह ने गिलास हाथ में पकड़ लिया तो सुलेमान रह० ने उन्हें कहा, बादशाह सलामत! ज़रा रुक जाइए। वह रुक गया। उन्होंने फ़रमाया कि आप मुझे एक बात बताइए जैसे आपको अभी प्यास लगी है, ऐसे ही आपको प्यास लगे और पूरी दुनिया में इस पानी के सिवा कहीं और पानी न हो तो आप यह बताएं कि आप इस प्याले को कितनी क़ीमत में ख़रीदने पर तैयार हो जाएंगे? हारून रशीद ने कहा मैं तो आधी सलतनत दे दूंगा। फिर सुलेमान रह० ने फ़रमाया, आप यह पानी पी लें और यह आपके पेट में चला जाए लेकिन अंदर जाकर आपका पेशाब बंद हो जाए और फिर वह निकल न पाए और पूरी दुनिया में सिर्फ़ एक हकीम

हो जो उसे निकाल सकता हो तो बताइए, इसको निकलवाने की कितनी फ़ीस देंगे? सोचकर हारून रशीद रह० बक़िया आधी सलतनत भी इसको दे दूंगा। वह कहने लगे बादशाह सलामत ज़रा ग़ौर करना कि आपकी पूरी सलतनत पानी का एक प्याला पीने और पेशाब बनकर निकलने के बराबर है, अल्लाहु अकबर कबीरा।

अगर हम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नेमतों पर ग़ौर करें तो फिर दिल से यह आवाज़ निकलेगी कि हमें अपने रब का बुहत ज़्यादा शुक्र अदा करना चाहिए। हम पर तो उसकी बड़ी नेमतें हैं। हम तो वाक़ई उनका शुक्र अदा ही नहीं कर सकते।

औलाद वाली नेमत

जिनके पास औलाद है वह ज़रा उस बंदे से बात करके देखें जिसको औलाद नहीं मिली। हमने लोगों को औलाद के लिए रोते हुए देखा है। औरतें बेचारी रो-रो कर अल्लाह से औलाद मांगती हैं कि ऐ अल्लाह! हमें औलाद वाली नेमत अता फ़रमा दे मगर औलाद नहीं मिलती। डाक्टरों को फ़ीस भी देती हैं, चैकअप भी करवाती हैं और सारा कुछ करने के बाद फिर भी रोकर दुआएं मांग रही होती हैं। परवरदिगार ने हमें जो औलाद अता फ़रमाई है वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का कितना बड़ा करम है।

भिखारी औरतों का मुक़द्दर

आपने बड़े शहरों में देखा होगा कि वहाँ लड़कियाँ और औरतें मांगने वाली फिर रही होती हैं। कई मर्तबा ऐसे होता है कि आप स्टाप पर खड़े होते हैं। अचानक कोई शीशा खटखटाता है। आप

देखते हैं तो मांगने वाली औरत नज़र आती है। जब कोई मांगने वाली औरत दरवाज़ा खटखटाती है तो मेरा दिल कांप जाता है और ज़हन में यह बात आती है कि ऐ अल्लाह! यह भी तो किसी की बेटी होगी, किसी की बहन होगी और किसी की माँ होगी। आपने इसका क्या मुक़द्दर बना दिया कि ग़ैर-मर्दों के सामने अपने हाथ फैलाती फिरती है। धूप में धक्के खाती फिरती है। कभी उसके पास कभी इसके पास। इस पर कैसी-कैसी निगाहें पड़ती हैं। इसे कैसी-कैसी बातें सुनना पड़ती हैं। कोई दे देता है, कोई ठुकरा देता है और यह मांग-मांग कर टुकड़े खा रही होती है। आपने हमारी औरतों को घर के अंदर पर्दे में रहकर मन मर्ज़ी की ग़िज़ाए पकाकर खाने की जो नेमत दी है हम तो इस नेमत का शुक्र भी अदा नहीं कर सकते। अगर खुदा न करे हमारी औरतों को भी रोटी के लिए घर से बाहर निकलना पड़ता तो क्या बनता? यह ग़ैरतें किधर जातीं। हमारी इज़्ज़तें इसलिए महफ़ूज़ हैं कि घर बैठे रिज़्क़ मिल जाता है। हम अपनी मनपसन्द के खाने खाते हैं। सुबह उठकर औरतें मियाँ से पूछती हैं कि आज क्या पकाना है यानी अल्लाह तआला ने इतना दिया हुआ है कि जो चाहें पका सकते हैं। यह अल्लाह का कितना बड़ा करम है। हमें इस नेमत पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए।

अपनी अवक़ात न भूलें

इंसान को चाहिए कि वह अपनी अवक़ात को याद रखे। याद रखना जो बंदा अपनी अवक़ात को भूल जाता है, अल्लाह तआला उसको आज़माइश में डाल देते हैं। इस बात का ध्यान रहे कि मैं

क्या था और क्या बने फिरते हैं। ज़रा बताएं कि जब हम दुनिया में आए था उस वक़्त क्या माल हमारे पास था? क्या मकान हमारे पास था? क्या बीवी-बच्चे थे? कुछ भी नहीं था। सब कुछ दुनिया में मिला। ये सब कुछ किसने दिया? अल्लाह रब्बुललइज़्ज़त ने दिया।

एक बेअदब को डांट

एक बेअदब और गुस्ताख़ आदमी मुझे कहने लगा कि यह सब कुछ हमने अक़्ल से कमाया, अच्छे फ़ैसले किए और मेहनत से कमाया। मैंने कहा, अच्छा बताओ कि तुम्हें अक़्ल किसने दी? वह कहने लगा, अल्लाह ने। मैंने कहा कि तुम्हें मेहनत करने की तौफ़ीक़ किसने दी? कहने लगा, अल्लाह ने। मैंने कहा फिर मालूम यह हुआ कि रिज़्क़ भी फिर अल्लाह तआला ने ही दिया।

एक सबक़ आमोज़ क़िस्सा

हज़रत मौलाना बदरे आलम साहब रह० "तर्जुमानुस्सुन्नत" में एक हदीस नक़ल फ़रमाते हैं कि बनी इस्राईल में तीन आदमी थे। उनमें से एक आदमी कोढ़ का मरीज़ था। उसके पास एक आदमी ने आकर कहा, क्या आपको कोई परेशानी है? उसने कहा, मैं कौन सी परेशानी आपको बताऊँ? एक तो मैं कोढ़ का मरीज़ हूँ जिसकी वजह से लोग मेरी शक्ल देखना भी पसंद नहीं करते। दूसरे रिज़्क़ की बड़ी तंगी है। उस आदमी ने कहा, अच्छा अल्लाह तआला आपकी बीमारी को भी दूर कर दे और आपके रिज़्क़ में भी बरकत अता फ़रमा दे। नतीजा यह निकला कि अल्लाह तआला ने उसकी बीमारी भी दूर कर दी और अल्लाह तआला ने

उसे एक ऊँटनी अता फ़रमाई। उस ऊँटनी की नसल इतनी बढ़ी कि वह हज़ारों ऊँटों और ऊँटनियों के रेवढ़ का मालिक बन गया। जिसकी वजह से वह बड़ा अमीर आदमी बन गया और रहने के लिए महल बना लिए।

दूसरा आदमी गंजा था। वह आदमी उस गंजे के पास आया और पूछा कि क्या तुम्हारी कोई परेशानी है? उसने कहा, जनाब मेरे सर पर तो बाल ही नहीं हैं। जिसके पास बैठूं वही मज़ाक करता है। जो कारोबार करता हूँ, ठीक नहीं चलता। उसने कहा अच्छा अल्लाह तआला तुझे सर पर ख़ूबसूरत बाल भी अता करे और तुझे अल्लाह तआला रिज़्क़ भी दे। चुनाँचे अल्लाह तआला ने उसे एक गाय अता की। उस गाय की नसल इतनी बढ़ी कि वह हज़ारों गायों के रेवढ़ का मालिक बन गया। वह भी आलीशान महल मे बड़ी ठाठ की ज़िंदगी गुज़ारने लग गया।

तीसरा आदमी आँखों से अंधा था। वह आदमी उस अंधे के पास गया और उसे पूछा, भई! आपको कोई परेशानी तो नहीं? उसने कहा, जी मैं तो दर-ब-दर की ठोकरें खाता हूँ। लोगों के घरों से जाकर मांगता हूँ, हाथ फैलाता हूँ। मेरी भी कोई ज़िंदगी है। टुकड़े मांग-मांग कर खाता फिरता हूँ। मैं न अपनी माँ को देख सकता हूँ और न बाप को। इसके अलावा रिज़्क़ की तंगी भी है। उस आदमी ने उसकी बीनाई के लिए और रिज़्क़ की फ़राख़ी के लिए दुआ कर दी। अल्लाह तआला ने उसे बीनाई भी दे दी और उसको एक बकरी दे दी। उस बकरी का रेवढ़ इतना बढ़ा कि वह हज़ारों बकरियों का मालिक बन गया। इस तरह वह भी आलीशान महल में इज़्ज़त की ज़िंदगी गुज़ाने लग गया। कई सालों के बाद वह तीनों अपने वक़्त के सेठ कहलाने लगे।

काफ़ी अरसा गुज़रने के बाद वही आदमी पहले के पास आया। उसने उसे कहा कि मैं मुहताज हूँ। अल्लाह के नाम पर मांगने के लिए आया हूँ। उसी अल्लाह ने आपको सब कुछ दिया है। आपके पास तो कुछ भी नहीं था। आज इतना कुछ आपके पास है। आप इसमें से उसी अल्लाह के नाम पर मुझे भी कुछ दे दें। जब उसने सुना कि तुम्हारे पास कुछ भी नहीं था तो उसका पारा चढ़ गया और कहने लगा, ज़लील क़िस्म के लोग मांगने के लिए आ जाते हैं। ख़बरदार ऐसी बात आइन्दा न करना। मैं अमीर, मेरा बाप अमीर, मेरा दादा भी अमीर आदमी था। हम तो ख़ानदानी अमीर हैं। तुम कौन हो इस बात को करने वाले कि तुम्हारे पास कुछ भी नहीं था। चले जाओ यहाँ से वरना मैं जूते लगवाऊँगा। चुनाँचे उसने कहा, अच्छा मियाँ! नाराज़ न होना, तुम जैसे थे अल्लाह तुम्हें वैसा ही कर दे। वह जब यह कहकर चला गया तो उसके जानवरों में एक बीमारी पड़ गई और उसके सब ऊँट मर गए। और कोढ़ की बीमारी दोबारा लग गई। गोया वह जिस पोज़ीशन में था उसी पोज़ीशन में दोबारा लौट आया।

उसके बाद वह दूसरे आदमी के पास गया और उसे कहा, मैं मुहताज हूँ। मैं उसी अल्लाह के नाम पर मांगने आया हूँ जिसने आपको सब कुछ दिया है। आपके पास तो कुछ भी नहीं था। आज इतना कुछ है। जब उसने यह बात की तो वह बड़ा गुस्से में आ गया और कहने लगा, तुम मुफ़्तख़ोर हो। हम ने कमाकर इतना कुछ बनाया है। मैंने फ़लां सौदा किया तो इतनी बचत हुई और फ़लां सौदा किया तो इतने कमाए। लोग मुझे बड़ा बिजनिस माइन्डेड कहते हैं। मेरी तो यह ख़ून पसीने की कमाई है। ऐसे ही पेड़ों से तोड़कर नहीं लाए और न यह चोरी का माल है। अब चला

जा यहाँ से वरना दो थप्पड़ लगाऊँगा। जब उस अमीर आदमी ने ख़ूब डांट-डपट की तो उसने कहा, भई नाराज़ न होना तुम जैसे पहले थे अल्लाह तुम्हें दोबारा वैसे ही कर दे। चुनाँचे उसके सर के बाल भी ग़ायब हो गए और अल्लाह तआला ने उसकी गायों में एक ऐसी बीमारी पैदा कर दी जिससे सब गायं मर गयीं। इस तरह जैसा पहले था वैसा ही बन गया।

इसके बाद वह तीसरे के पास गया और कहा, भई! मैं अल्लाह के नाम पर मांगने आया हूँ, मुहताज हूँ। आपके पास कुछ भी नहीं था। अल्लाह तआला ने आपको सब कुछ दिया। अब उसी अल्लाह के नाम पर मुझे भी कुछ दे दो। जब उसने यह बात की तो उसकी आँखों में आँसू आ गए। वह कहने लगा, भई! तुमने बिल्कुल सच कहा। मैं तो अंधा था लोगों के लिए तो रात को अंधेरा होता है और मेरे लिए तो दिन में भी अंधेरा हुआ करता था। मैं तो दर-दर की ठोकरें खाता था। लोगों से मांग-मांग कर ज़िंदगी गुज़ारता था। मेरे भी कोई हालात थे? कोई अल्लाह का बंदा आया। उसने मुझे दुआ दी। अल्लाह तआला ने मुझे बीनाई भी दे दी और इतना रिज़्क़ भी दे दिया। आज आप उस अल्लाह के नाम पर मांगने के लिए आए हैं तो मियाँ! इन दो पहाड़ों के बीच हज़ारों बकरियाँ फिर रही हैं। जितनी चाहो तुम अल्लाह के नाम पर ले जाओ। जब उस अमीर आदमी ने यह बात की तो मुख़ातिब कहने लगा, मुबारक हो। मैं तो अल्लाह का फ़रिश्ता हूँ। अल्लाह ने मुझे तीन बंदों की तरफ़ आज़माइश बनाकर भेजा था। दो तो अपनी अवक़ात भूल गए हैं मगर तुमने अपनी अवक़ात को याद रखा है। अल्लाह तआला तेरे माल में और ज़्यादा बरकत अता फ़रमाए। चुनाँचे कहते हैं कि वह आदमी बनी इस्राईल का

सबसे बड़ा अमीर कबीर आदमी था। साबित हुआ कि बंदा अगर अपनी अवक़ात और बुनियाद को याद रखे तो अल्लाह तआला बरकत दे देते हैं।

तकब्बुर का बोल

आपने कई लोगों को देखा होगा, उनका काम बड़ा अच्छा होता है। फिर एकदम सब नीचे आ जाते हैं। फिर आकर कहते हैं कि हज़रत! पहले लाखों लेने होते थे, अब लाखों देने हैं। पहले हम मिट्टी को हाथ लगाते थे तो सोना बन जाता था और अब सोने को हाथ लगाते हैं तो मिट्टी बन जाता है, पता नहीं क्या हो गया है। इसकी दो वजूहात हैं। या तो वह अपनी अवक़ात को भूलकर नाशुक्री करते हैं या फिर कोई तकब्बुर का बोल बोलते हैं। तकब्बुर का बोल अल्लाह तआला को बड़ा नापसन्द है। इस की वजह से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनसे नेमतें वापस ले लेते हैं।

मेज़ की दूसरी तरफ़

मेरे दोस्तो! यह बात याद रखना जो परवरदिगार देना जानता हैं वह परवरदिगार लेना भी जानते हैं। बंदे को बंदगी और आजिज़ी ही सजती है। लेकिन जो बंदा 'मैं' दिखाए और उसमें बड़ापन आ जाए तो फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसके हालात का रुख़ बदल देते हैं।

He can put us on the other side of the table.

वह जब चाहें हमें मेज़ के दूसरी तरफ़ बिठा सकते हैं। आज उसने देने वाला बनाया है, अगर वह चाहें तो कल हमें लेने वाला भी बना सकता है। फिर हम मांगते फिर रहे होंगे।

एक क़ीमती उसूल

मेरे दोस्तो! एक उसूल याद रखना कि नेमतों की क़द्रदानी के लिए नेमतों के छिन जाने का इंतिज़ार न करना बल्कि उससे पहले-पहले नेमतों की क़द्रदानी कर लेना क्योंकि नेमतों के छिन जाने के बाद तो यह मिसाल फ़िट बैठती है, "अब पछताए क्या होत जब चिड़ियाँ चुग गई खेत" आज के इस पूरे बयान का ख़ुलासा जो यह आजिज़ आपको समझाना चाहता है वह यही है कि नेमतों की मौजूदगी में नेमतों की क़द्रदानी करना सीखिए। इस तरह अल्लाह तआला नेमतों में और ज़्यादा इज़ाफ़ा फ़रमा देंगे और अगर हम तकब्बुर की बातें करेंगे तो याद रखना कि अल्लाह तआला तकब्बुर को नापसन्द करते हैं।

तकब्बुर की सज़ा

हमारे शहर में एक बड़ा ज़मींदार आदमी था। अंग्रेज़ों ने उसे इतनी ज़मीनें दीं कि रेलगाड़ी चलती तो अगला स्टेशन उसी की ज़मीन में आता था, फिर रेलगाड़ी चलती तो दूसरा स्टेशन भी उसकी ही ज़मीन में आता था, फिर रेलगाड़ी चलती तो तीसरा स्टेशन भी उसकी ज़मीन में आता था। गोया रेलगाड़ी के तीन स्टेशन उसकी ज़मीनों में आते थे। वह अरबोंपति आदमी था। उसका एक आलीशान घर था, ख़ूबसूरत बीवी थी और एक ही बेटा था। उसकी ज़िंदगी ठाठ की गुज़र रही थी। वह एक मर्तबा अपने दोस्तों के साथ शहर के एक चौक पर खड़ा आइसक्रीम खा रहा था। इसी दौरान उसके दोस्त ने कहा आजकल कारोबार अच्छा नहीं है। कुछ परेशानी है और हम मसरूफ़ रहते हैं। यह

सुनकर उसके अंदर 'मैं' आई और वह कहने लगा, यार! तुम भी क्या हो, हर वक़्त परेशान फिरते हो कि आएगा कहाँ से? लेकिन मैं तो परेशान फिरता हूँ कि लगाऊँ कहाँ कहा पर। मेरी तो इक्कीस नस्लों को भी कमाने की परवाह नहीं है।

जब उसने तकब्बुर की बात की तो अल्लाह तआला को सख़्त नापसन्द आई। नतीजा यह निकला कि वह छः महीने के अंदर दुनिया से रुख़्सत हो गया। पीछे उसका नौजवान बेटा था। उसकी उम्र सत्रह अठ्ठारह साल थी। वह उसकी सारी जाएदाद का वारिस बन गया। उठती जवानी थी और पैसा बेहद व हिसाब था। इसी तरह उसके दोस्त भी बन गए जिन्होंने उसको ग़लत रास्ते पर डाल दिया। उसको शबाब और शराब वाले काम सिखा दिए। उठती जवानी में ये ज़िन्सी गुनाह बहुत पुरकशिश होते हैं। आदमी चाहता है कि खाने को मिले या न मिले अलबत्ता गुनाह करने का मौक़ा ज़रूर मिलना चाहिए। चुनाँचे उसको रोज़ाना नए मेहमान मिल जाते। इसी तरह वह पैसा पानी की तरह बहाने लग गया। कुछ अरसे के बाद उसने बड़े शहरों का रुख़ कर लिया। उसने कुछ सालों में ख़ूब जी भरकर अय्याशी की। उसे कोई ऐसा दोस्त मिला जिसने उसे कहा कि आओ ज़रा तुम्हें बाहर मुल्क की सैर करवाते हैं। वह उसे थाइलैंड ले गया। और उसने चिट्टी चमड़ी (गोरे रंग वाली लड़कियों) से उसका तार्रुफ़ करवाया। वहाँ क्लबों में भी दरिया की तरह पैसा बहाया। उसने सारी-सारी रात अय्याशी करने में गुज़ार दी। यहाँ तक कि सारा बैंक बैलेंस ख़त्म हो गया।

अब न सेहत रही न पैसा रहा। वह वक़्त भी आया कि वापस आकर उसको घर बेचना पड़ गया। चुनाँचे जब घर बिक गया तो

तो उसने फुटपाथ पर सोना शुरू कर दिया और जिस चौक पर खड़े होकर उसके बाप ने तकब्बुर की बात की थी उसी चौक में उसका यह बेटा खड़े होकर भीख मांगा करता था।

अल्लाह तआला ने दिखा दिया कि तुम्हें हम ने जो इतना दिया है उस पर तकब्बुर करते हो। कहते हो कि मैं परेशान हूँ कि लगाऊँगा कहाँ पर और तुम कहते हो कि मेरी इक्कीस नस्लों को भी कमाने की परवाह नहीं। नहीं, जहाँ तुम खड़े हो, यहीं तुम्हारा बेटा खड़ा होकर भीख मांगा करेगा। मेरे दोस्तो! हो सकता है कि बाक़ी गुनाहों की सज़ा सिर्फ़ आख़िरत में मिले लेकिन तकब्बुर वह गुनाह है जिसकी सज़ा आख़िरत में तो मिलेगी ही सही, अल्लाह तआला उसकी सज़ा दुनिया में भी ज़रूर दिया करते हैं।

शुक्र का मफ़हूम

लफ़्ज़ "शुक्र के माने और ख़ुलासा क्या है? अपने मोहसिन के एहसानात को याद करते हुए उसकी तारीफ़ें करना। उसकी बात को मान लेना और उसकी नाफ़रमानी करने से शर्मा जाना, शुक्र कहलाता है।

एहसानात को याद करके उसकी तारीफ़ करने का मतलब यह है कि जैसे आज कोई सेवन-अप पिला दे तो उसे थैंक्यू कह देते हैं। जो सोडे की बोतल पिला दे तो उसका शुक्रिया अदा करते हैं। और जो रोज़ सुबह, दोपहर और शाम खाना खिलाए उसका शुक्र अदा करना याद नहीं होता। जिसने बेटे की नौकरी लगवा दी उसकी तारीफ़ें करते हुए नहीं थकते हैं और कहते हैं कि जी उसने मेरे बेटे की नौकरी लगवाई है और जो सारे घरवालों को रिज़्क़

देने वाली ज़ात है उसकी तारीफ़ ज़बान से निकलती ही नहीं। मोहसिन की बात को मान लेना भी उसका शुक्र ही होता है। और उसकी नाफ़रमानी करने से शर्माना कि भई! इसके मुझ पर बड़े एहसानात हैं, इसकी तो मुझ पर बड़ी नवाज़िशें हैं जिनकी वजह से मैं इंकार नहीं कर सका, यह भी शुक्र है। आम दस्तूर भी है कि आदमी कहते हैं कि फ़लाँ के पास मुझे जाना है, उसने काम कहा था, उसके मुझ पर बड़े एहसानात हैं, मैं अगर उसका काम नहीं करूंगा तो वह मुझे क्या कहेगा।

एहसासे शुक्र पैदा करने की ज़रूरत

हमें चाहिए कि हम तीनों तरह से अल्लाह का शुक्र अदा करें। एक तो ज़बान से अपने रब की तारीफ़ें डट कर करें। जितनी तारीफ़ें कर सकते हैं ख़ूब करें मगर आज तो यह हालत है कि अल्लाह तआला ने इतना दिया होता है कि वह अपने घरवालों के साथ-साथ दस और घरों की भी आसानी से देखभाल कर सकता है। मगर जब उससे पूछें कि कारोबार का क्या हाल है तो वह कहता है कि जी बस गुज़ारा है। मेरे दोस्तो! इससे बड़ा नाशुक्री वाला लफ़्ज़ और कौन सा होगा? ज़बान झूठी क्यों हो गई? क्यों नहीं कहता कि अल्लाह तआला ने मुझे मेरी अवक़ात से बढ़कर अता किया है। अल्लाह तआला ने मेरे कामों में बरकत अता की हुई है। परवरदिगार ने मुझे जितना कुछ दिया हुआ है मैं तो इसके क़ाबिल नहीं था। मैं तो अल्लाह की नेमतों का शुक्र भी अदा नहीं कर सकता। अगर मैं ज़िंदगी भर भी सज्दे में सर डाले रखूं तो मैं फिर भी अपने परवरदिगार की नेमतों का शुक्र अदा नहीं कर सकता। मेरा तो बस चले तो मैं तो अल्लाह तअला के नाम पर

क़ुर्बान हो जाऊँ। अल्लाह तआला ने मुझ जैसे बेक़द्रे को भी नेमतें दे दी हैं। अगर हम सोचें तो हम वाक़ई बेक़द्रे हैं। हमारा परवरदिगार कितना बुलन्द व बाला है जो बेक़द्रों को भी नेमतें दे देता है। यूँ एहसासे शुक्र पैदा करने की ज़रूरत है।

ज़बानी शुक्र

हमें चाहिए कि हम हर वक़्त अपनी ज़बान से अल्लाह तआला की तारीफ़ें करें। मिसाल के तौर पर जब हम ठंडा पानी पिएं तो अलूहम्दुलिल्लाह कहें और गर्म रोटी खाएं तो अलूहम्दुलिल्लाह कहें। हदीस पाक में आया है कि जिस बंदे ने किसी नेमत पर अलूहम्दुलिल्लाह कह दिया गोया उसने उस नेमत का शुक्र अदा कर दिया। बेटे पर नज़र पड़े तो अलूहम्दुलिल्लाह कहें, घर पर नज़र पड़े तो अलूहम्दुलिल्लाह कहें, दुकान पर जाकर बैठें तो अलूहम्दुलिल्लाह कहें। अल्लाह का शुक्र अदा करें कि ऐ अल्लाह! एक मकान की छत है और एक उसके ऊपर नीली छत है। तूने दो छतों के नीचे ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी। वे भी तो हैं जो नीली छत के नीचे पड़े होते हैं। उनके पास सर्दी गर्मी से बचने के लिए कोई चीज़ नहीं होती।

मेरे दोस्तो! अपने घरों में अलूहम्दुलिल्लाह कहने की आदत डालें। हमारे माहौल व समाज में बहुत कम लोग अलूहम्दुलिल्लाह कहते हैं। यह बात औरतों को सिखानी चाहिए कि ताकि वे बच्चों को सिखाएं। हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में कहा करें कि अलूहम्दुलिल्लाह अल्लाह तआला ने मुझे कामयाबी दे दी। अलूहम्दुलिल्लाह ख़ूब कहा करें। दूसरे सुब्हानअल्लाह बार-बार कहा

करें। तीसरा लफ़्ज़ ला इलाहा इल्लल्लाह है अगर ये अल्फ़ाज़ अक्सर ज़बान पर रखेंगे तो गोया लिसानी शुक्र अदा हो जाएगा।

जिस्मानी शुक्र

कोशिश किया करें कि ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह तआला के हुक्मों की फ़रमांबरदारी करें क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَ اعْمَلُوْا صَالِحًا.﴾

ऐ ईमान वालो! तुम पाकीज़ा चीज़ें खाओ और नेक काम करो। चूँकि हम अल्लाह तआला का दिया हुआ रिज़्क़ खाते हैं इसीलिए हमें चाहिए कि हम उसकी इबादत भी ख़ूब करें। यह जिस्मानी शुक्र है।

नेमतों की बक़ा का आसान तरीक़ा

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़रमाते हैं ﴿لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ (ابراہیم:۷)﴾ अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो हम अपनी नेमतें ज़रूर बिल ज़रूर और ज़्यादा अता करेंगे। गोया शुक्र एक ऐसा अमल है कि जिसकी वजह से नेमतें बाक़ी रहती हैं और बढ़ती भी चली जाती हैं। नेमतों को बाक़ी रखने के लिए आसान तरीक़ा यही है–

टूटे रिश्ते वो जोड़ देता है
बात रब पर जो छोड़ देता है
उसके लुत्फ़ ओ करम का क्या कहना
लाख मांगो करोड़ देता है

यही वजह है कि हमेशा मांगने वालों को अपने मांगने की

कमी का शिकवा रहा जबकि देने वाले के ख़ज़ाने बहुत ज़्यादा हैं और मांगने वालों के दामन छोटे हैं जो जल्दी भर जाते हैं।

क़ौमे सबा का इबरतनाक अंजाम

मेरे दोस्तो! अगर हम नाशुक्री करेंगे यानी अल्लाह तआला की तारीफ़ें भी नहीं करेंगे, उसके हुक्मों की फ़रमांबरदारी भी नहीं करेंगे और गुनाहों से भी नहीं बचेंगे तो फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपनी नेमतों को वापस ले लेंगे। इसलिए कुफ़्राने नेमत से बचने की ज़रूरत है।

क़ुरआन मजीद में एक क़ौम का ज़िक्र है जिसे क़ौमे सबा कहते हैं। मुफ़स्सिरीन ने लिखा है के उस ज़माने में उनके दोनों तरफ़ बाग़ात होते थे। फलों की इतनी ज़्यादती थी कि अगर कोई आदमी ख़ाली टोकरी लेकर बाग़ात में से गुज़रता तो गिरने वाले फलों से उसकी टोकरी भर जाया करती थी। फल तोड़ने की ज़रूरत ही नहीं होती थी। उनके हाँ यह भी दस्तूर था कि जहाँ से भी कोई फल तोड़ना चाहता था तो तोड़ सकता था, कोई मनाही नहीं थी। इस तरह वह हर वक़्त फल खाया करते थे। अल्लाह तआला ने उस क़ौम से फ़रमाया ﴿كلوا من رزق ربكم واشكروا لله﴾ मेरे बंदो! मेरी दी हुई नेमतें खाओ और मेरा शुक्र अदा करो। मगर वह नाशुक्रे निकले और कहने लगे, ऐ अल्लाह! हर तरफ़ हरियाली है, बाग़ात और फल हैं। हम तो देख-देखकर तंग आ गए हैं। हम एक शहर से दूसरे शहर का सफ़र करते हैं तो पता ही नहीं चलता क्योंकि हर तरफ़ पेड़ होते हैं और दूसरा शहर आ जाता है। बीच में अगर कोई वीराना होता तो पता चलता कि हम एक शहर से

दूसरे शहर में जा रहे हैं। जब उन्होंने नाशुक्री की यह बात की तो अल्लाह तआला ने ज़मीन के अंदर के पानी को सुखा दिया।

जब पानी सूख गया तो सब बाग़ात के पेड़ सूख गए और नतीजा यह निकला कि वह अल्लाह तआला की नेमतों से महरूम कर दिए गए और खाने को भी तरसने लगे। अल्लाह तआला क़ुरआन पाक में इसका ज़िक्र फ़रमाते हैं। मेरे दोस्तो! क़यामत के दिन आप यह नहीं कह सकेंगे कि हमें कोई क़ुरआन सुनाने वाला नहीं आया था। जो हमें खोल-खोल कर बताता कि हम पर अल्लाह तआला की कितनी-कितनी नेमतें हैं। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِىْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّ شِمَال. (سبا: ١٥)﴾

क़ौमे सबा के घरों में बड़ी निशानियाँ हैं। वह जिन रास्तों पर चलते थे उनके दाईं तरफ़ बाग़ात होते थे और बाईं तरफ़ भी बाग़ात होते थे।

﴿كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ. (سبا:١٥)﴾

और फ़रमाया कि मेरा दिया हुआ रिज़्क़ खाओ। और मेरा शुक्र अदा करो, कितना पाकीज़ा शहर है। तुमसे कोई कोताही हो जाए तो माफ़ी मांग लेना। तुम्हारा परवरदिगार तो मग़फ़िरत करने वाला है। मगर वह इस नेमत की क़द्र न कर सके और कहने लगे, ﴿ربنا بٰعد بين اسفارنا(سبا:١٩)﴾ ऐ अल्लाह! दर्मियान में कोई खुली जगह और वीराने होते ताकि एक शहर से दूसरे शहर जाते हुए पता चलता कि सफ़र क्या है? लिहाज़ा अल्लाह तआला ने उनके बाग़ात को ख़त्म कर दिया। और फिर आख़िर फ़रमाया :

﴿ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا وَهَلْ نُجٰزِىْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ. (سبا:١٧)﴾

उन्होंने नेमतों की नाक़द्री की और हमने उनको नेमतों की नाक़द्री का यह बदला दिया और नाशुक्रों का यही बदला होता है।

भूख व ननंग और ख़ौफ़ का लिबास

अल्लाह तआला क़ुरआन पाक में एक और बस्ती वालों के बारे में ज़िक्र फ़रमाते हैं कि उस बस्ती वालों के पास अमन भी था और इत्मिनान भी था। मतलब यह है कि बाहर के दुश्मन का कोई ख़ौफ़ नहीं था बल्कि अमन था और अंदर का भी कोई ग़म नहीं था बल्कि इत्मिनान था। और उन पर चारों तरफ़ से रिज़्क़ की बहुतात होती थी। लेकिन उन्होंने अल्लाह तआला की नाक़द्री की। अल्लाह तआला ने उसके बदले उनको ख़ौफ़, भूख और ननंग का लिबास पहना दिया। यहाँ अल्लाह तआला ने लिबास का लफ़्ज़ जो इस्तेमाल फ़रमाया है उसके बारे में मुफ़स्सिरीन ने अजीब नुक्ता लिखा है। वे फ़रमाते हैं कि जिस तरह लिबास बंदे के पूरे जिस्म पर आता है उसी तरह भूखे आदमी का पूरा जिस्म कमज़ोर होता है। गोया वह भूख का लिबास है और जो बंदा डर जाता है उसका पूरा जिस्म पीला पड़ जाता है गोया वह पीलाहट भी पूरे जिस्म का लिबास है। अल्लाह तआला गोया फ़रमा रहे हैं कि जिस तरह लिबास पूरे जिस्म पर पहना देते हैं उसी तरह हम ने भूख ननंग और ख़ौफ़ का लिबास पहना दिया। सुनिए क़ुरआन अज़ीमुश्शान ﴿وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً (النحل:١١٢)﴾ और अल्लाह मिसाल बयान फ़रमाता है एक बस्ती वालों की जिनके पास अमन भी था और इत्मिनान भी था ﴿يَاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ

﴿مَكَانٍ﴾ उन पर चारों तरफ़ से रिज़्क़ की बारिश थी मगर ﴿فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللّٰهِ﴾ उन्होंने अल्लाह की नेमतों की नाक़द्री की। फिर क्या हुआ? ﴿فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ. (النحل:١١٢)﴾ फिर अल्लाह तआला ने उनको भूख व ननंग और ख़ौफ़ का लिबास पहना दिया क्योंकि वे करतूत ही ऐसे किया करते थे।

हमारे शिकवों का ईलाज

मेरे दोस्तो! आज हम अपनी ज़िंदगियों को देखें कि कहीं ऐसा तो नहीं कि भूख ननंग का लिबास हमें भी पहना दिया गया हो। लगता है कि आज हमें भी भूख व ननंग और ख़ौफ़ का लिबास पहना दिया गया है क्योंकि हर बंदा शिकवा करता फिरता है, कारोबार वाला भी शिकवे कर रहा है और मुलाज़िम भी शिकवे कर रहा है। ख़ौफ़ भी हर बंदे के दिल में है कि कहीं यह न हो जाए, कहीं वह न हो जाए। फ़लाँ ने हमला कर दिया तो क्या बनेगा। यूँ लगता है कि हमारी नेमतों की नाक़द्रियों की वजह से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हमें भूख व ननंग और ख़ौफ़ का लिबास पहना दिया है। इसका ईलाज यह है कि हम कसरत से इस्तिग़फ़ार करें और अपने रूठे हुए रब को मनाने की कोशिश करें।

शिकवे की पट्टी

राबिया बसरिया रह० एक बार कहीं खड़ी थीं। उनके क़रीब से एक नौजवान गुज़रा। उसने अपने सर पर पट्टी बांधी हुई थी। उन्होंने पूछा, बेटा क्या हुआ? उसने कहा, अम्मा! मेरे सर में दर्द है जिसकी वजह से पट्टी बांधी हुई है। पहले तो कभी दर्द नहीं हुआ। उन्होंने पूछा, बेटा! आपकी उम्र कितनी है? वह कहने लगा,

जी! मेरी उम्र तीस साल की है। यह सुनकर फ़रमाने लगीं, "बेटा! तेरे सर में तीस साल तक दर्द नहीं हुआ तूने शुक्र की पट्टी कभी नहीं बांधी। तुझे पहली दफ़ा दर्द हुआ तो तूने शिकवे शिकायत की पट्टी फ़ौरन बांध ली है। हमारा हाल भी यही है कि हम सालों उसकी नेमतें और सुकून की ज़िंदगी गुज़ारते हैं। हम उसका तो शुक्र अदा नहीं करते और जब ज़रा सी तकलीफ़ पहुँचती है तो फ़ौरन शिकवे करना शुरू कर देते हैं।

मियाँ-बीवी के शिकवे

मियाँ अपनी बीवी को पूरी ज़िंदगी सुकून मुहैय्या करे और कभी ज़रा सी तंगी आए तो वह कहने लगती है कि मैंने तेरे घर में आकर देखा ही क्या है। आप जो कुछ करते हैं अपने बच्चों के लिए करते हैं। कौन सा मेरे लिए करते हैं। ऐसे ही नाशुक्री के बोल बोलना शुरू कर देती हैं। यही हाल ख़ाविन्दों का है। बीवियाँ तो घर में बांदियों की तरह रहती हैं और पाकदामन ज़िंदगियाँ गुज़ारती हैं मगर वह उनकी परवाह नहीं करते बल्कि अगर वे बात करना चाहें तो वे उनकी बात सुनना भी गवारा नहीं करते। ये भी नाशुक्री करने वाले हैं।

शुक्र करने वाले साइल की दिलजोई

एक बार नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ फ़रमा थे। आपके पास एक साइल आया। उसने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! मैं मुहताज हूँ, इसलिए अल्लाह के लिए मुझे कुछ दीजिए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक खजूर थी। आपने वह खजूर उठाकर उस साइल को दे दी। उस साइल ने खजूर तो ली

मगर उसको इत्मिनान न हुआ और वह ज़्यादा का तलबगार हुआ। आख़िर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उसे भेज दिया।

थोड़ी देर के बाद एक और साइल आया। उसने भी सवाल किया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक खजूर उसको भी दे दी। वह खजूर लेकर बहुत ही ख़ुश हुआ कि मुझे अल्लाह के महबूब के हाथों से खजूर मिली है। वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शुक्र अदा करने लगा और कहने लगा कि आप का बड़ा एहसान है कि आपने मुझे यह खजूर अता कर दी। जब उसने नेमत की क़द्रदानी की तो अल्लाह के महबूब ने अपनी ख़ादिमा से कहा कि उम्मे सलमा के पास जाओ और पूछो कि क्या अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के लिए कुछ मौजूद है? वह गई और उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उसके हाथ चालीस दीनार भेजे। अल्लाह तआला के महबूब ने वे चालीस दीनार भी उस दूसरे साइल को अता कर दिए।

शुक्र करने वाली बीवी का मुक़ाम

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और उनकी वालिदा को मक्का मुकर्रमा में छोड़ गए। उस वक़्त वह एक ऐसी वादी थी जहाँ हरियाली का नाम व निशान भी न था। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जब जवान हुए और उनका निकाह क़बीला बनूजरहम की एक लड़की से हुआ। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम शिकार के लिए जाते थे और उससे जो कुछ मिलता था उसी से गुज़ारा होता था। शिकार एक हवाई रोज़ी होती थी। लिहाज़ा कभी शिकार मिलता और कभी नहीं मिलता।

एक बार हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम शिकार के लिए गए हुए थे कि पीछे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मिलने घर आए। उन्होंने अपनी बहू से पूछा कि सुनाओ क्या हाल है? वह कहने लगी, बस ज़िंदगी गुज़र रही है। कभी शिकार मिलता है कभी नहीं मिलता। बहुत तंगी का वक़्त गुज़र रहा है। बहरहाल गुज़ारा हो रहा है। उसने इस तरह नाशुक्री के बोल बोले। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कुछ देर इंतिज़ार किया और फिर फ़रमाया, अच्छा मुझे वापस जाना है। जब तुम्हारे शौहर आएं तो उन्हें मेरा सलाम कह देना और उनसे कह देना कि तुम्हारे घर की चौखट अच्छी नहीं हैं। इसे बदल लेना। यह कहकर वह चले गए। वह औरत हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बात न समझ सकी। जब हज़रत इस्माईल अलैहिस्स्लाम घर वापस आए तो उनकी बीवी ने उन्हें हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का पूरा पैग़ाम सुना दिया। वह फ़रमाने लगे कि वह तो मेरे वालिद थे। मेरी उनसे मुलाक़ात तो नहीं हो सकी अलबत्ता वह मुझे एक पैग़ाम दे गए हैं कि घर की चौखट अच्छी नहीं, इसे बदल देना यानी तुम्हारी बीवी नाशुक्री है, इसे बदल देना। चुनाँचे उन्होंने अपनी बीवी को तलाक़ देकर फ़ारिग़ कर दिया। कुछ अरसे के बाद एक और क़बीले की लड़की के साथ हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की शादी हुई। अब यह औरत बड़ी सब्र व शुक्र करने वाली थी। साल दो साल के बाद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फिर तशरीफ़ लाए। अब की बार भी हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम घर पर मौजूद नहीं थे। चुनाँचे उन्होंने बहू से पूछा, सुनाओ क्या हाल है? वह कहने लगी, मैं अल्लाह का शुक्र अदा करती हूँ जिसने मुझे इतना नेक ख़ाविन्द

अता कर दिया। अल्लाह तआला ने मुझे इतने अच्छे अख़्लाक़ वाला, अच्छे किरदार वाला, मुत्तक़ी और परहेज़गार और मुहब्बत करने वाला ख़ाविन्द दिया है। मैं तो अल्लाह का शुक्र भी अदा नहीं कर सकती। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पूछा खाना, पीना कैसा है? कहने लगीं, रिज़्क़ तो अल्लाह के हाथ में है जो मिलता है हम दोनों खा लेते हैं और अल्लाह का शुक्र अदा कर लेते हैं और अगर नहीं मिलता तो सब्र कर लेते हैं। जब उसने शुक्र की अच्छी-अच्छी बातें कीं तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का दिल ख़ुश हो गया और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, अच्छा अब मैं चलता हूँ। तुम अपने ख़ाविन्द को मेरी तरफ़ से सलाम कह देना और कहना कि तुम्हारे घर की चौखट बड़ी अच्छी है, लिहाज़ा तुम इसकी हिफ़ाज़त करना। यह कह कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम वापस चले गए। जब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम वापस घर तशरीफ़ लाए तो उनकी बीवी ने उनको पैग़ाम दिया। जब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने पैग़ाम सुना तो वह बड़े ख़ुश हुए और कहने लगे, वह मेरे वालिद थे और मुझे पैग़ाम दे गए हैं कि तुम एक अच्छी बीवी हो। मुझे तुम्हारी क़द्रदानी करनी है और तुझे ज़िंदगी भर अपने साथ रखना है। यह हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की वह बीवी थीं जो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से उम्मीद से हुईं और उनकी नसल इस औरत से आगे चली।

एक दिलचस्प नुक्ता

उलमा ने यहाँ एक नुक्ता लिखा है कि हक़ीक़त में अल्लाह

तआला ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल को आगे चलाना था और उस नस्ल में से अल्लाह के महबूब ने पैदा होना था, इसलिए अल्लाह तआला ने पसंन्द न किया कि मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बड़ों में कोई नाशुक्री वाली औरत हो। इसलिए अल्लाह तआला ने नाशुक्री करने वाली औरत को तलाक़ दिलवा दी और शुक्र करने वाली औरत घर में लाई गई और उससे आगे अपने महबूब को पैदा फ़रमा दिया, सुब्हानअल्लाह।

हज के मौक़े पर शुक्र का इज़्हार

हज़रत सैय्यद नफ़ीस शाह साहब दामतबरकातुहुम ने हज के मौक़े पर शुक्र के बारे में अजीब अशआर लिखे हैं। वे आपको भी सुना देता हूँ—

शुक्र है तेरा ख़ुदाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
तूने अपने घर बुलाया मैं तो इस क़ाबिल न था
अपना दीवाना बनाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
गिर्द काबे के फिराया, मैं तो इस क़ाबिल न था

मुद्दतों की प्यास को सैराब तूने कर दिया
जाम ज़मज़म का पिलाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
डाल दी ठंडक मेरे सीने में तूने साक़िया
अपने सीने से लगाया, मैं तो इस क़ाबिल न था

भा गया मेरी ज़बान को ज़िक्र इल्लल्लाह का
यह सबक़ किसने पढ़ाया,मैं तो इस क़ाबिल न था
ख़ास अपने दर का रखा तूने ऐ मौला मुझे

यूँ नहीं दर दर फिराया, मैं तो इस क़ाबिल न था
मेरी कोताही के तेरी याद से ग़ाफ़िल रहा
पर नहीं तूने भुलाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
मैं के था बेराह तूने दस्तगिरी आप की
तू ही मुझको दर पे लाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
अहद जो रोज़े अज़ल मैंने किया था याद है
अहद वह किसने निभाया,मैं तो इस क़ाबिल न था
तेरी रहमत तेरी शफ़क़त से हुआ मुझको नसीब
गुंबदे ख़िज़रा का साया, मैं तो इस क़ाबिल न था
मैंने जो देखा सो देखा बारगाहे क़ुद्दस में
और जो पाया सो पाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
बारगाहे सैय्युदल कौनैन में आकर नफ़ीस
सोचता हूँ कैसे आया, मैं तो इस क़ाबिल न था

हमारे दिलों में असबाब की अहमियत

कितनी अजीब बात है कि वह दुकान व दफ़्तर जिससे इंसान को सबब के तौर पर रिज़्क़ मिलता है। वहाँ रोज़ाना आठ घंटे ड्यूटी देता है। ऐ इंसान! जिस सबब से तुझको रिज़्क़ मिलता है उस सबब पर मेहनत करने में रोज़ाना आठ घंटे लगाता है और मुसब्बिबुल असबाब जहाँ से बग़ैर सबब के रिज़्क़ मिलता है उसके सामने दामन फैलाने के लिए तुझे आठ मिनट की भी फ़ुर्सत नहीं है। क्या कभी किसी ने आठ मिनट तहज्जुद के वक़्त अल्लाह के सामने दामन फैलाया? वहाँ तो सबब के बग़ैर डाएरेक्ट मिल रहा होता है। अरे! वास्ते के ज़रिए लेने पर आठ घंटे और जहाँ से

बिला वास्ता मिलता है वहाँ आठ मिनट भी नहीं देते। हमें चाहिए कि हम तन्हाई में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने बैठें और अपने सब हालात उसी के सामने बयान करें क्योंकि अल्लाह तआला इस बात पर ख़ुश होते हैं कि बंदा हर चीज़ उसी से मांगे और हर वक़्त उसी से मांगे और नेमतें मिलने पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और शुक्रे इलाही

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने एक बार अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से अर्ज़ किया ऐ अल्लाह ﴿كيف اشكرك﴾ मैं आपका शुक्र कैसे अदा करूं क्योंकि आपकी एक-एक नेमत ऐसी है कि मैं सारी ज़िंदगी भी इबादत में लगा रहूँ तो मैं सिर्फ़ एक नेमत का भी शुक्र अदा नहीं कर सकता और आपकी तो बेइन्तेहा नेमतें हैं। मैं उन नेमतों का शुक्र कैसे अदा कर सकता हूँ? जब उन्होंने यह कहा तो अल्लाह तआला ने उसी वक़्त उन पर 'वही' नाज़िल फ़रमाई और फ़रमाया, ऐ मूसा! अगर आपके दिल की यह आवाज़ है कि आप सारी ज़िंदगी शुक्र अदा करें तो फिर भी शुक्र अदा नहीं कर सकते तो सुन लें कि ﴿الآن شكرتنى﴾ अब तो आपने मेरा शुक्र अदा करने का हक़ अदा कर दिया, सुब्हानअल्लाह।

रिज़्क़ पहुँचाने वाला डाकिया

मेरे दोस्तो! कभी-कभी अल्लाह तआला ने इंसान को रिज़्क़ कुशादगी इसलिए भी ज़्यादा दी होती है कि वह रिज़्क़ उसका अपना नहीं होता बल्कि वह तलबा, ग़रीब लोगों और अल्लाह के दूसरे मुस्तहिक़ बंदों को होता है। अल्लाह तआला ने इसको

इसलिए दिया होता है ताकि वह उन तक यह पहुँचा दे। मगर जब वह अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करता और डाक नहीं पहुँचाता तो अल्लाह तआला डाकिए को हटा देते हैं और उसकी जगह किसी और को ज़रिया बना देते हैं। चुनाँचे हदीस पाक में आया है कि अल्लाह तआला अपने बाज़ बंदों को खुला रिज़्क़ देता है जो उनके अपने रिज़्क़ से ज़्यादा होता है। किस लिए? इसलिए कि वह हक़दारों तक सदक़ा व ख़ैरात की शक्ल में वह माल पहुँचा दे। और जब वह माल हक़दारों तक नहीं पहुँचाते तो अल्लाह तआला उनको इस नेमत से महरूम फ़रमा देते हैं और उनकी जगह किसी और को वह रिज़्क़ दे देते हैं जो सही सही उसके मुस्तहिक़ बंदों तक पहुँचा दिया करते हैं।

इसलिए जब अल्लाह तआला ज़रूरत से ज़्यादा रिज़्क़ दे तो समझें कि इसमें सिर्फ़ मेरा ही हक़ नहीं बल्कि ﴿وَفِی اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَعْلُوْمٌ. لِلسَّائِلِ وَلْمَحْرُوْمِ (المعارج:٢٤،٢٥)﴾ के मिस्दाक़ इसमें अल्लाह के बंदों का भी हक़ है। यह भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का शुक्र है। रब्बे करीम हमें अपनी नेमतों की क़द्रदानी की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दें। काफ़िरों के सामने ज़लील व रुसवा होने से महफ़ूज़ फ़रमा लें और जिस तरह परवरदिगार ने हमारे सर को ग़ैर के सामने झुकने से बचा लिया, वह परवरदिगार हमारे हाथों को भी ग़ैर के सामने फैलने से महफ़ूज़ फ़रमा ले। (अमीन सुम्मा आमीन)

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.﴾

❋ ❋ ❋

इल्म की फ़ज़ीलत

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ इल्म का बड़ा मुक़ाम है। कहाँ आदम अलैहिस्सलाम जो मिट्टी से बने और कहाँ फ़रिश्ते जो नूर से बने और नूर से बनने वाली मख़्लूक़ जो हर वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की इबादत में मशग़ूल है। कहाँ यह ख़ाक और कहाँ वह आलमे पाक। मगर इल्म एक ऐसी नेमत थी जिसने इस ख़ाक को इस आलमे पाक का भी मस्जूद बना दिया। दस्तूर यह है कि अंधेरी रात में जुगनू की रोशनी अच्छी लगती है। इल्म कितनी लाजवाब नेमत है कि थोड़ी सी भी तो पल्ला भारी रहता है।

इल्म की फ़ज़ीलत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○
وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتَابِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ
شُهَدَآءَ ○ (مائده : ٤٤) وَقَالَ اللّٰهُ فِيْ مَقَامٍ اٰخِرَ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا
كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ○(آل عمران : ٤٩) وَقَالَ
رَسُوْلَ ﷺ العلماء ورثة الانبياء. سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا
يَصِفُوْنَ ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

आरज़ी और दाएमी ज़िंदगी

दुनिया में हर इंसान इज़्ज़त भरी ज़िंदगी चाहता है। इज़्ज़त दो तरह से मिलती है। एक माल से और दूसरी नेक आमाल से। मगर दोनों में फ़र्क़ है। जो इज़्ज़त माल से मिलती है वह माल की तरह फ़ानी और आरज़ी होती है। बक़ौल किसी के—

जो शाख़े नाज़ुक पर आशयाना बनाएगा नापाएदार होगा।

इसी लिए माल की बुनियाद पर इज़्ज़तें पाने वाले दुनिया के अंदर बहुत जल्दी जूतों में खड़े नज़र आते हैं। हम ने कई बार देखा कि एक आदमी आज सदर है कल को मुल्क बदर है। आज अमीर है कल फ़क़ीर है। आज वज़ीर है कल असीर (क़ैदी) है।

आज वज़ीरे आज़म है, कल असीरे आज़म है। लिहाज़ा माल से मिलने वाली इज़्ज़त ढलती छांव की तरह है। उसके मुक़ाबले में जो इज़्ज़त नेक आमाल से मिलती है वह दाएमी होती है क्योंकि नेक आमाल बाक़ियातुस्सालेहात (बाक़ी रहने वाली नेकियों) में से होते हैं। नेक आमाल के लिए इंसान को इल्म की ज़रूरत होती है गोया जो इंसान इल्म हासिल करता है वह दुनिया और आख़िरत की इज़्ज़तें पाता है।

सैय्यदना आदम अलैहिस्सलाम की फ़रिश्तों पर बरतरी

अल्लाह रब्बुललइज़्ज़त ने जब इस काएनात को सजाना पसन्द किया तो फ़रिश्तों से फ़रमाया :

﴿اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً. (البقرہ:۳۰)﴾

मैं ज़मीन पर अपना एक नाएब बना रहा हूँ।

फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया, परवरदिगारे आलम! आप ऐसे आदमी को अपना ख़लीफ़ा बनाएंगे जो ज़मीन में फ़साद मचाएगा और ख़ून बहाएगा। ﴿نَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ﴾ हम आपके नाम की तस्बीह और तक़्दीस बयान करते हैं यानी जब हम इबादत करते हैं तो फिर किसी और को पैदा करने की क्या ज़रूरत है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया,, ﴿اِنِّیْ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ﴾ फ़रिश्तो! मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

चुनाँचे अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया और उनको इल्म अता किया। ﴿وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَاءَ كُلَّهَا (البقرہ:۳۱)﴾ अल्लाह तआला ने उनको इल्मुलअस्मा यानी इल्मुल अशया अता किया। फिर अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों से फ़रमाया

कि तुम इन चीज़ों के नाम सुनाओ। वे कहने लगे :

﴿سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ﴾ (البقرة:٣٢)

यानी हम तो इन चीज़ों के नाम नहीं जानते। इसके बाद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने सैय्यदना आदम अलैहिस्सलाम से पूछा तो उन्होंने उसी वक़्त उन चीज़ों के नाम बता दिए।

सैय्यदना आदम अलैहिस्लाम का ईनाम

सैय्यदना आदम अलैहिस्सलाम इस इम्तिहान में पास हो गए। यह दस्तूर है कि जब भी कोई इम्तिहान में पास होता है तो उसे ईनाम मिला करता है बल्कि दुनिया वाले कोशिश करते हैं कि ऐसा ईनाम दिया जाऐ जो मुद्दतों याद रहे। वे इस मक़सद के लिए सर्टिफ़िकेट और शील्ड बनाकर देते हैं ताकि तालिब इल्म उन्हें यादगार के तौर पर अपने घर में लगाए और फिर पूरी ज़िंदगी याद रखे कि मैंने नुमायाँ कामयाबी हासिल की थी। परवरदिगार आलम ने भी हज़रत आदम को इम्तिहान में पास होने पर जो ईनाम दिया उसे रहती दुनिया याद करेगी। वह ईनाम यह था कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को "मस्जूदुल मलाइका" बनाया दिया। इतना बड़ा ईनाम। यह हक़ तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का था मगर मालिक को अख़्तियार है। चुनाँचे फ़रिश्तों को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त मे फ़रमाया कि आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करो।

सज्दा करने में हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम की पहल

हदीस पाक में आया है कि सबसे पहले हज़रत इसराफ़ील

अलैहिस्सलाम ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा किया। फिर जिब्रील अलैहिस्सलाम ने। उसके बाद दूसरे फ़रिश्तों ने सज्दा किया लेकिन शैतान मरदूद ने इंकार किया ﴿أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ. (البقرہ:۳۴)﴾ उसने तकब्बुर किया और काफ़िर बन गया।

दो अहम बातें

यहाँ पर दो बातें समझने के क़ाबिल हैं क्योंकि रिवायत में आता है कि हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम ने सबसे पहले सज्दा किया इसिलए उनको यह एजाज़ मिला कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनकी पेशानी पर पूरे क़ुरआन को लिखवा दिया। इसी बिना पर उलमा ने लिखा कि इल्म एक ऐसी अज़ीम नेमत है कि आलिम को तो इज़्ज़तें मिलती ही हैं जो आदमी किसी आलिम की इज़्ज़त करता है अल्लाह तआला के हाँ वह भी ईनाम का मुस्तहिक़ बन जाता है। एक ईनाम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को इल्म की वजह से मिला था जो कि बहुत बड़ा ईनाम था और जिन्होंने आलिम (हज़रत आदम अलैहिस्सलाम) का इकराम करते हुए सबसे पहले सज्दा किया अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको भी ईनाम से नवाज़ दिया और जिसने आलिम का इकराम न किया वह अज़ाज़ील था। उसने दुनिया के चप्पे-चप्पे पर सज्दा किया, उसकी ज़िंदगी इतनी इबादत से भरी हुई थी मगर उसने एक आलिम (हज़रत आदम अलैहिस्सलाम) की बेअदबी की और मुक़ाबले पर आ गया और कहने लगा :

﴿أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَّخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ. (الاعراف:۱۲)﴾

मैं इससे बेहतर हूँ क्योंकि मैं आग से बना हूँ और यह मिट्टी

से बनाए गए हैं।

इसका नतीजा यह निकला कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उसे फटकार दिया और वह हमेशा के लिए दरगाह से धुतकार दिया गया। फ़रमाया ﴿وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّيْنِ (ص:٧٨)﴾ बेशक तुम्हारे ऊपर क़यामत तक मेरी लानत बरसती रहेगी।

इल्म का मुक़ाम

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ इल्म का बड़ा मुक़ाम है। कहाँ आदम अलैहिस्सलाम जो मिट्टी से बने और कहाँ फ़रिश्ते जो नूर से बने और नूर से बनने वाली भी वह मख़्लूक़ जो हर वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की इबादत में मशग़ूल है :

وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ.
يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ.

अल्लाह के पास जो भी फ़ौक़ुल अर्श (अर्श से ऊपर) मख़्लूक़ है वह हर वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तस्बीह बयान कर रही है। उनके हाँ इफ़्तार नहीं है। सुब्हानअल्लाह, कहाँ यह ख़ाक और कहाँ वह आलमे पाक। मगर इल्म एक ऐसी नेमत थी जिसने इस ख़ाक को उस आलमे पाक का भी मस्जूद बना दिया। दस्तूर यह है कि अंधेरी रात में जुगनू की रोशनी भी अच्छी लगती है। इल्म कितनी लाजवाब नेमत है कि थोड़ी सी भी तो पल्ला भारी रहता है। सोचने की बात है कि आदम अलैहिस्सलाम को इल्मुल अस्मा यानी इल्मुल अशया हासिल हुए फिर यह ईनाम मिला तो फिर जिस इंसान को अस्माउल हुस्ना की मारिफ़त नसीब होगी उसे क़यामत के दिन क्या ईनाम मिलेगा, अल्लाहु अकबर कबीरा।

सैय्यदना आदम अलैहिस्सलाम और सनअत व हर्फ़त (दस्तकारी) का इल्म

यह काएनात ज़मीन से लेकर आसमान तक यानी फ़र्श से लेकर अर्श तक इल्मे इलाही का मदरसा है। इस मदरसे के सब से पहले मुअल्लिम सैय्यदना आदम अलैहिस्सलाम थे। रिवायत में आया है कि वह इस दुनिया में खेती और सनअत व हर्फ़त का इल्म लेकर आए। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अपनी औलाद को खेती और सनअत व हर्फ़त का इल्म सिखाया और मुअल्लिम अव्वल बने।

सैय्यदना इदरीस अलैहिस्सलाम और किताबत का इल्म

उनके बाद हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम आए। अहादीस में आया है कि उन्होंने दुनिया में इल्म को क़लम के ज़रिए फैलाया। ﴿علم بالقلم﴾ उन्होंने इसकी सबसे पहले ख़िदमत की। उनसे पहले इल्म ज़बानी कलामी तो दूसरों तक पहुँचता था लेकिन क़लम से मदद नहीं ली जाती थी। लिहाज़ा कलाम को तहरीर में ज़ब्त करने का इल्म सबसे पहले दुनिया में हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम लाए। उन्होंने इबरानी और सुरयानी ज़बान और बाज़ रिवायात में आया है कि अरबी ज़बान की बुनियाद डाली। सबसे पहले हरूफ़ बने, फिर अल्फ़ाज़ और फिर पत्थरों पर लिखना शुरू किया गया।

सैय्यदना नूह अलैहिस्सलाम और हलाल व हराम का इल्म

उनके बाद हज़रत नूह अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको लकड़ी से चीज़ें बनाने का इल्म दिया था।

चुनाँचे उन्होंने कश्ती बनाई। इसके अलावा अल्लाह तआला ने उनको हलाल व हराम का इल्म देकर भेजा। दुनिया में सबसे हलाल व हराम की इल्म हज़रत नूह अलैहिस्सलाम लेकर आए। गोया वहाँ से हलाल व हराम की इब्तिदा हुई। चुनाँचे इर्शादे बारी तआला है :

﴿اِنَّا اَوْحَيْنَا اِلَيْكَ كَمَا اَوْحَيْنَا اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْ بَعْدِهٖ (النساء:١٦٣)﴾

इस आयत में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का नाम ख़ास तौर पर आया है।

लिबासे शरिअत की तक्मील

गोया शरिअत की इब्तिदा हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से हुई। इसकी मिसाल यूँ समझिए कि जैसा छोटा बच्चा पैदा होता है तो पहले दिन ही उसको लिबास नहीं पहना देते क्योंकि छोटा सा होता है। बस एक कपड़ा सा बांध देते हैं ताकि गंदगी न फैले। शुरू में उसका जिस्म ऐसे ही बग़ैर लिबास के रहता है। कुछ अरसे के बाद उसका एक छोटा सा लिबास बनाया जाता है जैसे उसकी उम्र बढ़ती रहती है वैसे ही उसका लिबास भी नया बनाना पड़ता है। क़द बढ़ने के साथ-साथ उसके लिबास का साइज़ भी बढ़ता रहता है। अमूमन तीस पैंतीस साल की उम्र में इंसान का जिस्म इतनी क़द व क़ामत अख़्तियार कर लेता है कि उसके बाद उसका लिबास पूरी उम्र के लिए उसी साइज़ का चलता रहता है।

यही इंसानियत की मिसाल है कि शुरू में इंसान को किसी चीज़ का पता ही नहीं था। इसलिए उसे खेती का इल्म दिया, सनअत व हर्फ़त (दस्तकारी) का इल्म दिया और इल्म को क़लम

के ज़रिए ज़ब्त करने का इल्म दिया। उसके बाद एक वक़्त आया कि जब उसे हलाल व हराम का इल्म दिया। गोया ये सबसे पहला लिबासे शरिअत था जो इंसानियत पहन रही थी। फिर अंबिया किराम तशरीफ़ लाते रहे तो इस लिबासे शरिअत का साइज़ बढ़ता गया। शरिअत और ज़्यादा कामिल होती गई यहाँ तक कि जब नबी अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए तो इंसानियत अपनी जवानी तक पहुँच चुकी थी। इसलिए नबी अलैहिस्सलाम शरिअत का एक ऐसा लिबास लाए कि क़यामत तक उसका साइज़ बदलने की ज़रूरत नहीं है। लिहाज़ा दीने इस्लाम क़यामत तक आने वाली इंसानियत के लिए काफ़ी व वाफ़ी और शाफ़ी है।

अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम और तख़्सीसे उलूम

दुनिया में अंबिया किराम मुख़्तलिफ़ इल्म व फ़न लाए। यूँ समझिए कि जैसे एक ही स्कूल में मुख़्तलिफ़ मज़मूनों के उस्ताद होते हैं। उन्होंने इल्म तो सारा पढ़ा होता है मगर किसी एक मज़मून में महारत हासिल की होती है। कोई हिसाब का स्पेशलिस्ट होता है, कोई अंग्रेज़ी का, कोई इस्लामियात का, कोई साइंस और कोई उर्दू का होता है। इसी तरह मुख़्तलिफ़ अंबिया किराम शरिअत का इल्म तो लाए मगर अल्लाह तआला ने उन्हें किसी न किसी एक इल्म में महारत अता फ़रमा दी।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और इल्मे मुनाज़रा (बहस)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम दुनिया में इल्मे मुनाज़रा लेकर

आए। मुनाज़रे के लिए तीन बातें बड़ी अहम होती हैं। एक यह कि उसमें ग़ौर व फ़िक्र करने की आदत हो, दूसरे उसका अपना दिल मुतमइन हो और तीसरी यह कि जब मुख़ालिफ़ कोई करे तो ऐसा ख़ामोश करने वाला जवाब दे कि उसकी ज़बान बंद हो जाए। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम में तीनों ख़ूबियाँ थीं। उनके अंदर ग़ौर व फ़िक्र की इतनी आदत थी कि जब सितारों को देखा तो कहने लगे, ﴿هٰذَا رَبِّىْ﴾ कि यह मेरा रब है लेकिन जब देखा कि वे ग़ुरूब हो गए तो फ़रमाने लगे कि ग़ुरूब होने वाला तो परवरदिगार नहीं हो सकता। लिहाज़ा यह रब नहीं है। उसके बाद चाँद निकला तो उसे देखकर फ़रमाने लगे ﴿هٰذَا رَبِّىْ﴾ कि यह मेरा रब है। जब वह भी ग़ुरूब हो गया तो फ़रमाया यह भी परवरदिगार नहीं है। फिर सूरज पर नज़र पड़ी तो फ़रमाने लगे ﴿هٰذَا رَبِّىْ هٰذَا اَكْبَرُ﴾ कि यह मेरा रब है क्योंकि यह बड़ा है। ﴿فَلَمَّا اَفَلَتْ﴾ जब वह भी ग़ुरूब हो गया तो फ़रमाने लगे मैं ग़ुरूब होने वाले को परवरदिगार नहीं मानता ﴿اِنِّىْ وَجَّهْتُ وَجْهِىَ لِلَّذِىْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ (الانعام:٧٩)﴾ मैंने अपना रुख़ उस ज़ात की तरफ़ कर लिया जो ज़मीन व आसमान को पैदा करने वाली है।

मुनाज़िर की दूसरी ख़ासियत यह होती है कि वह हर चीज़ में ग़ौर व फ़िक्र करके इत्मिनाने क़ल्ब हासिल कर लेता है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को यह नेमत भी अता फ़रमाई थी। उन्होंने पूछा, ऐ अल्लाह ﴿كَيْفَ تُحْيِى الْمَوْتٰى﴾ आप मुर्दे को कैसे ज़िंदा फ़रमाएंगे? अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़रमाया ﴿اَوَلَمْ تُؤْمِنْ﴾ क्या आप इस बात पर ईमान नहीं रखते? अर्ज़ किया ऐ परवरदिगार! इस बात पर मेरा पक्का ईमान है,

﴿وَلٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِىْ﴾ मैं तो सिर्फ़ दिल के इत्मिनान के लिए पूछ रहा हूँ। चुनाँचे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने चंद मुर्दा परिन्दों को ज़िंदा करके दिखा दिया।

जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दिल में इत्मिनान आ गया तो अकेले होने के बावजूद नमरूद के दरबार में मुनाज़रा करते हैं और उसे चुप करा देते हैं। इसकी तफ़्सील यह है कि एक बार नमरूद ने सैय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बुलाया और पूछा कि तुम मुझे ख़ुदा क्यों नहीं मानते? सैय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मेरा ख़ुदा तो वह है जो ज़िंदों को मार देता है और मरे हुओं को ज़िंदा कर देता है। नमरूद तो बहुत ही कमअक़्ल इंसान था। अगर अक़्ल थी भी सही तो उसने संभालकर रखी हुई थी, इस्तेमाल नहीं करता था। वह कहने लगा कि यह काम तो मैं ख़ुद भी कर लेता हूँ। चुनाँचे एक बेगुनाह आदमी को बुलाकर उसको क़तल करवा दिया और एक गुनाहगार को बुलाकर उसे माफ़ कर दिया और कहने लगा, यह ज़िंदा और मुर्दा करने वाला काम तो मैंने भी कर दिया। यह सुनकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम समझ गए कि घी टेढ़ी उंगली से निकालना पड़ेगा। चुनाँचे आपने फ़रमाया, अच्छा :

﴿إِنَّ اللّٰهَ يَأْتِىْ بِالشَّمْسِ مِنَ فَاتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِىْ كَفَرَ﴾

मेरा परवरदिगार वह है जो सूरज को मश्रिक़ से तुलू करता है, अगर तेरा कुछ अख़्तियार है तो सूरज को मग़रिब से तुलू करके दिखा। यह सुनकर नमरूद बिल्कुल हक्का-बक्का होकर रह गया। उसके पास कोई जवाब भी न था।

सैय्यदना यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और ख़्वाबों की ताबीर का इल्म

सैय्यदना यूसुफ़ अलैहिस्सलाम इस दुनिया में "इल्म ताबीरुर्-रुइया" ख़्वाबों की ताबीर का इल्म लेकर आए जिसे ख़्वाबों की ताबीर का इल्म कहते हैं। जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जेले में थे उस वक़्त आपने दो आदमियों के ख़्वाबों की ताबीर बताई। ताबीर के मुताबिक़ उनमें से एक क़त्ल हो गया और दूसरे को माफ़ी मिल गई।

एक दफ़ा बादशाह ने ख़्वाब में देखा। उसे ख़्वाब की ताबीर बताने वाला कोई आदमी नज़र न आया। एक आदमी ने बादशाह से कहा, बादशाह सलामत! जेल में एक आदमी है, मैं उससे इस ख़्वाब की ताबीर पूछता हूँ। चुनाँचे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उस ख़्वाब की ताबीर ऐसी बताई जो बादशाह के दिल को भा गई। यहाँ तक कि एक ऐसा वक़्त आया कि बादशाह ने अपना तख़्त व ताज हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के हवाले कर दिया।

एक अहम नुक्ता

यहाँ पर एक नुक्ता ग़ौर तलब है। अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को दो चीज़ों में इम्तियाज़ अता किया था। एक हुस्न और दूसरा इल्मे ताबीर में। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे भाई यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरे भाई यूसुफ़ सबीह थे। इतने ख़ूबसूरत और गोरे चिट्टे थे कि मिस्र की औरतें देखकर कहने लगीं :

﴿مَا هٰذَا بَشَرًا اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ. (یوسف:۳۱)﴾

कि यह कोई इंसान नहीं है बल्कि यह तो कोई मुकर्रम फ़रिश्ता है। जो देखता था दिल दे बैठता था।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ज़ब जवानी की उम्र को पहुँचे तो अल्लाह तआला ने उनको इल्म अता किया। चुनाँचे क़ुरआन मजीद में इर्शाद फ़रमाया गया :

﴿فَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّ عِلْمًا. (یوسف:۲۲)﴾

जब वह भरपूर जवानी को पहुँचे तो हमने उनको इल्म अता किया। इसमें कौन सा इल्म खुसूसियत के साथ था? क़ुरआन मजीद में है ﴿تاویل الاحادیث﴾ ख़्वाबों की ताबीर का इल्म था।

यहाँ समझने की बात यह है कि जब उनको भाईयों ने कुँए में डाला और वह निकाले गए तो निकालने वालों ने उनको बेचा। उस वक़्त उनके पास इन दो नेमतों में से एक नेमत थी। हुस्न व जमाल वाली नेमत। उनको हुस्न व जमाल माँ के पेट से मिला था और जब उठती जवानी हो तो फिर तो हुस्न और भी दिलकश होता है। उनके पास हुस्न की इंतिहा थी। उस वक़्त उनको बेचा गया। उनकी क़ीमत भला कितनी लगी? क़ुरआन मजीद ने इस सवाल का जवाब यूँ दिया :

﴿وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ. (یوسف:۲۰)﴾

चंद खोटे सिक्के। मालूम हुआ कि जब हुस्न इल्म से अलग होता है तो अपनी क़द्र खो देता है। अल्लाह तआला के हाँ ख़ाली हुस्न की कोई क़ीमत नहीं। हुस्न वालों के लिए कितनी इबरत की बात है कि हुस्ने यूसुफ़ की क़ीमत दो तीन खोटे सिक्के लग रही

थी। हुस्न की पूजा करने वाले चंद खोटे सिक्के की पूंजी के पीछे भाग रहे होते हैं। इबरत हासिल करने का मुक़ाम है।

अल्लाह तआला ने जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को इल्म अता फ़रमा दिया तो उन पर इम्तिहान आया। आख़िर अल्लाह तआला ने उनको इस आज़माइश में कामयाब फ़रमा दिया। जेल में भी गए और आख़िर एक वक़्त वह भी आया जब उनको जेल से निकाला गया और पूछा गया कि अब क़हत आएगा तो आप ही बताएं कि हम इस आज़माइश का सामना कैसे करें। फ़रमाया ﴿اجْعَلْنِىْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِ (سورة يوسف:۵۵)﴾ मुझे आप फ़ाइनेन्स मिनिस्टर यानी ख़ज़ानों का वाली बना दें। चुनाँचे उनको फ़ाइनेन्स मिनिस्टर बना दिया गया। अब देखें कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इल्म के ज़रिए इज़्ज़त दे रहे हैं। इज़्ज़त भी क्या मिली कि तख़्त पर बैठकर ख़ज़ाने तक़्सीम कर रहे हैं।

एक वह वक़्त भी आया कि जब भाई ग़ल्ला लेने के लिए आए। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने एक हीले से अपने भाई बिन यामीन को अपने पास रख लिया। फिर दोबारा भाई आए तो कहने लगे, ﴿يٰاَيُّهَا الْعَزِيْزُ﴾ ऐ अज़ीज़े मिस्र! ﴿مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ﴾ हमें और हमारे अहलेख़ाना (घरवालों) को तंगदस्ती ने बेहाल कर दिया है ﴿وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰتٍ﴾ हम ऐसी क़ीमत लाए हैं जो पूरी भी नहीं, ﴿فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ﴾ आप हमें ग़ल्ला पूरा दे दें, ﴿وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا﴾ और हम पर सदक़ा व ख़ैरात कर दें, ﴿اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ﴾ अल्लाह तआला सदक़ा देने वालों को जज़ा देते हैं।

जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने देखा कि मैं भी नबी का बेटा हूँ और ये भी नबी के बेटे हैं और ये मेरे सामने खड़े भीख

मांग रहे हैं तो उस वक़्त उन्होंने उनसे पूछा, ﴿مَا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ﴾ तुमने यूसुफ़ के साथ क्या सुलूक किया था? यह सुनकर उनकी आँखें खुल गयीं और पूछने लगे, ﴿ءَ اِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ﴾ क्या आप यूसुफ़ हैं? उन्होंने फ़रमाया, ﴿اَنَا يُوْسُفُ﴾ हाँ मैं यूसुफ़ हूँ ﴿وَهٰذَا اَخِیْ﴾ और यह मेरा भाई बिनयामीन है। ﴿قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا﴾ तहक़ीक़ अल्लाह तआला ने हम पर एहसान फ़रमा दिया।

﴿اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ. (سورة يوسف:٩٠)﴾।

जो इंसान अपने अंदर तक़्वा और सब्र व ज़ब्त को पैदा कर लेता है अल्लाह तआला ऐसे नेकोकारों के अज्र को ज़ाए नहीं किया करते।

हर दौर और हर ज़माने में जो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों की तरह नफ़्स का पुजारी बनेगा अल्लाह तआला उसे फ़र्श पर खड़ा करेंगे और जो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरह तक़्वे वाली ज़िंदगी गुज़ारेगा अल्लाह तआला उसे अर्श (तख़्त) पर बिठाएंगे।

सैय्यदना दाऊद अलैहिस्सलाम और ज़िरह बनाने का इल्म

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने लोहे से ज़िरह बनाने का इल्म अता किया। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ (سورة سبا:١٠)﴾ कि हमने उनके लिए लोहे को नरम कर दिया। वह लोहे की कड़ियाँ बनाते थे। फिर उनको जोड़कर ज़िरह बनाते थे जो इस दौर में जंग में काम आती थी। अल्लाह तआला ने उनको यह ख़ास इल्म दिया था जिसका तज़्किरा अल्लाह

रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआन पाक में यूँ फ़रमाया ﴿وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ﴾ (سورة الانبياء:٨٠) कि हमने उनको लिबास (ज़िरह) बनाने का इल्म दिया। इस इल्म की वजह से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको शाही अता फ़रमाई हालाँकि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के वालिद तो बादशाह नहीं थे।

सैय्यदना सुलेमान अलैहिस्सलाम और परिन्दों से हमकलाम होने का इल्म

उनके बाद उनके बेटे हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम बादशाह बने। वह अल्लाह तआला के नबी भी थे और वक़्त के बादशाह भी थे। अल्लाह तआला ने उनको ऐसी शाही दी जो दुनिया में न किसी को पहले मिली और न बाद में मिलेगी। उनकी शाही इंसानों पर भी, जिन्नों पर भी, परिन्दों पर भी, मछलियों पर भी और हवा पर भी थी। उनको भी एक ख़ास इल्म दिया गया था। उन्होंने लोगों को फ़रमाया, ﴿يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ﴾ (سورة النمل:١٦) ऐ इंसानो! अल्लाह तआला ने हमें परिन्दों के साथ हमकलाम होने का इल्म अता फ़रमाया है।

एक दफ़ा उन्होंने अपने लश्कर में देखा कि हुदहुद नहीं था। यह हुदहुद परिन्दा चोंच से ज़मीन में सुराख़ करके यह बताता था कि वहाँ पानी ज़मीन की सतह से क़रीब है या नहीं। जब उन्होंने उसे ग़ैर-हाज़िर पाया तो फ़रमाया कि या तो यह कोई माक़ूल वजह बताए या फिर उसे सज़ा मिलेगी। इतने में हुदहुद आ गया। उसने आकर कहा कि जी मैं आप के पास क़ौमे सबा की एक शहज़ादी की ख़बर लेकर आया हूँ। वह सूरज की पूजा करती है।

हुदहुद परिन्दे में इल्म की वजह से जुर्रात

अब यहाँ ज़रा ग़ौर किया जाए कि कहाँ हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की शान और कहाँ छोटा सा हुदहुद परिन्दा। क्योंकि उसके पास इल्म था इसलिए वह बढ़ बढ़ कर बोल रहा था। उसने कहा ﴿اَحَطْتُ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَّقِيْنٍ. (النمل:٢٢)﴾ वह जानता हूँ जो आप नहीं जानते और मैं क़ौमे सबा की एक ठोस ख़बर लाया हूँ। उस परिन्दे की क्या अवक़ात थी कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के सामने बोले। मगर इल्म उसको जुर्रात दे रहा था। चुनाँचे उसकी ख़बर पर ख़त भेजे गए। आख़िर वह वक़्त आया कि मलिका बिल्क़ीस ख़ुद आने लगी।

आसिफ़ बिन बरख़्या का मुक़ाम

जब मलिका बिल्क़ीस आ रही थी तो हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का जी चाहा कि मैं उसके आने से पहले उसका तख़्त मंगवा लूँ। चुनाँचे जब दरबार लगा तो हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

﴿اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِىْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِىْ مُسْلِمِيْنَ. (النمل:٣٨)﴾

कि तुम में से कौन है जो उसका तख़्त उसके पहुँचने से पहले मेरे पास लाकर हाज़िर कर दे? ﴿قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ﴾ जिन्नों में से इफ़रीत नामी एक जिन्न था, वह खड़ा हुआ और उसने कहा, ﴿اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ (النمل:٣٩)﴾ मैं वह तख़्त आपकी महफ़िल बर्ख़ास्त होने से पहले आपके पास पहुँचा देता हूँ। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यूँ तो बहुत देर हो जाएगी।

मुझे तो पहले चाहिए। इस बात पर जिन्न चुप हो गए। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फिर पूछा कि क्या कोई और है जो यह काम करके दिखाए? आख़िर उनकी महफ़िल में से आसिफ़ बिन बरख़िया नामी एक आदमी खड़ा हुआ। ﴿قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ﴾ कहा उस आदमी ने जिसके पास किताब का इल्म था। इल्म की शाही देखिए, इल्म की ताक़त देखिए। वह कहने लगा, ﴿اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ﴾ मैं पलक झपकने से पहले वह तख़्त आपके पास पहुँचा देता हूँ। ﴿فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهُ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ (النمل:٤٠)﴾ हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने पलक झपक कर देखा तो मौजूद था। आपने फ़रमाया कि यह मेरे परवरदिगार का फ़ज़ल है। इस से इल्म की ताक़त का अंदाज़ा कीजिए कि जो काम जिन्न भी न कर सके। वह एक आलिम ने कर दिखाया।

हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम और उमूरे तकवीनिया का इल्म

इल्म में इतनी अज़मत है कि एक ग़ैर नबी को नबी अलैहिस्सलाम का उस्ताद बनने का शर्फ़ नसीब होता है। हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम के बारे में मुहद्दिसीन ने लिखा है कि वह नबी तो नहीं थे अलबत्ता बड़े औलिया में से थे। उनकी नबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है मगर उनकी विलायत पर इत्तिफ़ाक़ है। वह ग़ैर नबी थे मगर उनके पास एक इल्म था जिसका ज़िक्र करते हुए अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَا اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا. (الكهف:٦٥)﴾

उनको अल्लाह तआला ने इल्मे लदुन्नी अता कर दिया था

जोकि तकवीनी उमूर के बारे में था। एक शरिअत का इल्म होता है और दूसरा तकवीनी इल्म होता है। तकवीनी इल्म हासिल करना हमारे लिए ज़रूरी नहीं है। यह इल्म काएनात का निज़ाम चलने से मुताल्लिक़ है। हमें तो सिर्फ़ शरिअत का इल्म हासिल करना है। अंबिया किराम शरिअत का इल्म लाते रहे लेकिन हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम के पास तकवीनी इल्म था। एक ऐसा वक़्त आया कि अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को भेजा कि आप ज़रा जाकर उनसे मिलिए। यहाँ यह नुक्ता ग़ौर तलब है कि एक नबी एक ग़ैर नबी के पास इल्म पाने के लिए तशरीफ़ ले गए।

इबादत में तक्मील

पहली शरिअतों में इबादतें जुज़्वी तौर पर थीं जब कि शरिअते मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में वे इबादतें कामिल हो गयीं। मसलन नमाज़ पहले भी पढ़ते थे मगर मुकम्मल नमाज़ नहीं थी। अल्लाह तआला ने इस उम्मत को मुकम्मल नमाज़ दे दी। रोज़े वे भी रखते थे मगर मुकम्मल न थे। इस उम्मत को मुकम्मल रोज़े मिल गए। एक मिसाल से वज़ाहत सुनिए कि तौहीद के क़ायल तो वे भी थे लेकिन उनमें सज्दा ताज़ीमी जाएज़ था। यही वजह थी कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को उनके माँ-बाप ने ताज़ीमी सज्दा किया। इस उम्मत को भी तौहीद का सबक मिला लेकिन इसकी तक्मील हो गई यानी वे तमाम चीज़ें जिनमें तौहीद के ख़िलाफ़ किसी बात का शक हो सकता था शरिअत ने उसको भी बंद कर दिया। मसलन तस्वीर बनाना हराम क़रार दे दिया

ताकि बुत न बनाए जा सकें और ताज़ीमी सज्दा हराम कर दिया गया ताकि ग़ैर की इबादत न हो सके। गोया हर वह चीज़ तौहीद के ख़िलाफ़ हो सकती थी शरिअत ने उनकी शुरूआत को भी बंद कर दिया। यह है तक्मील जिसका तज़्किरा करते हुए अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿اَلْیَوْمَ اَکْمَلْتُ لَکُمْ دِیْنَکُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَیْکُمْ نِعْمَتِیْ (سورۃ المائدہ:۳)﴾

आज के दिन मैंने तुम्हारे लिए दीन को कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी।

आलिम का मुक़ाम

मेरे दोस्तो! इस दुनिया में इल्म की शाही है बल्कि यूँ भी कह सकते हैं कि इस दुनिया में इलम का राज है जबकि इल्म पर मेरे परवरदिगार का राज है। ﴿وفوق کل ذی علم علیم﴾ चूँकि दुनिया में इल्म का राज है इसलिए अंबिया किराम को अल्लाह तआला बड़ी इ़ज़्ज़तें बख़्शीं। यह सिलसिला नबुव्वत तो नबी अलैहिस्सलाम पर आकर मुकम्मल हो गया मगर चूँकि यह नेमत क़यामत तक जारी व सारी रहनी है इसलिए जो लोग इस इल्म को हासिल करेंगे और आगे दूसरों तक पहुँचाएंगे वह उलमा नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के वारिस कहलाएंगे। क्योंकि हदीस पाक में आया है कि ﴿العلماء ورثة الانبياء﴾ उन्होंने वही काम करना है जो नबी अलैहिस्सलाम ने दुनिया में आकर किया। इस निस्बत की वजह से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनकी शान बढ़ा दी। काम भी बड़ा और मुक़ाम भी बड़ा। मुक़ाम इतना ऊँचा बख़्शा कि ﴿فقیه واحد اشد علی الشیطان من الف عابد﴾ हज़ार इबादत गुज़ार हों तो भी एक आलिम उनसे

ज़्यादा भारी है। अजीब बात है कि हज़ार इबादतगुज़ार लोगों की बात हो रही है। आख़िर वह भी इबादतगुज़ार तो हैं नाँ, फ़ासिक़, फ़ाजिर तो नहीं हैं। हज़ार इबादतगुज़ार एक तरफ़ और एक आलिम एक तरफ़। यह बात बंदे को थोड़ी देर के लिए हैरान करती है कि यह क्या मामला है मगर समझनी आसान है।

ग़ौर कीजिए कि इल्म अल्लाह तआला की सिफ़्त है और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त शंशाहे हक़ीक़ी हैं। लिहाज़ा जिसमें इल्म वाली सिफ़्त आ गई उसमें शाहों वाली सिफ़्त आ गई। और इबादत ग़ुलामों का काम होता है। अगर ग़ुलामों की तादाद एक हज़ार भी हो तो क्या वह एक बादशाह का मुक़ाबला कर सकता है। एक रिवायत में यह भी आया है कि नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ﴿فضل العالم على العابد كفضلى على ادنكم﴾ आलिम की फ़ज़ीलत आबिद पर ऐसी है जैसे मेरी फ़ज़ीलत तुम में से एक अदना आदमी पर है।

उलमा किराम का फ़र्ज़े मंसबी (ज़िम्मेदारी)

उलमा किराम का फ़र्ज़े मंसबी इस आयत में बयान फ़रमाया गया है ﴿والرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ﴾ रब्बानिय्यून यानी रब वाले, जिन्हें हम अल्लाह वाले कहते हैं। 'अहबार', हबर की जमा है जिसका मतलब है उलमा। इन दोनों का फ़र्ज़े मंसबी क्या है? ﴿بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ (المائدہ:۴۴)﴾ उनका काम किताबुल्लाह की हिफ़ाज़त करना है। गोया उलमा और सुल्हा (बुज़ुर्गों) ने क़ुरआन पाक की हर-हर आयत पर डेरे डालने हैं और उनको महफ़ूज़ करना है। न सिर्फ़ यही बल्कि इसके पैग़ाम को दुनिया के हर-हर

बंदे तक पहुँचाना है और किसी शरीर को इसमें अपनी मर्ज़ी शामिल नहीं करने देनी। इसलिए उलमा किराम हर उस बंदे के शर को वाज़ेह कर देते हैं जो तफ़्सीर और अहादीस में अपनी राय को शामिल करना शुरू कर देता है। वह हक़ को बातिल से अलग कर देते हैं। उलमा और सुल्हा को पूरी ज़िंदगी इसमें गुज़ारनी चाहिए लेकिन इस काम में तब आसानी होगी जब इख़्लास के साथ करेंगे। अल्लाह तआला हुक्म फ़रमाते हैं। फ़रमाया ﴿كُونُوْا رَبَّانِيّٖنَ﴾ यह अम्र का सेग़ा है। यहाँ अल्लाह तआला उलमा को फ़रमा रहे हैं कि तुम अल्लाह वाले बन जाओ, क्यों? इसलिए कि ﴿كُوْنُوْا رَبَّانِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ (آل عمران:٧٩)﴾ कि तुम किताब (क़ुरआन मजीद) पढ़ाते हो और तुम तदरीस का काम करते हो। इसलिए तुम्हें चाहिए कि तुम अल्लाह वाले भी बन जाओ।

इल्म का मक़सद

उलमा किराम जब भी इख़्लास के साथ दीन का काम करेंगे अल्लाह तआला उन पर वही बरकतें नाज़िल फ़रमाएंगे जो अंबिया किराम की ज़िंदगियों में नाज़िल हुआ करती थीं। इल्म का मक़सद इख़लास है और इख़लास के बग़ैर काम नहीं चलता। दीन का काम ख़ुलूस से चलता है पैसे नहीं चलता।

इख़लास का ताजमहल

अकाबिरीन उलमाए देवबंद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के चंद मुख़्लिस लोगों की एक जमात का नाम है। उनके दिल में दीन का

दर्द था। उन्होंने ऐसा काम किया कि उनके फ़ैज़ उस वक़्त पूरी दुनिया में फैला हुआ है।

मोहतरम जमात! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत और उसकी मेहरबानी से इस आजिज़ को दीन की निस्बत से दुनिया के चालीस से ज़्यादा मुल्कों में सफ़र की तौफ़ीक़ नसीब हुई। अमरीका भी देखा, अफ़्रीक़ा भी देखा, मलेशिया के जंगलात भी देखे और रशिया में साइबेरिया का इलाक़ा भी देखा। वह जगह भी देखी जहाँ पर छः महीने रात होती है और वह जगह भी देखी जिसको दुनिया का आख़िरी किनारा कहा जाता है। वहाँ पर हुकूमत ने लिखकर लगाया हुआ है कि यह दुनिया का आख़िरी किनारा है। वह इस तरह कि साल में एक दिन ऐसा आता है कि वहाँ समुन्दर के किनारे पर दुनिया के लाखों ट्यूरिस्ट मौजूद होते हैं। वहाँ सूरज गुरूब होने के लिए आता है तो गुरूब होते-होते गुरूब नहीं होता बल्कि फिर तुलू (निकलना) शुरू हो जाता है। लाखों ट्यूरिस्ट यह नज़ारा वहाँ पर देखते हैं। इसलिए इस जगह को दुनिया का आख़िरी किनारा कहते हैं। अल्लाह तआला ने इस आजिज़ को इस जगह पर भी पहुँचने की सआदत अता फ़रमाई लेकिन एक बात अर्ज करता हूँ कि यह आजिज़ जहाँ भी गया, मश्रिक़ हो या मग़रिब, शुमाल हो या जुनूब पहाड़ थे या मैदान, जंगल था या रेगिस्तान जहाँ भी गया इस आजिज़ ने उलमा देवबंद का कोई न कोई रूहानी फ़रज़ंद वहाँ दीन का काम करते हुए देखा।

यह इल्म ओ हुनर का गहवारा तारीख़ का वह शह पारा है
हर फूल यहाँ एक शोला है हर सरो यहाँ मीनारा है

आबिद के यक़ीन से रोशन है सादात का सच्चा साफ़ अमल
आँखों ने कहाँ देखा होगा इख़्लास का ऐसा ताजमहल

कोहसार यहाँ दब जाते हैं तूफ़ान यहाँ रुक जाते हैं
इस काख़ फ़क़ीरी के आगे शाहों के महल झुक जाते हैं

फ़ैज़ के चलने के लिए एक अहम शर्त

दीन का काम हो ही तब सकता है जब दिल में ख़ुलूस हो। फ़ुलूस (माल) की नीयत से करेंगे तो फ़ैज़ नहीं चलेगा। अल्लाह की रज़ा के लिए करेंगे तो अल्लाह तआला फ़ैज़ चला देंगे। फ़ैज़ का चलना बरकत का दूसरा नाम है। हर बंदे का फ़ैज़ भी नहीं चलता। सिर्फ़ उसी का फ़ैज़ चलता है जिसकी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ क़ुबूलियत हो जाती है।

शेख़ुलहिन्द हज़रत मौलाना महमूद हसन साहब रह० का फ़ैज़

शेख़ुलहिन्द हज़रत मौलाना महमूद हसन साहब रह० अकाबिर उलमा देवबंद के एक फ़र्दे फ़रीद थे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उन को दीन का दर्द दिया था। उन्होंने दीन का काम किया और उस के लिए क़ुर्बानियाँ दीं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उन क़ुर्बानियों से उनको ऐसे शागिर्द दिए जिन्होंने आगे दीन का ख़ूब काम किया। आप शेख़ुलहिन्द रह० का कोई ऐसा शागिर्द नहीं दिखा सकते जिसने अपनी ज़िंदगी में दीन का काम न किया हो। उनके शागिर्दों में हज़रत मौलाना सैय्यद हुसैन अहमद मदनी रह०, मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० और हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब

थानवी रह० ज़्यादा मश्हूर हुए। शेख़ुलहिन्द रह० के शागिर्दों में एक ग़ैर-मारूफ़ शख़्सियत (छिपी हस्ती) का तज़्किरा आपके सामने करता हूँ ताकि आपको उनकी कुछ नई बातें मालूम हों।

हज़रत मौलाना ग़ुलाम रसूल साहब पौंटवी रह० का मुक़ाम

मुल्तान से आगे शुजाअबाद में एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं जिनका नाम हज़रत मौलाना ग़ुलाम रसूल पौंटवी रह० था। पौंटा एक छोटा सा गाँव है, वह उससे ताल्लुक़ रखते थे। उन्होंने शेख़ुलहिन्द रह० से दौरए हदीस किया। उनको शेख़ुलहिन्द रह० से ऐसी वालेहाना मुहब्बत थी कि हज़रत जिस रास्ते से दारुलहदीस में आया करते थे, ये रात को छिपकर उस रास्ते को अपने अमामे के साथ झाड़ू दिया करते थे। वह इसलिए छिपते थे कि दूसरे तालिब इल्मों उनको देख न लें।

एक बार शेख़ुलहिंद रह० ने उनको अमामे से झाड़ू देते हुए देख लिया। उन्होंने पूछा ग़ुलाम रसूल यह क्या कर रहे हो? आख़िर बताना पड़ा। शेख़ुलहिन्द रह० ने ख़ुश होकर उनको दुआ दे दी। बस उस्ताद की दुआ शागिर्द के काम आ गई।

एक होता है दुआएं करवाना और एक होता है दुआएं लेना। इन दोनों में फ़र्क़ होता है। दुआएं करवाना तो यह हुआ कि बेटा कहे, अम्मी! मेरे लिए दुआ करे दें, अब्बू! मेरे लिए दुआ कर दें। हज़रत! मेरे लिए दुआ कर दें। और दुआ लेना यह होता है कि इंसान इतना नेक और बाअदब बने कि उसकी नेकी को देखकर उसके बड़ों के दिल से दुआएं निकल रही हों। आज के दौर में

दुआएं करवाने वाले बड़े होते हैं मगर दुआएं लेने वाले बहुत थोड़े होते हैं।

हदीस पाक में आया है कि तीन सहाबा किराम थे। तीनों की उठती जवानियाँ थीं। तीनों का नाम अब्दुल्लाह था। ये ऐसे आबिद थे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत में इल्म हासिल करने के लिए और आपकी ख़िदमत के लिए एक दूसरे से आगे निकलने की कोशिश करते थे। उनके शौक़ और जज़्बे को देखकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का दिल इतना खुश होता था कि आप तहज्जुद की नमाज़ में उनका नाम ले ले कर अल्लाह तआला की हुज़ूर दुआएं फ़रमाते थे। चुनाँचे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआएं ऐसी क़ुबूल हुईं कि अल्लाह तआला ने दुनिया के अंदर ख़ास शान अता की। उनमें से हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इमामुलफ़ुक़्हा बने, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा इमामुल मुफ़स्सिरीन बने और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा इमामुल मुहद्दिसीन बने।

हज़रत मौलाना गुलाम रसूल पौंटवी रह० ने भी शेखुलहिन्द रह० से दुआ ली और उनका फ़ैज़ चला। शुजाअबाद से तीन किलोमीटर के फ़ासले पर उनका गाँव पौंटा था। उन्होंने एक किताब लिखी जिसका नाम "शरह माया आमिल पौंटवी" है। मुमकिन है कि कुछ उलमा की नज़र से वह किताब गुज़री हो। तुलबा शुजाअबाद शहर में बस से उतरते और तीस किलोमीटर पैदल चलकर अपना बिस्तर और सामान अपने सरों पर रखकर पौंटा जाया करते थे। उनके पास तक़रीबन साढ़े तीन सौ शागिर्द

होते थे। उनका भी ख़ूब फ़ैज़ फैला। उनके दो शागिर्दों का नाम अब्दुल्लाह था। एक अब्दुल्लाह दरख़्वास्ती रह जोकि हाफ़िज़ हदीस थे और दूसरे हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह बहलवी रह० जो शुजाअबाद के शेख़ थे। हज़ारों उलमा के शेख़ थे। उनका दर्स क़ुरआन बहुत मारूफ़ था।

हज़रत मौलाना ग़ुलाम रसूल पौंटवी रह० एक बार ख़ैरुल मदारिस के सालाना जलसे में तशरीफ़ लाए। उस वक़्त पाकिस्तान के बड़े-बड़े उलमा मौजूद थे। उस वक़्त हज़रत मौलाना ख़ैर मुहम्मद जालंधरी रह० ने उनको शम्सुन्निहा के लक़ब से पुकारा। इतने उलमा की महफ़िल में जिनको शम्सुन्निहा कहा जाए उनके इल्म क्या आलम होगा। वह खुद फ़रमाया करते थे कि अगर पूरी दुनिया से शरह जामी को ज़ब्त कर लिया जाए और कोई बंदा मेरे पास आकर कहे कि हज़रत! मुझे शरह जामी की ज़रूरत है तो मैं शरह जामी को मतन और उसके हाशिए के साथ दोबारा लिखवा सकता हूँ।

हज़रत ख़्वाजा अब्दुल्लाह बहलवी रह० का फ़ैज़ाने सोहबत

अल्लाह तआला ने हज़रत ख़्वाजा अब्दुल्लाह बहलवी रह० का फ़ैज़ उलमा में बहुत ज़्यादा जारी फ़रमाया। वह रमज़ानुल मुबारक में दौरए तफ़्सीर करवाया करते थे। तीन-तीन सौ उलमा उनके पास रहकर तर्बियत पाते थे और दौरए तफ़्सीर किया करते थे। उनके फ़ैज़े सोहबत का यह आलम था कि एक आलिम उनसे बैअत थे। वह खुद कहने लगे कि मैं हज़रत को मिलने के लिए

गया। मैंने थोड़ी देर के बाद इजाज़त मांगी। हज़रत फ़रमाने लगे कि अगरचे आप पढ़ने पढ़ाने में मशग़ूल हैं फिर भी कुछ वक़्त आप मेरे पास भी रहें। मेरे दिल में यह बात आई कि जब मेरे शेख़ रहने के लिए फ़रमा रहे हैं तो चलो मैं रह लेता हूँ। चुनाँचे मैंने कहा, हज़रत! मैं तीन दिन रहता हूँ। शेख़ फ़रमाने लगे बहुत अच्छा। मैं तीन दिन उनकी सोहबत में रहा। इसकी बरकत से मेरे ऊपर ऐसी कैफ़ियत तारी हुई कि जब वापस घर लौटा तो तीन साल में एक बार भी तहज्जुद क़ज़ा न हुई हालाँकि इससे पहले मैंने तीन दिन लगातार कभी तहज्जुद नहीं पढ़ी थी।

मेहनत की चक्की

दीन के लिए इंसान को मेहनत करनी पड़ती है। चक्की पीसनी पड़ती है। चक्की पीसनी पड़ती है। उसको पीसे बग़ैर किसी का फ़ैज़ जारी नहीं हुआ। आप किसी भी बुज़ुर्ग के हालाते ज़िंदगी पढ़कर देख लीजिए। जितना मुजाहिदा ज़्यादा किया होगा, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उतना ही फ़ैज़ ज़्यादा जारी किया होगा। कहावत मशहूर है कि जितना गुड़ डालेंगे उतना ही मीठा होता है। इसी तरह इस राह में जितना मुजाहिदा करेंगे अपनी आसाइश और आराम को दीन के तक़ाज़ों पर क़ुर्बान करेंगे उतने ही उसके समरात मिलेंगे।

रब लइ तज करना पेंदा है आसाइशाँ नूँ आरमाँ नूँ
कुन्डियाँ ते चलना पैंदा है गुलबदनाँ नूँ गुलफ़ामाँ नूँ

अल्लाह के दीन के लिए आसाइश व आराम को क़ुर्बान करना पड़ता है और बड़े-बड़े नाज़नीनों को भी कांटों पर चलना पड़ता है।

एहसाने ख़ुदावंदी

आप हज़रात जो इन पहाड़ों के अंदर इल्म का चिराग़ जलाए बैठें हैं यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की बड़ी मेहरबानी है बल्कि आजिज़ तो कहेगा कि आप अल्लाह तआला के लाडले हैं। अल्लाह तआला खुद फ़रमाते हैं :

﴿ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا. (سورة فاطر:٣٢)﴾

फिर हमने किताब का वारिस बना दिया अपने बंदों में से उन को जो हमारे चुने हुए थे जो हमारे पसन्दीदा थे, जो हमारे लाडले थे। मोहतरम उलमा किराम इस में हमारा कोई कमाल नहीं बल्कि यह कमाल वाले का कमाल है कि उसने हम जैसे लोगों को यह काम अता फ़रमा दिया।

منت منہ کہ خدمت سلطاں ہمی کنی منت ازو شناس کہ در خدمت گذاشتت

ऐ मुख़ातब! बादशाह पर एहसान न जतला कि तू बादशाह की ख़िदमत करता है। अरे! उसकी ख़िदमत करने वाले लाखों हैं। यह उसका तुझ पर एहसान है कि उसने तुझे अपनी ख़िदमत के लिए क़ुबूल फ़रमा लिया है।

अब यह हमारे ज़िम्मे है कि हम एहसान माने और अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने की कोशिश करें।

ख़ैर के फ़ैसले

आप दीन के काम को इख़्लास के साथ करें। एक-एक बच्चे पर मेहनत करें। दिन में उसे पढ़ाएं और रात को उसको अल्लाह तआला से मांगे। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की यही सुन्नत है।

अगर इस तरह करेंगे तो अल्लाह तआला ख़ैर के फ़ैसले फ़रमा देंगे। यही हमारे अकाबिरीन का तरीक़ा है। और इसी तरीक़े से उनका फ़ैज़ आगे फैला है।

शेख़ुलहिन्द हज़रत मौलाना महमूद हसन साहब रह० की इस्तिक़ामत

हज़रत शेख़ुलहिंद को दीन के लिए बड़ी क़ुर्बानियाँ देनी पड़ीं। उनके हालाते ज़िंदगी में लिखा है कि जब उनकी वफ़ात हकीम मुहम्मद अजमल की कोठी पर हुई, ग़ुस्ल देने वाले ने देखा कि उनकी पीठ पर ज़ख़्मों के बड़े-बड़े निशान हैं। उसने रिश्तेदारों से पूछा। उन्होंने घरवालों से पूछा लेकिन किसी को कुछ मालूम न था। सब हैरान थे। घरवालों से इस बात को छिपाए रखा, आख़िर क्या मामला है।

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० उस वक़्त कलकत्ता गए हुए थे। उनको शेख़ुलहिंद की वफ़ात का पता चला तो वहाँ से जनाज़े में शिर्कत के लिए आए। उनसे किसी ने पूछा कि आप बताएं कि यह क्या मामला है? हज़रत मदनी रह० की आँख में आँसू आ गए। फ़रमाने लगे, यह एक राज़ था और हज़रत ने मना फ़रमा दिया था कि मेरी ज़िंदगी में तुम किसी को नहीं बताना। इसलिए अमानत थी और मैं बता नहीं सकता था। अब तो हज़रत वफ़ात पा गए हैं लिहाज़ा अब तो मैं बता सकता हूँ। वह फ़रमाने लगे कि जब हम मालटा में क़ैद थे तो उस वक़्त हज़रत को इतनी सज़ा दी जाती, इतनी सज़ा दी जाती कि जिस्म पर ज़ख़्म हो जाते थे। और कई बार ऐसा होता था कि फ़िरंगी अंगारे बिछा देते और

हज़रत को उस पर लिटा देते थे। जेल के हाकिम कहते कि महमूद! सिर्फ़ इतना कह दो कि मैं फ़िरंगियों का मुख़ालिफ़ नहीं हूँ। आपको हम इतना कहने पर छोड़ देंगे। मगर हज़रत फ़रमाते कि नहीं यह अल्फ़ाज़ नहीं कह सकता। वे उनको बहुत ज़्यादा तकलीफ़ देते थे। हज़रत अपनी जगह पर रात को सोने के लिए आते तो सो भी नहीं सकते थे। नींद न आने की वजह से भी तकलीफ़ और उधर से भी तकलीफ़ें। हम लोग हज़रत की हालत देखकर परेशान हो जाते। हमने एक दिन रो कर कहा, हज़रत! आख़िर इमाम मुहम्मद रह० ने "किताबुल हीला" लिखी है। लिहाज़ा कोई ऐसा हीला है कि आप इनकी सज़ा से बच जाएं। हज़रत ने फ़रमाया, नहीं। अगले दिन हज़रत को फिर सज़ा दी गई। जब लगातार कई दिन यह सज़ा मिलती रही तो एक दिन एक फ़िरंगी खड़ा होकर कहने लगा, तुझे है क्या? तू यह क्यों नहीं कहना चाहता कि मैं फ़िरंगियों का मुख़ालिफ़ नहीं हूँ। उस वक़्त हज़रत ने फ़रमाया कि मैं इसलिए नहीं कहना चाहता कि मैं अल्लाह के दफ़्तर से नाम कटवाकर तुम्हारे दफ़्तर में नाम नहीं लिखवाना चाहता। हज़रत मदनी रह० फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा हज़रत आए तो हमने देखा कि ख़तरनाक सज़ा दी गई है। हम हज़रत के साथ तीन चार शागिर्द थे। हमने मिलकर अर्ज़ किया हज़रत! कुछ मेहरबानी फ़रमाएं। अब जब हज़रत ने देखा कि मिलकर बात की तो उनके चेहरे पर ग़ुस्से के आसार ज़ाहिर हुए। फ़रमाने लगे, हुसैन अहमद! तुम मुझे क्या समझते हो? मैं रुहानी बेटा हूँ हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु का, मैं रुहानी बेटा हूँ हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु का, मैं रुहानी बेटा हूँ हज़रत सुमैय्या रज़ियल्लाहु अन्हा का, मैं रुहानी बेटा हूँ इमाम मालिक

रह० का जिन्हें मुँह पर स्याही मलकर मदीना के अंदर फिराया गया, मैं रूहानी बेटा हूँ इमाम अबूहनीफ़ा रह० का जिनकी लाश जेल से बाहर निकली, मैं रूहानी बेटा हूँ इमाम अहमद बिन हंबल रह० का जिनको इतने कोड़े मारे गए कि अगर हाथी को भी मारे जाते तो वह भी बिलबिला उठता, मैं रूहानी बेटा हूँ मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० का जिनको दो साल के लिए ग्वालियर के क़िले में क़ैद रखा गया था, मैं रूहानी बेटा हूँ शाह वलिउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० का जिनके हाथों को कलाइयों के क़रीब से तोड़कर बेकार बना दिया गया था। हुसैन अहमद! क्या मैं फ़िरंगियों के सामने हार तसलीम कर लूँ। नहीं ये मेरे जिस्म से जान तो निकाल सकते हैं मगर मेरे दिल से ईमान नहीं निकाल सकते। सुब्हानअल्लाह! जब ऐसी इस्तिक़ामत होती है फिर अल्लाह तआला फ़ैज़ भी जारी फ़रमा देते हैं।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें भी इस्तिक़ामत और इख़्लास के साथ दीन का काम करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए, आमीन।

❋ ❋ ❋

इल्म और उलमा की शान

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ अहले इल्म की बड़ी शान है इसीलिए हदीस पाक में फ़रमाया गया ﴿العلم نور﴾ इल्म एक रोशनी है। और यह बात ज़हन में रखिए कि इल्म की रोशनी सूरज की रोशनी से ज़्यादा अफ़ज़ल होती है क्योंकि सूरज तो कुछ हिस्से लिए चमकता है फिर डूब जाता है। सिर्फ़ दिन को रोशनी देता है रात को रोशनी नहीं देता लेकिन इल्म का सूरज वह सूरज है जो दिन को भी चमकता है और रात को भी चमकता है। यही वजह है कि अहले इल्म हज़रात की महफ़िलें रातों को लगी रहती हैं।

इल्म और उलमा की शान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ. وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ اٰخَرَ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا. سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

क़ुदरत का नमूना

इंसान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की क़ुदरत का नमूना है। यह इस दुनिया में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का नाएब, उसका ख़लीफ़ा और उसकी सिफ़ात का मज़हर है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने यह सारी काएनात इंसान के लिए बनाई जबकि इंसान को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने लिए बनाया है। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, ﴿ان الدنيا خلقت لكم وانتم خلقتم للاخرة﴾ कि दुनिया तुम्हारे लिए पैदा की गई है और तुम्हें आख़िरत के लिए पैदा किया गया है। किसी शायर ने इसी मज़मून को नीचे लिखे अल्फ़ाज़ में बयान किया है–

खेतियाँ सरसब्ज़ हैं तेरी ग़िज़ा के वास्ते
चाँद सूरज और सितारे हैं ज़िया के वास्ते

बहरो बर शम्सो क़मर मा ओ शुमा के वास्ते
ये जहाँ तेरे लिए है तू ख़ुदा के वास्ते

तो यह सारा जहान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हमारे लिए पैदा किया है और हमें उसने अपनी बंदगी के लिए पैदा किया।

मक़सदे ज़िंदगी

इंसान को इस दुनिया में आख़िरत की तैयारी के लिए भेजा गया है। अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त चाहता तो अपने बंदे को आलमे अरवाह में ही अपना वली बना देता। लेकिन उस परवरदिगार ने विलायत के हासिल करने के लिए इंसान को दुनिया में भेजा ताकि हम यहाँ पर मेहनत करें और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का क़ुर्ब हासिल कर सकें।

विलायत के दर्जात

विलायत के दो दर्जे हैं। एक विलायते आम्मा (आम)। जिस बंदे ने भी कलिमा पढ़ा उसका विलायते आम्मा का रुत्बा मिल गया। इर्शादे बारी तआला है ﴿اللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا﴾ अल्लाह दोस्त है ईमान वालों का। विलायत का यह दर्जा हर कलिमा पढ़ने वाले को नसीब है और एक विलायते ख़ास्सा होती है। इसको हासिल करने के लिए इंसान को तक़्वा और परहेज़गारी को अख़्तियार करना पड़ता है। चुनाँचे इर्शाद फ़रमाया :

﴿اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ.(سورة يونس:٦٢)﴾

जान लो कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के दोस्तों पर न तो ख़ौफ़ होता है और न ही कोई हुज़्न होता है।

ख़ौफ़ बाहर के डर को कहते हैं और हुज़्न अंदर के ग़म को कहते हैं यानी न उनको कोई बाहर का डर होता है और न ही कोई अंदर का ग़म होता है। ये वे लोग हैं :

﴿الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ. (سورة يونس:٦٣)﴾

जो ईमान लाए और उन्होंने तक़्वे को अख़्तियार किया,

﴿لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ﴾

उनके लिए दुनिया और आख़िरत में बशारतें और मुबारकें हैं।

इल्म व अमल की सआदतें

अब सवाल यह पैदा होता है कि इंसान तक़्वा कैसे अपनाए? इसके लिए पहला क़दम इल्म हासिल करना है और दूसरा क़दम इस इल्म पर अमल करना है। ये दोनों बड़ी नेमतें हैं। दुनिया जहाँ की सआदतों की कुंजियाँ इल्म व अमल के अंदर हैं। क़ुरआन मजीद में जहाँ उन लोगों का तज़्किरा किया गया है जिन पर अल्लाह तआला ने ख़ास रहमतें नाज़िल कीं वहाँ पर यह भी फ़रमा दिया कि ये वे लोग हैं :

﴿مِنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ. (سورة النساء:٦٩)﴾

जो अंबिया, सिद्दीक़ीन, शोहदा और सालिहीन हैं।

इन चार हज़रात में से पहले दो हज़रात की निस्बत इल्म के साथ ज़्यादा पक्की है क्योंकि अंबिया किराम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से पैग़ाम लेकर आए और सिद्दीक़ीन वे हैं जिन्होंने उसकी तस्दीक़ की। उन पर इल्म की निस्बत ग़ालिब है। और शहीद और सालिहीन की निस्बत अमल के साथ ज़्यादा पक्की है।

इस आयत से यही मालूम हुआ कि जहान की साअदतें इल्म अमल के अंदर मौजूद हैं।

इल्म हासिल करने का क़ुदरती जज़्बा

इल्म हासिल करनें का जज़्बा हर इंसान के अंदर फ़ितरतन मौजूद है। जिस तरह हर इंसान को फ़ितरतन भूख लगती है, प्यास लगती हैं और नींद आती है क्योंकि ये उसके बदन की ज़रूरत है। इसी तरह इल्म हासिल करने का जज़्बा भी हर इंसान के अंदर फ़ितरतन रख दिया गया है। इसकी मिसाल यूँ समझिए कि अगर आप सफ़र कर रहे हों और रास्ते में कोई मजमा नज़र आए तो मजमे को देखकर हर आदमी पूछेगा, भई! यहाँ क्या हुआ है? देखिए यह जो दिल में जज़्बा उठा कि क्या हुआ है यह असल में इल्म हासिल करने का जज़्बा है। इसी तरह कई लोगों को अख़बार पढ़ने का शौक़ होता है। लिहाज़ा सुबह उठते ही वे एक दूसरे से पूछते हैं, सुनाओ भई! कोई नई ख़बर है? यह नई ख़बर जानने का जज़्बा दरअसल इल्म हासिल करने का जज़्बा है।

आज़ा की तक़्सीम

इंसान के जिस्म में मुख़्तलिफ़ अज़ा हैं। इन आज़ा की तक़्सीम तीन तरह से है :

1. कुछ आज़ाए इल्म हैं जिनसे इसांन इल्म हासिल करता है जैसे आँख, कान, दिमाग़। ये सब इल्म के ज़रिए हैं।
2. कुछ आज़ाए अमल होते हैं जैसे हाथ, पाँव। हाथ और पाँव ने दिमाग़ की हिदायत के मुताबिक़ करना होता है।

3. कुछ आज़ाए माल होते हैं। वे कुछ चीज़ों के ख़ज़ीने होते हैं जैसे इंसान का दिल, फेफड़े और मेदा वग़ैरह।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तक़्सीम देखिए कि हाथ और पाँव जिनको मज़दूर क़िस्म के आज़ा कहा जा सकता है। इन सबको सबसे नीचे रखा। जो आज़ाए माल थे उनको दर्मियान में रखा। जो आज़ाए इल्म हैं उनको अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने सबसे ऊपर रखा यानी इंसान के जिस्म में उलमा की बस्ती सबसे ऊपर बसाई गई। फिर अहले माल की और उसके बाद अहले मेहनत की बस्ती बसाई गई। गोया दुनिया में अल्लाह तआला ने आज़ाए इल्म को शराफ़त बख़्शी है। सोचने की बात यह है कि वह चीज़ें जो इल्म हासिल करने का सबब बनते हैं अल्लाह तआला उनको शराफ़त बख़्श रहे हैं। तो जो इंसान ख़ुद आलिम बन जाएगा अल्लाह उसको कैसी शराफ़त बख़्शेंगे?

तालिबे इल्म की फ़ज़ीलत

हज़रत सुफ़ियान सौरी रह० फ़रमाया करते थे कि अगर नेक नीयत हो तो तालिब इल्म से अफ़ज़ल कोई नहीं होता।

हदीस पाक में फ़रमाया गया है :

﴿ما كان فى طلب العلم كانت الجنة فى طلبه﴾

जो इंसान इल्म की तलब में होता है जन्नत उस बंदे की तलब में होती है।

एक और हदीस में आया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿من خرج فی طلب العلم فهو فی سبیل الله حتی یرجع.﴾

जो आदमी इल्मे दीन हासिल करने के लिए निकला वह वापस आने तक अल्लाह के रास्ते में है।

इस हदीस से मालूम होता है कि जिस तरह मुजाहिदीन अल्लाह की राह में जिहाद के लिए निकलते हैं तो रास्ते में उनको जो भी तकलीफ़ें आती हैं और मुशक़्क़तें बर्दाश्त करना पड़ती हैं उसका उनको अज्र दिया जाता है। इसी तरह तालिब इल्म जब घर से तलबे दीन के लिए निकलता है तो वापस आने तक उसका हर हर लम्हा अल्लाह की राह में शुमार होता है। और उसे घर के आराम व सुकून को छोड़कर जो भी मुजाहिदे करने पड़ते हैं उस पर अज्र मिलेगा।

आलिम की शान

और एक रिवायत में आया है कि जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त किसी आम बंदे से ख़ुश होते हैं तो उसके लिए जन्नत में एक घर बना देते हैं और जब अल्लाह तआला किसी आलिम से ख़ुश होते हैं तो उसके लिए जन्नत में एक शहर आबाद कर दिया करते हैं। जैसे दुनिया में नवाबों की अपनी अपनी रियासतें होती हैं इसी तरह अल्लाह तआला जन्नत में उलमा का इकराम फ़रमाते हुए उनकी बस्तियाँ आबाद करेंगे।

अल्लाह तआला इल्म हासिल करने वालों को बड़ी शान बख़्शते हैं। हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते थे कि अगर उलमा न होते तो लोग डंगरों और जानवरों जैसी ज़िंदगी गुज़ारा करते क्योंकि हदीस पाक में फ़रमाया गया है कि ﴿العلم نور﴾ इल्म एक

नूर है। गोया अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ﴿العلم نور﴾ इर्शाद फ़रमाकर जिहालत से नापसन्दीदगी का इज़्हार फ़रमाया है हत्ताकि जब पहली "वही" उतरी तो उसमें पहला लफ़्ज़ "इक़्रा" था इसका मतलब है, "पढ़" यानी इस उम्मत को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से जो पहला ईनाम मिला है उसमें पढ़ने की तलक़ीन थी। फिर फ़रमाया :

﴿اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ٥ (العلق : ٣)﴾

आप पढ़िए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त आपको इज़्ज़तें बख़्शने वाला है।

इस पैग़ामे ख़ुदावंदी से इल्म की अहमियत सामने आती है।

दुनियावी तालीम और दीनी तालीम

लिहाज़ा हम में हर आदमी के लिए ज़रूरी है कि इल्मे दीन हासिल करे। याद रखें कि एक दुनियावी इल्म है जो कालिजों और स्कूलों से हासिल किया जाता है। वह इल्म दुनिया में अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने के लिए इंसान की ज़रूरत है। इससे इंसान को काम करने का अच्छा शोबा मिल जाता है, अच्छा ओहदा मिल सकता है, इंसान बिज़नेस कर सकता है और दुनिया की मुश्किलात हल करने के लिए माल कमा सकता है। बस दुनियावी तालीम इंसान की ज़रूरत है। इसके मुक़ाबले में इल्मे दीन इंसान के लिए मक़सद के दर्जे में है। यह मक़सदे ज़िंदगी है कि हम इल्म हासिल करें क्योंकि इल्म से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मारिफ़त हासिल होती है। फ़ारसी में कहते हैं :

بے علم نتواں خدارا شناخت

बेइल्म आदमी अल्लाह तआला को नहीं पहचान सकता।

क्योंकि इल्मे दीन मक़सदे ज़िंदगी है इसलिए इसकी अज़मत बहुत ज़्यादा है। यही वजह है कि मर्द और औरत दोनों के लिए हुक्म दिया गया :

﴿طلب العلم فريضة على كل مسلم و مسلمة﴾

इल्म का तलब करना हर मुसलमान मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है।

फिर इसके हासिल करने के लिए उम्र की भी कोई क़ैद नहीं लगाई गई। यह भी नहीं कहा गया कि तुम लड़कपन में इल्म हासिल करो, यह भी नहीं कहा गया गया कि जवानी में इल्म हासिल करो। नहीं बल्कि फ़रमाया ﴿اطلبو العلم من المهد الى اللحد﴾ तुम इल्म हासिल करो पंघोड़े (पालने) से लेर क़ब्र में जाने तक। इससे साबित हुआ कि इंसान पूरी ज़िंदगी तालिबे इल्म बनकर रहे। इसलिए हमने पूरी ज़िंदगी इल्म हासिल करना है और आगे बढ़ना है।

इल्म पर अमल

इल्म और अमल से इंसान को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ दर्जात मिलते हैं। शुरू में क़ुरआन पाक की दो आयतें तिलावत की गयीं। पहली आयत से पता चलता है कि अहले इल्म को दर्जात मिलेंगे और दूसरी आयत से पता चलता है कि अहले अमल को दर्जात मिलेंगे यानी इल्म व अमल ही वे निस्बतें हैं जिनकी वजह से बंदे को दर्जात मिलेंगे। पहली आयत में फ़रमाया कि अल्लाह तआला अहले इल्म को दर्जात अता करेंगे। दूसरी में

फ़रमाया कि लोग जितना अमल करेंगे उतने ही उनके दर्जे बढ़ेंगे। हक़ीक़त में ये दोनों चीज़ें ऐसी हैं जिनसे इंसान के दर्जात बढ़ते हैं और इंसान अल्लाह तआला का मुक़र्रब बनता है। इसलिए हमें इल्म भी हासिल करना है और उस पर अमल भी करना है। इल्म के बग़ैर अमल नहीं हो सकता और अमल के बग़ैर इल्म बेकार है।

दुनिया का सूरज और इल्म का सूरज

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ अहले इल्म की बड़ी शान है इसीलिए हदीस पाक में फ़रमाया गया ﴿العلم نور﴾ इल्म रोशनी है। और यह बात ज़हन में रखिए कि इल्म की रोशनी सूरज की रोशनी से ज़्यादा अफ़ज़ल होती है क्योंकि सूरज तो कुछ हिस्से लिए चमकता है फिर डूब जाता है। सिर्फ़ दिन को रोशनी देता है रात को रोशनी नहीं देता लेकिन इल्म का सूरज दिन को भी चमकता है और रात को भी चमकता है। आपने देखा होगा कि अहले इल्म हज़रात की महफ़िलें रातों को लगी रहती हैं।

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० जिन दिनों तहरीके आज़ादी के लिए कोशिश कर रहे थे उन दिनों आप कभी रात के एक बजे जलसे से फ़ारिग़ होकर वापस दारुलउलूम आते और कभी दो बजे। इसलिए तुलबा ने दारुलउलूम देवबंद दरबान को कहा हुआ था कि जब भी हज़रत तश्रीफ़ लाते हैं तो वुज़ू करके तहज्जुद की नमाज़ मस्जिद में पढ़ते हैं। जैसे ही वुज़ू करके नमाज़ पढ़ें हमें जगा देना। जब हज़रत सलाम फेरते तो हदीस के तुलबा अपनी किताबें लेकर हज़रत के पीछे बैठ चुके होते। रात के दो

बजे दर्से हदीस होता था। उस वक़्त के तुलबा में इल्म हासिल करने का इतना शौक़ था।

किताबों में लिखा है कि हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० के चेहरे पर ऐसा नूर था कि जब हज़रत अव्वाबीन या तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते तो तलबा सुतूनों या दीवारों के पीछे से हज़रत के चेहरे को देखते रहते थे। यूँ अल्लाह तआला उनके चेहरे पर अनवारात की बारिश को बरसाया करता था।

आलिम की आबिद पर फ़ज़ीलत

हदीस पाक में फ़रमाया गया है ﴿فضل العالم على العابد كفضلي على ادناكم﴾ आलिम को आबिद पर ऐसी फ़ज़ीलत हासिल है जो तुम में से किसी आम आदमी पर मुझे हासिल है। यह भी इर्शाद फ़रमाया ﴿مجلس فقيه خير من عبادة ستين سنة﴾ फ़क़ीह की मज्लिस अख़्तियार करना साठ साल की इबादत से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखती है। बाज़ रिवायतों में आया है कि इल्म का एक बाब सीखना हज़ार रकअत नफ़्ल पढ़ने से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है। मसलन तैयम्मुम करने का तरीक़ा सीखना इल्म का एक बाब है। यह सीखने पर भी हज़ार रकअत नफ़्ल पढ़ने से भी ज़्यादा अज्र मिलता है।

जन्नत में भी उलमा की सरदारी

यह बात याद रखें कि दुनिया और आख़िरत में सरदारी अहले इल्म ही की होगी। "कन्ज़ुल उम्माल" की चौथी जिल्द में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से एक रिवायत है कि जब लोग जन्नत

में जाएंगे और उनको जन्नत में मज़ाते उड़ाते हुए बड़ा अरसा गुज़र जाएगा तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त पूछेंगे, ऐ मेरे बंदो! क्या अब भी तुम्हें किसी और चीज़ की ज़रूरत है? वे कहेंगे, ऐ अल्लाह! हर चीज़ तो मौजूद है और हम मज़े की ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, अच्छा! तुम अपने उलमा से पूछो। चुनाँचे जन्नती लोग उलमा की तरफ़ रुजू करेंगे और कहेंगे कि परवरदिगार आलम ने यह फ़रमाया है। अब बताइए। उलमा फ़रमाएंगे, हाँ परवरदिगार ने वादा फ़रमाया था ﴿وَلَدَيْنَا مَزِيْد﴾ कि तुम्हें मज़ीद अता किया जाएगा यानी अपना दीदार और मुशाहिदा नसीब किया जाएगा। अभी तक हमें जन्नत की नेमतें तो मिली हैं लेकिन अल्लाह तआला का दीदार नसीब हुआ? लिहाज़ा उलमा का जवाब सुनकर जन्नती फ़रियाद करेंगे और फिर अल्लाह तआला जन्नतियों को अपना दीदार अता फ़रमाएंगे।

उलमा की नींद भी इबादत है

एक हदीस पाक में फ़रमाया गया है, ﴿نوم العلماء عبادة﴾ कि उलमा की नींद भी इबादत है। यह एक अजीब सी बात लगती है कि नींद भी इबादत है। मगर एक मिसाल से इसको समझना आसान होगा। अगर आप किसी लकड़ी के कारीगर को काम करने के लिए घर लाते हैं। वह कारीगर लकड़ी काटता है और काम शुरू कर देता है। इस दौरान उसकी आरी की धार ख़राब हो जाती है तो वह थोड़ी देर बैठकर आरी को तेज़ कर लेता है। वह जितनी देर अपने औज़ार को ठीक करने में लगा रहा है उतनी देर भी उसकी उजरत में शामिल की जाएगी। दुनिया का कोई बंदा

भी उसकी उजरत नहीं काटता। जिस तरह आज दुनिया किसी मज़दूर को उसके औज़ार सही करने के वक़्त की भी मज़दूरी देती है इसी तरह अहले इल्म जब काम कर रहे होते हैं अल्लाह तआला उनको उस वक़्त भी मज़दूरी देते हैं और जब उनके जिस्म थक जाते हैं और वे आराम करने लगते हैं तो अल्लाह तआला उस आराम के वक़्त को भी मज़दूरी में शामिल फ़रमा लेते हैं। सुब्हानअल्लाह जागने की हालत में उनको अज्र तो मिल रहा होता है, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की कैसी मेहरबानी होती है कि उनको सो जाने पर भी मिल रहा होता है। गोया उनका सोना भी "सोना" बन जाता है। यहाँ सोचने की बात यह है कि उलमा किराम को जब सोने पर अज्र मिल रह होता है तो उनके जागने पर क्या अज्र मिल रहा होगा।

आलिम की शहीद पर फ़ज़ीलत

एक हदीस पाक में आया है कि क़यामत के दिन उलमा की स्याही शहीदों के ख़ून से भी ज़्यादा फ़ज़ीलत पाएगी।

Ink of Scholers is precious than the blood of Morters.

यह बात अजीब नज़र आती है कि उधर तो शहीद का ख़ून है और इधर उलमा की स्याही है। यह बात ज़ाहिर में तो समझना मुश्किल है मगर हक़ीक़त में इसमें बहुत हिकमतें हैं। उलमा फ़रमाते हैं कि आलिम को शहीद से फ़ज़ीलत हासिल है क्योंकि आलिम की मिसाल ऐसे है जैसे बादशाह का बेटा हो और शहीद की मिसाल ऐसी है जैसे बादशाह का फ़ौजी हो। तो यह हर बंदा

जानता है कि शहज़ादे को फ़ौजी पर फ़ज़ीलत होती है। उलमा अंबिया किराम के वारिस हैं और शहीद अंबिया किराम के सिपाही और ख़ादिम हैं जो दीन की हिफ़ाज़त के लिए अपनी जानें क़ुर्बान कर देते हैं साफ़ ज़ाहिर है कि वारिस को ख़ादिम पर फ़ज़ीलत हुआ करती है।

उलमा इसकी दूसरी हिकमत यह बयान करते हैं कि शहीद जब शहीद होता है तो वह अपने ख़ून से ज़मीन को ज़ीनत बख़्श जाता है लेकिन आलिम जब इल्म को फैलाता है तो उसके इल्म से इंसान को ज़ीनत नसीब होती है क्योंकि अगर इंसान को इल्म न मिलता तो वह पक्के जानवर होते बल्कि जानवरों से भी ज़्यादा बदतर होते। गोया शहीद जब शहीद होता है तो वह अपने ख़ून से ज़मीन को ज़ीनत बख़्श जाता है और जब आलिम दुनिया से जाता है तो अपने इल्म की वजह से इंसान को ज़ीनत बख़्श जाता है।

तीसरी हिकमत यह बयान की जाती है कि शहीद जब शहीद होता है तो उससे पहले वह किसी से लड़ रहा होता है। गोया वह लड़ने की वजह से अपने सामने वाले के क़त्ल के दरपे होता है कि काफ़िर को जहन्नम में पहुँचा दूँ लेकिन काफ़िर उन पर एक ऐसा कामयाब वार करता है कि वह शहीद हो जाते हैं। लेकिन आलिम का मामला और है आलिम ख़ुद भी ज़िंदा होता है और जिसको इल्म देता है उसको भी ज़िंदा करने की कोशिश में लगा रहता है। चुनाँचे इर्शाद फ़रमाया ﴿الناس موتی﴾ इंसानों की मिसाल मुर्दों की सी है लेकिन ﴿اهل العلم احياء﴾ अहले इल्म ज़िंदा होते हैं।

आलिम को शहीद पर फ़ज़ीलत हासिल होने की चौथी हिकमत यह भी है कि शहीद जब शहीद होता है तो ख़ुद तो जन्नत में

चला जाता है लेकिन जो उसे शहीद करता है उसके जहन्नम में जाने का सबब बनता है लेकिन आलिम का मामला कुछ और है। जो इल्म पढ़ाता है उस इल्म के सदक़े वह ख़ुद भी जन्नत में जाएगा और जिस शागिर्द को वह इल्म पढ़ाता है वह उसको भी अपने साथ जन्नत में ले जाएगा।

एक हदीस पाक में आया है कि रोज़े मह्शर एक आलिम और शहीद पुलसिरात के ऊपर से गुज़रने लगेंगे। उस दौरान शहीद से कहा जाएगा कि ﴿ادخلوا الجنة﴾ कि जन्नत में दाख़िल हो जा, तेरा घर तेरा इंतिज़ार कर रहा है लेकिन जब आलिम गुज़रने लगेगा तो उससे कहा जाएगा ﴿قف ههنا واشفع لمن شئت﴾ तू इधर खड़ा हो जा, तू शफ़ाअत कर जिसकी तू चाहता है। हदीस पाक के अल्फ़ाज़ हैं ﴿فقام مقام الانبياء﴾ वह उस वक़्त अंबिया किराम के मुक़ाम पर खड़ा होगा। जिस तरह अंबिया किराम ने अल्लाह तआला के बंदों की शफ़ाअत की होगी, आलिम बाअमल भी इसी तरह अल्लाह तआला के बंदों की शफ़ाअत करेगा।

इल्मी सवाल की फ़ज़ीलत

अगर साइल ने मजबूर होकर रोटी का सवाल किया और घर में औरत ने कोई रोटी बनाई हुई थी। उसने अपनी नौकरानी या किसी बच्चे को रोटी दी कि जाकर इसको साइल को दे दो तो हदीस पाक में आया है कि वह रोटी सदक़ा करने पर अल्लाह तआला तीन बंदों की मग़फ़िरत फ़रमा देते हैं। सबसे पहले वह आदमी जिसने मेहनत की थी और उसके पैसे से आटा आया था। दूसरी वह औरत जिसने उस आटे से रोटी बनाई थी और तीसरी

वह औरत या कोई बच्चा जिसने वह रोटी मांगने वाले तक पहुँचाई। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत भी कितनी बड़ी है कि जिसने अज्र व सवाब में हमारे ख़ादिमों को भी शामिल फ़रमा दिया।

एक सवाली इल्म का सवाल पूछने वाला भी होता है। हदीस मुबारक में आया है कि ﴿شفاء العي السؤال﴾ कि जहालत एक बीमारी है और उसकी शिफ़ा सवाल पूछने में है। एक और रिवायत में है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿حسن السوال نصف العلم﴾ अच्छा सवाल पूछना आधा इल्म है। और क़ुरआन मजीद में हुक्म दिया गया है :

﴿فَسْئَلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۝ (سورۃ النحل:۴۳)﴾

अगर तुम नहीं जानते तो अहले इल्म से पूछो।

मालूम हुआ कि शरिअत में इल्म का सवाल पूछना अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ एक पसन्दीदा अमल है। अलबत्ता सवाल बराए सवाल नहीं होना चाहिए। कई दफ़ा लोग दूसरों को तंग करने के लिए और नीचा दिखाने के लिए सवाल करते हैं। ऐसे सवालों से मना किया गया है। क़ुरआन मजीद में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का इर्शाद है :

﴿لَا تَسْئَلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ (سورۃ المائدہ:۱۰۱)﴾

लिहाज़ा हर बात का सवाल नहीं कर देना चाहिए बल्कि वह सवाल पूछना चाहिए जो मैयारी और मुस्बत (पोज़िटिव) हो और इल्म हासिल करने की नीयत से हो।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे ﴿العلم خزائن

﴿فسئلوا يرحمكم الله فانه يوجر فيه اربعة﴾ तुम सवाल पूछा करो, अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए। इसलिए कि इल्म का सवाल पूछने पर चार क़िस्म के बंदों की मग़फ़िरत हुआ करती है, ﴿السائل والمعلم والسامع والمحب لهم﴾ पहला वह बंदा जो सवाल पूछने वाला होता है। दूसरा शख़्स जो सवाल का जवाब दे रहा होता है, तीसरा वह आदमी जो पास बैठा हो और उन दोनों के सवाल व जवाब को सुन रहा हो और चौथे वे लोग जो इस सवाल करने वाले और बताने वाले से मुहब्बत करने वाले और उनकी मदद करने वाले अपने घरों में बैठे होते हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त मुहब्बत के सदक़े उनकी भी मग़फ़िर्त फ़रमा देते हैं।

यहाँ क़ाबिल ग़ौर बात यह है कि रोटी का सवाल करने पर तीन बंदों की मग़फ़िरत का और इल्म का सवाल करने पर चार बंदों की मग़फ़िरत का वादा किया गया है। यहाँ रोटी के सवाल के लिए मग़फ़िरत का वादा नहीं किया गया क्योंकि उसने रोटी की ज़रूरत बयान की थी इसलिए उसे रोटी की सूरत में सवाल का ग़दला मिल गया लेकिन इल्म का सवाल करने की शान ही कुछ और है कि सबसे पहले यहाँ सवाल करने वाले की मग़फ़िरत का वादा किया गया है। दूसरा वादा बताने वाला से किया गया है, तीसरा वह आदमी जो इस महफ़िल में उनके पास बैठा हो गोया जमाअत में से सवाल तो एक तालिब इल्म पूछता है लेकिन जो तुलबा पास बैठकर जवाब सुनते हैं अल्लाह तआला उनको भी अज्र में शामिल फ़रमा लेते हैं। यही नहीं कि अब ये सुनने वाले ही अज्र में शामिल हैं बल्कि इस जमाअत का ज़रिया बनने वाले वे मददगार और अहले ख़ैर हज़रात जो उनके खाने पीने और पीने

और पढ़ने पढ़ाने का इंतिज़ाम करते हैं अल्लाह तआला उनसे मुहब्बत रखने के सबब उनकी भी मग़फ़िरत फ़रमा देते हैं।

इल्म हासिल करने के लिए मुजाहिदा ज़रूरी है

हमें चाहिए कि हम इल्म हासिल करने में तन-मन-धन की बाज़ी लगा दें। याद रखिए कि सच्चा पक्का तालिब इल्म वह होता है जो मदरसे को अपना वतन समझे और किताब के काग़ज़ को अपना कफ़न समझे। दिन रात उसकी फ़िक्र यह हो कि मैं कम वक़्त में ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा कैसे हासिल कर सकता हूँ।

अकाबिर (बड़ों) की इल्मी धुन

इमाम शाफ़ई का इल्मी शग़फ़

इमाम मुहम्मद रह० इमाम शाफ़ई रह० के उस्ताद बने हैं। इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते हैं कि मुझे इमाम मुहम्मद रह० के पास एक रात गुज़ारने का मौक़ा मिला। फ़रमाते हैं कि उन्होंने ईशा के बाद चिराग़ के सामने किताब खोली और उसमें से कुछ पढ़ा। फिर चिराग़ बुझा दिया और लेट गए। थोड़ी देर के बाद उठे, चिराग़ जलाया फिर किताब देखी और फिर लेट गए, फिर थोड़ी देर के बाद उठे, चिराग़ जलाया किताब देखी फिर लेट गए। फ़रमाते हैं कि मैं सारी रात जागा और मैंने गिना कि उन्होंने एक रात में सत्रह बार उठकर चिराग़ जलाया। सत्रह बार का मतलब? अगर आठ घंटे की रात हो तो हर आध घंटे बाद चिराग़ जलाया, अब सोचिए कि वह सोए कहाँ? दरअसल वह चिराग़ बुझाते

इसलिए थे कि फ़ालतू तेल न जले और फ़ुज़ूलख़र्ची न हो जाए। फिर जब वह लेटते थे तो नींद नहीं होती थी बल्कि ग़ौर व ख़ौस और तदब्बुर और फ़िक्र किया करते थे। फ़रमाते हैं कि जब सुबह उठे तो मैंने अर्ज़ किया, हज़रत! आप रात को सत्रह बार उठे थे, आप कितना सोए? तो इमाम मुहम्मद रह० ने जवाब दिया कि मैं रात को सोया नहीं बल्कि मैंने एक हज़ार मसाइल के जवाब तलाश कर लिए, अल्लाहु अकबर।

इल्म हासिल करने का शौक़ इस तरह होना चाहिए कि इंसान को नींद से ज़्यादा इल्म हासिल करने में मज़ा आए। इंसान मुताला करे तो डूब जाए।

इमाम मुस्लिम रह० का मुताले में ध्यान

इमाम मुस्लिम रह० का मशहूर वाक़िआ है कि एक बार वह कोई हदीस पाक तलाश कर रहे थे। उस वक़्त उन्हें भूख लगी हुई थी, साथ ही खजूरों की एक थैली पड़ी हुई थी। लिहाज़ा उन्होंने एक खजूर मुँह में डाल ली और किताब का मुताला करने में लग गए। उस वक़्त मुताले में इस क़द्र ध्यान की कैफ़ियत थी कि पता ही न रहा कि मैं कितनी खजूरें खा चुका हूँ। जब खाते खाते ज़्यादा खा लीं तो उसकी वजह से बीमार हो गए और आख़िर अल्लाह तआला के हुज़ूर पहुँच गए। उनको इल्म में इतनी लगन नसीब हुई थी कि उन्हें आसपास की ख़बर ही नहीं होती थी।

हज़रत शाह अब्दुलअज़ीज़ रह० की इल्मी धुन

शाह वलिउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० की उम्र का आख़िरी

ज़माना था। एक बार उनके बेटे शाह अब्दुलअज़ीज़ साहब रह० ने दर्स क़ुरआन के दौरान पानी मांगा। एक तालिब इल्म भागकर उनके घर गया और कहा कि शाह साहब ने पानी मांगा है। जब शाह वलिउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० ने सुना तो उन्होंने ठंडी सांस ली और कहने लगे, अफ़सोस! मेरे ख़ानदान से इल्म का नूर उठा लिया गया। बीवी ने कहा जी आप इतनी जल्दी फ़ैसला न करें, मैं अभी सूरतेहाल मालूम कर लेती हूँ। लिहाज़ा उन्होंने गिलास में पानी डाला और उसमें सिरका मिला दिया। सिरका कढ़वा होता है और पीने में अजीब ज़ाएक़ा मालूम होता है। वह तालिब इल्म जब सिरका मिला हुआ पानी ले गया तो शाह अब्दुलअज़ीज़ साहब रह० ने वह पानी लेकर पी लिया और दर्स क़ुरआन देते रहे। जब दर्से क़ुरआन से फ़ारिग़ होकर घर आए तो वालिदा ने पूछा, बेटा! तुमने पानी पी लिया था? अर्ज़ किया, जी हाँ पी लिया था। वालिदा ने पूछा, वह पानी कैसा था? अर्ज़ किया, अम्मी मुझे यह तो पता नहीं वह कैसा था? अब उन्होंने शाह वलिउल्लाह रह० से अर्ज़ किया देखिए कि अब्दुलअज़ीज़ को पानी की इतनी शदीद प्यास थी कि पानी में सिरके का पता नहीं चला। इससे मालूम हुआ कि उन्होंने बेअदबी की वजह से पानी नहीं पिया बल्कि अपनी ज़रूरत की वजह से पिया जो ऐन जाएज़ था वरना तो दर्स भी न दे पाते। इसलिए हमारे ख़ानदान से अभी अदब रुख़्सत नहीं हुआ। यह सुनकर शाह वलिउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने इत्मिनान का सांस लिया और दुआ की, ऐ अल्लाह! मेरे ख़ानदान में इल्म व अदब को हमेशा बाक़ी रखना।

आज के तुलबा की हालत

आज जब हमारे तलबा मुताला करते हैं तो उनकी क्या हालत होती है? उनकी हालत यह होती है कि किताब उनके सामने होती है और दिल व दिमाग़ कहीं और होते हैं। बक़ौल शायर—

किताब खोल के बैठूं तो आँख रोती है
वर्क़ वर्क़ तेरा चेहरा दिखाई देता है

उनको किताबों के वर्क़ में भी किसी का चेहरा नज़र आता है जैसे कोई आदमी रास्ता चलते हुए दूसरों को सलाम करता है इसी तरह तुलबा मुताले के दौरान किताब के अलफ़ाज़ को सलाम करते हुए गुज़रते हैं और कहते हैं कि मुताला हो गया। अगर हम इस तरह मुताला करेंगे तो हमें फिर इल्म का कितना नूर मिलेगा? हालाँकि मक़सद यह होता है कि इन किताबों से इल्म हासिल किया जाए और फिर उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी जाए।

अज़ीज़ तुलबा! यकसूई के साथ इल्म हासिल कीजिए। जब जमाअत में बैठें तो पूरे ध्यान से बात सुनें। क्लास में उस्ताद पढ़ा रहे होते हैं और वे खुली आँख सोए हुए होते हैं। यह भी एक नई चीज़ है कि आँखें खुली होती है और दिमाग़ सोया हुआ होता है। यह आजकल के ज़माने के तुलबा की नई तहक़ीक़ है। वे उस्ताद को बिल्कुल पता चलने नहीं देते कि वे सो रहे हैं या नहीं। लेकिन वक़्त चला जाता है। अज़ीज़ तुलबा! यह हक़ीक़त में नफ़्स और शैतान हैं जो हमें इल्म से महरूम करना चाहते हैं। वक़्त की क़द्र करें। याद रखें कि ज़िंदगा का यह वक़्त जो आपको मिला हुआ है यह ज़िंदगी में दोबारा आपको कभी नहीं मिलेगा।

वहदत मतलब

जब इस तरह डूबकर किताब पढ़ेंगे तो फिर उलूम व मारिफ़ के मोती सामने आएंगे और इंसान को सही मानों में इल्म का नूर मिलेगा। इसलिए हमें चाहिए कि हम शौक़ व ज़ौक़ के साथ इल्म हासिल करें। हमें सुबह शाम यही फ़िक्र हो। इधर-उधर के ख़्यालात को ज़हन में हर्गिज़ न लाएं। इसको कहते हैं "वहदत मतलब" यानी कि इंसान को हर वक़्त अपने मक़सद की फ़िक्र लगी हुई हो और यही चीज़ उसकी नज़र के सामने हो कि मैंने तो इल्म हासिल करना है।

हज़रत शाह अब्दुलक़ादिर रायपुरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने हालाते ज़िंदगी के बारे में लिखा है कि पढ़ने के ज़माने में जब साल के दौरान मेरे अज़ीज़ व अक़ारिब के ख़त आते थे तो मैं डर के मारे वे ख़त ही नहीं पढ़ता था बल्कि उनको मटके में रख देता था। सोचता था कि अगर कोई ख़ुशी की ख़बर होगी तो घर जाने को दिल करेगा और अगर कोई ग़म की ख़बर होगी तो पढ़ाई में दिल नहीं लगेगा। जिसकी वजह से इल्म से महरूम हो जाऊँगा। मैं वह ख़त जमा करता रहता था और साल के आख़िर में शाबान के शुरू में अपने दारुलउलूम का इम्तिहान देकर फ़ारिग़ हो जाता तो फ़ारिग़ होने वाले दिन सारे ख़तों को निकालता, उन्हें पढ़ता और उनकी फ़हरिस्त बनाता। ख़ुशी के ख़तों की अलग फ़हरिस्त बनाता और ग़मी के ख़तों की अलग फ़हरिस्त बनाता फिर मैं अपने गाँव आता, ख़ुशी की ख़बर वालों को मैं मुबारकबाद देता और जिनका ग़म मिला होता था उनके सामने तसल्ली व तशफ़्फ़ी

के कुछ अल्फ़ाज़ कह देता था। इस तरह लोग मुझ से ख़ुश हो जाते कि इसने सारा साल हमारी बात याद रखी लेकिन उनको क्या पता था कि उनका ख़त ही इस वक़्त पढ़ा होता था। तो जिन हज़रात ने दुनिया में अज़्मतें पायीं, उन्होंने इल्म हासिल करने में ऐसी यकसूई दिखाई मगर आज के तालिब इल्म को किताब के अलावा बाहरी बातें सुनने का ज़्यादा शौक़ है। जब तकरार करने बैठते हैं तो दो बातें सबक़ की और तीन बातें बाहर की करते हैं। यहाँ तक कि किताब पढ़ते हुए मुल्कों के फ़ैसले हो रहे होते हैं। इसकी असल वजह यह है कि शैतान उनको इल्म से महरूम करना चाहता है इसलिए बातों में लगा देता है।

उस्तादों की क़द्र

जिन उस्तादों से आप अब उलूम पा रहे हैं मालूम नहीं कि ये उस्ताद बाद में आपको कभी मिलेंगे भी या नहीं। इस नेमत की क़द्र उनसे पूछें जिनके उस्ताद रुख़्सत हो चुके हैं और अब उनको अपना आप बेसाया नज़र आता है।

हज़रत शैख़ुलहिंद रहमतुल्लाहि अलैहि ने तहरीक रेश्मी रुमाल के दौरान इरादा फ़रमा लिया कि अब मैं हरमैन शरीफ़ैन (मक्का व मदीना शरीफ़) चला जाता हूँ। एक दिन आप दारुलउलूम देवबंद में चारपाई पर बैठ धूप में ज़मीन पर पाँव रखे किताब का मुताला कर रहे थे। उन दिनों मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रहमतुल्लाहि अलैहि हज़रत की ग़ैर मौजूदगी में बुख़ारी शरीफ़ पढ़ाते थे। इस दौरान उनकी नज़र हज़रत पर पड़ी। जब दर्स देकर थक गए तो तुलबा से फ़रमाया कि आप थोड़ी देर बैठें, मैं अभी आता हूँ।

उन्होंने दर्स रोका और दारुलहदीस से बाहर निकलकर सीधे हज़रत के पास आकर उनके क़दमों में बैठ गए। उसके बाद हज़रत से अर्ज़ करने लगे हज़रत! पहले आप यहाँ थे, जब हमें ज़रूरत पड़ती थी तो हम आपकी तरफ़ रुजू करते थे। आपने यहाँ से हिजरत का इरादा फ़रमा लिया है। इस तरह तो हम बेसाया हो जाएंगे। अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने यह अलफ़ाज़ कहे और रोना शुरू कर दिया यहाँ तक कि उन्होंने बच्चों की तरह बिलकना शुरू कर दिया। हज़रत शैख़ुलहिंद रहमतुल्लाहि अलैहि ने भी उन्हें रोने दिया। जब उनके दिल की भड़ास निकल गई तो उस वक़्त हज़रत शैखुलहिंद रहमतुल्लाहि अलैहि ने उनको तसल्ली की बात कही और फ़रमाया, अनवर शाह! हम थे तो आप हमारी तरफ़ रुजु करते थे और जब हम चले जाएंगे तो फिर लोग इल्म हासिल करने के लिए तुम्हारी तरफ़ रुजू किया करेंगे। चुनाँचे शाह साहब को इस तरह तसल्ली की बातें करके वापस भेज दिया। जब शाह साहब चले गए तो हज़रत शैखुलहिंद रहमतुल्लाहि अलैहि के अपने दिल में ख़्याल आया कि इनको तो अपने उस्ताद की दुआओं की इतनी क़द्र है और आज मैं इतने बड़े काम के लिए जा रहा हूँ लेकिन आज मेरे सर पर तो उस्ताद का साया नहीं है जिनकी दुआ लेकर चलता। चुनाँचे यह सोचते ही उनको हज़रत नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि का ख़्याल आया और तबियत में रिक़्क़त तारी हो गई। लिहाज़ा वहाँ से उठे और सीधे हज़रत नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि के घर गए, दरवाज़े पर दस्तक दी और डेयाढ़ी में खड़े होकर आवाज़ दी, अम्मा जी! मैं महमूद हसन हूँ अगर हज़रत नानौतवी रहमतुल्लाहि

अलैहि के जूते घर में पड़े हों तो वह भिजवा दें चुनाँचे अम्मा जी ने उनके जूते उनके पास भेज दिए। हज़रत शैख़ुलहिंद रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने उस्ताद के जूते अपने सर पर रखे और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआ की, ऐ अल्लाह! आज मेरे उस्ताद मेरे सर पर नहीं हैं। मैं उनके जूते सर पर रखकर बैठा हूँ, ऐ अल्लाह इस निस्बत की वजह से तू मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा लेना और मुझे अपने मक़सद में कामयाब फ़रमा देना तो उस्तादों की क़द्र उस वक़्त आती है जब देखने के लिए सिर्फ़ उनके जूते बाक़ी रह जाते हैं।

सच्चे तालिब बनें

अल्लाह तआला ने आपको यह मौक़ा दिया हुआ है कि अपने उस्तादों के सामने बैठकर इल्म हासिल कर रहे होते हैं लेकिन उस्ताद के सामने बैठकर इल्म हासिल करने के लिए क़ुरआन पाक ने एक उसूल बता दिया है। फ़रमाया ﴿اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰی لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ﴾ इस क़ुरआन की बातों में उनके लिए नसीहत है जिनके अंदर दिल हो। कभी-कभी सीने में दिल के बजाए सिल होती है जिस पर नसीहत की बातों का बिल्कुल असर नहीं होता। आगे फ़रमाया, ﴿اَلْقَی السَّمْعَ وَهُوَ شَهِیْدٌ (ق:۳۷)﴾ हमातन गोश हो और हाज़िर बाश हो। लिहाज़ा अगर आप अपने उस्तादों के सामने इन बातों का ख़्याल रखेंगे तो अल्लाह तआला आपको इल्म के नूर से मुनव्वर फ़रमा देंगे।

एक आलिम और आम आदमी की तोबा में फ़र्क़

हज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह

तआला एक आलिम की तोबा पर उसके चालीस गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं जबकि आम आदमी के इसी तरह तोबा करने पर सिर्फ़ एक गुनाह माफ़ करते हैं। मुहद्दिसीन रहमतुल्लाहि अलैहिम ने इसकी हिकमत लिखी है। वे फ़रमाते हैं कि आम आदमी की मिसाल सिपाही की है और आलिम की मिसाल जर्नल की है। एक सिपाही बीमार होता है और एक जर्नल बीमार होता है तो किसका सेहतमंद होना ज़्यादा ज़रूरी है। साफ़ ज़ाहिर है कि जर्नल का क्योंकि उसने पूरे लश्कर को लड़ाना होता है और जर्नल के बग़ैर लश्कर बेकार होता है। जिस तरह जर्नल बदनी तौर पर बीमार हो जाए तो उसका सेहतमंद होना पहले ज़रूरी होता है बिल्कुल इसी तरह जिस वक़्त अल्लाह का गिरोह दीन का काम रहा होता है तो उसमें जर्नल (आलिम) का सेहतमंद होना ज़्यादा अहम होता है। जैसे ख़ैबर के मौक़े पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की आँखें दुखती थीं तो महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लुआबे मुबारक लगाया और अल्लाह तआला ने शिफ़ा अता फ़रमा दी। फ़िर उनके हाथ में झंडा देकर भेजा और अल्लाह तआला ने फ़तेह अता फ़रमा दी। लिहाज़ा जब आम आदमी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने इस्तिग़फ़ार करता है तो अल्लाह तआला उसके एक गुनाह को माफ़ करते हैं जबकि इतना ही इस्तिग़फ़ार करने पर अल्लाह तआला एक आलिम के चालीस गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं।

अल्लाह के लाडले

यह आपकी ख़ुशनसीबी है कि अल्लाह तआला ने आपको

क़ुरआन व सुन्नत का इल्म हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी। आप हज़रात अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यक़ीनन पसन्दीदा बंदे हैं। अल्लाह तआला क़ुरआन पाक में फ़रमाते हैं :

﴿ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا. (سورة فاطر:٣٢)﴾

फिर हमने किताब का वारिस बना दिया अपने बंदों में से उनको जो हमारे चुने हुए बंदे थे या दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कहें कि जो हमारे लाडले थे।

याद रखें कि आप पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत की नज़र है। अल्लाह तआला आपको देने का इरादा कर चुके हैं और अब लेना आपका काम है। तलब जितनी ज़्यादा होगी उतनी बड़ी झोली फैली होगी और जो जितनी बड़ी झोली फैलाएगा अल्लाह तआला उसको उतना ही अता फ़रमाएंगे। वह देने वाला बड़ा करीम है। आपकी तलब बर्तन की मानिन्द है। अगर इल्म की आम सी तलब है तो फिर उतना ही बर्तन भरा जाएगा और अगर इल्म की तलब दिल में उतर चुकी है और हर वक़्त इसी की फ़िक्र रहती है तो फिर बर्तन भी बड़ा होगा। अल्लाह तआला तलब के बर्तन को भर देंगे और इल्म के नूर से मालामाल फ़रमा देंगे।

इल्म को अमल के सांचे में ढालें

पहली बात तो यह है कि आपने इल्म हासिल करना है इसमें भी दर्जात मिलते हैं लेकिन एक आयत और पढ़ी थी जिसका ताल्लुक़ अमल के साथ था। इस इल्म को अमल के सांचे में ढाल लेना है यानी जो पढ़ना है साथ ही उस पर अमल करना है अगर

इल्म पर अमल करते रहेंगे तो फिर इल्म हमेशा के लिए आपके सीने में जगह पा लेगा। याद रखना इल्म अमल का दरवाज़ा खटखटाता है अगर खुल जाए तो बाक़ी रहता है वरना हमेशा के लिए रुख़्सत हो जाता है।

बड़ों का इल्म पर अमल

हमारे अकाबिरीन उलमाए देवबंद इल्म के आफ़ताब व महताब थे लेकिन उन्होंने जो कुछ इल्म हासिल किया उसके एक-एक हिस्से को अपने ऊपर लागू करके दिखा दिया। वे सुन्नते नबवी का चलता फिरता नमूना थे। उनका सुन्नत पर अमल और शरिअत पर इस्तिक़ामत के अजीब व ग़रीब वाक़िआत किताबों में लिखे हुए हैं।

- 1857 ई० अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जंगे आज़ादी नाकाम हो गई तो अंग्रेज़ों ने उलमाए किराम की पकड़-धकड़ का सिलसिला शुरू किया। इसी सिलसिले में हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० की गिरफ़्तारी के वारन्ट भी जारी हो गए। अहबाब ने आपस में मश्वरा करके हज़रत को एक घर में छिपा दिया। हज़रत तीन दिन तो रुपोश रहे लेकिन तीन दिन बाद ज़बरदस्ती वहाँ से निकल आए। अहबाब ने बहुत ज़ोर लगाया कि अभी हालात सही नहीं हैं बाहर आना आपके लिए ख़तरनाक है लेकिन आपने फ़रमाया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी ज़िंदगी में तीन दिन ही ग़ारे सौर में छिपे थे। लिहाज़ा मैं चाहता हूँ कि मुझे भी इस सुन्नत पर अमल करने की सआदत हासिल हो जाए, सुब्हानअल्लाह।

- हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० के सुन्नत पर अमल के वाक़िआत बेशुमार हैं। ख़ासतौर से उनकी आख़िरी रात में तहज्जुद की कैफ़ियत बहुत अजीब होती थी। तजज्जुद में आमतौर पर दो पारे तिलावत करते थे और पढ़ने के दौरान इस क़द्र ख़ुशू और इतना गिरया तारी होता कि सीने से खौलते साँसों की आवाज़ें सुनाई देती थीं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में हदीस में यही लिखा है कि आप नमाज़ ऐसी पढ़ते थे कि अंदर से रोने की वजह से हांडी के जोश मारने की आवाज़ सुनाई देती थी। लिहाज़ा आपकी नमाज़ में उसी सुन्नत की इत्तिबा मिलती है। नमाज़ के बाद आप इस्तिग़फ़ार पढ़ते और दुआ मांगते तो रोते और इस तरह सिसकियाँ और हिचकियाँ लेते कि कोई बच्चा पिट रहा हो।

- हज़रत मौलाना ख़लील अहमद सहारनपूरी रह० के हालाते ज़िन्दगी के बारे में लिखा कि है कि एक बार आप हज के लिए तशरीफ़ ले गए। उस ज़माने में अरब में सफ़र आमतौर से ऊँटों पर होता था। सफ़र की रहनुमाई और इन्तिज़ाम के सिलसिले में जैसे आजकल मुअल्लिम होते हैं उस ज़माने में उनको मुतव्वफ़ कहते थे। आपने अपने मुतव्वफ़ से पहले ही तय कर लिया कि हमने हज को सुन्नत के मुताबिक़ अदा करना है। लिहाज़ा तुम कोई ऐसी तर्तीब न बनाना जो सुन्नत के मुताबिक़ न हो।

  मिना में क़याम के दौरान सुबह सादिक़ से पहले ही मुतव्वफ़ आया और शोर मचा दिया कि तैयार हो जाओ, अरफ़ात के

लिए अभी निकलना है। ऊँट वालों ने भी जल्दी जल्दी की रट शुरू कर दी। हज़रत सहारनपूरी रह० दो ख़ेमों के बीच तहज्जुद की नमाज़ में मसरूफ़ क़ुरान पाक पढ़ने में मशग़ूल थे। क्या मजाल है कि उनकी मामूल में ज़र्रा बराबर भी कोई फ़र्क़ पड़ा हो। तवील क़याम और तादील अरकान के साथ तसल्ली से अपनी नमाज़ पूरी की। सलाम फेरने के बाद मुतव्वफ़ की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और ग़ुस्से से फ़रमाया कि तुमने वादा कर रखा था कि सुन्नत के ख़िलाफ़ किसी काम के लिए न कहोगे फिर सूरज निकलने से पहले चलने के लिए कहने का तुम्हें कोई हक़ नहीं। कहने लगा कि क्या करूं ऊँट वाले नहीं मानते और ये ऊँट लेकर चल दिए तो हज फ़ौत हो जाएगा। लिहाज़ा सुन्नत की ख़ातिर फ़र्ज़ को ख़तरे में डालना तो कोई अच्छी बात नहीं है। इस पर हज़रत का ग़ुस्सा और तेज़ हो गया। फ़रमाया हमने तुम्हें मुतव्वफ़ माना है कोई उस्ताद और पीर तो नहीं बना लिया। जाओ अपना काम करो हम तो सूरज निकलने से एक मिनट पहले नहीं उठेंगे। हम अपना माल और वक़्त ख़र्च करके इतनी मुश्किलों भरा सफ़र करके आते हैं ताकि सुन्नत के मुताबिक़ हज अदा करें तुम्हारे जमालों (ऊँट वालों) के ग़ुलाम बनने नहीं आते। ऊँट वालें को अपने ऊँटों पर इख़्तियार है। वे उनको ले जाएं, हमारे ऊपर उनको कोई इख़्तियार नहीं कि उठने पर मजबूर करें। तुमने बेवक़्त शोर मचाकर हमें परेशान किया और नमाज़ भी सही तरीक़े से पढ़ने नहीं दी। लिहाज़ा हम तुम्हें भी आज़ाद करते हैं तुम अपने दूसरे हाजियों को ले जाओ और

हमें हमारे हाल पर छोड़ दो हम कोई लूले लुन्जे नहीं। अरफ़ात कोई इतनी दूर नहीं है। हम पैदल ही इन्शाअल्लाह सफ़र कर लेंगे लेकिन सुन्नत को नहीं छोड़ेंगे।

तो यह हमारे अकाबिर उलमा देवबंद की शान थी कि किसी हाल में भी सुन्नत को हाथ से जाने न देते थे। जब दिल में यह जज़्बा होगा कि हमने जो इल्म हासिल करना है उस पर अमल करना है और अपनी ज़िंदगी में सुन्नतों पर अमल करना है तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इल्म का नूर आपके सीने में हमेशा के लिए अता फ़रमा देंगे। लेकिन याद रखें कि अमल करें तो अल्लाह तआला की रज़ा के लिए करें, दुनिया की शोहरत के लिए न करें। रब्बेकरीम अपनी रज़ा के लिए हमें नेक आमाल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

एक छोटी बच्ची की नसीहत

यह बात याद रखें कि उलमा के लिए एहतियात की ज़िंदगी गुज़ारना ज़्यादा अहम है। हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाया करते थे कि एक बार एक छोटी बच्ची ने नसीहत की जो मैं कभी नहीं भूल सकता। किसी ने पूछा कि हज़रत! वह कौनसी नसीहत है? उन्होंने फ़रमाया कि एक बार बारिश का मौसम था। मैं नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद जा रहा था। रास्ते में फिसलन थी। सामने से एक छोटी सी बच्ची आ रही थी। गुज़रते हुए मैंने उस बच्ची से कहा ज़रा एहतियात करना कि कहीं फिसल न जाना। उसने आगे से जवाब दिया, हज़रत! मैं एहतियात करूंगी ही सही मगर आप भी एहतियात कर लेना क्योंकि अगर मैं फिसली तो मेरी ज़ात को

नुक़सान होगा और अगर आप फिसल गए तो फिर उम्मत का क्या बनेगा? हमारे लिए भी यह बात एक नसीहत की है। आप हज़रात इस्तिक़ामत के साथ शरिअत व सुन्नत पर अमल करें। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इस इल्म व अमल के सदक़े दुनिया और आख़िरत में आपको इज़्ज़त अता फ़रमाएंगे।

परवरदिगार आलम आप सब हज़रात का यहाँ आना और इल्म के लिए कोशिश करना क़ुबूल फ़रमा ले और हम सबको अल्लाह तआला अपने पसन्दीदा बंदों में शामिल फ़रमा ले, आमीन सुम्मा आमीन।

❋ ❋ ❋

ईमान की अज़मत

कलिमा पढ़ने से काम मुकम्मल नहीं हो जाता बल्कि काम की इब्तिदा होती है। इंसान कलिमा पढ़कर इस्लाम की हदों में तो दाख़िल हो जाता है लेकिन ईमान कामिल पैदा करने के लिए आमाले सालेहा को अख़्तियार करना ज़रूरी है। इसको कहते हैं ﴿اقرار باللسان وتصديق بالقلب﴾ यानी ज़बान से इक़रार और दिल से तस्दीक़ करना और ईमान लाने के बाद इंसान को इन्हीं दो बातों की तलक़ीन की जाती है। ज़बान से इक़रार बिल्लिसान का दर्जा तो इंसान को कलिमा पढ़ते ही नसीब हो जाता है लेकिन तस्दीक़ बिलक़ल्ब में मर्तबे हैं जो जितने नेक आमाल करता है वह इस बात की उतनी तस्दीक़ करता है।

ईमान की अज़मत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

يَـآاَيُّهَـاالَّـذِيْـنَ اٰمَنُوْا اٰمِنُوْابِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ o سُبْـحٰـنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا

يَـصِفُوْنَ o وَسَـلٰـمٌعَـلَـى الْـمُرْسَلِيْنَo وَالْـحَـمْـدُ لِـلّٰـهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ o

ईमान वालों को ईमान लाने का हुक्म

﴿يـآاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا﴾ ऐ ईमान वालो! ﴿اٰمِـنُـوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ﴾ अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाओ। यह एक अजीब आयत है। क्योंकि ख़िताब भी ईमान वालों को है यह तो नहीं कहा ﴿يـاايهـا الـذين كفروا﴾ एक काफ़िरो! यह भी नहीं कहा, ﴿يـاايهـا نـافقوا﴾ ऐ मुनाफ़िक़ो! यह भी नहीं कहा ﴿يـاايهـا الذين اشـركوا﴾ ऐ मुश्रिको! बल्कि फ़रमा रहे हैं ﴿يـآاَيُّهَـا الَّـذِيْـنَ اٰمَنُوْا﴾ ऐ ईमान वालो! ﴿اٰمِـنُـوْا بِـالـلّٰـهِ وَرَسُـوْلِـهٖ﴾ अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान ले आओ। दूसरी दफ़ा ईमान लाने का क्या मतलब है? मुफ़स्सिरीन ने इसकी तफ़्सीर लिखी है। इसका मतलब है ﴿اتـقـوا﴾ यानी तुम तक़्वा अख़्तियार करो। एक दूसरा मतलब यह है कि ऐ ज़बान से इक़रार करने वालो! अपने दिल से भी इसकी तसदीक़ कर लो।

ज़बानी इक़रार और तस्दीक़े क़ल्बी

दिल से तस्दीक़ करना एक बड़ा काम है–

तू अरब है या अजम है तेरा ला इलाहा इल्ला
लुग़त ग़रीब जब तक तेरा दिल न दे गवाही

कलिमा पढ़ने से काम मुकम्मल नहीं हो जाता बल्कि काम की इब्तिदा होती है। इंसान कलिमा पढ़कर इस्लाम की हदों में तो दाख़िल हो जाता है लेकिन ईमान कामिल पैदा करने के लिए आमाले सालेहा को अख़्तियार करना ज़रूरी है। इसको कहते हैं ﴿اقرار باللسان وتصديق بالقلب﴾ (यानी ज़बान से इक़रार और दिल से तस्दीक़ करना) और ईमान लाने के बाद इंसान को इन्हीं दो बातों की तलक़ीन की जाती है। ज़बान से इक़रार बिल्लिसान का दर्जा तो इंसान को कलिमा पढ़ते ही नसीब हो जाता है। कलिमा पढ़ने वाले जितने भी हैं सबके सब ज़बान से इक़रार करने में सौ फ़ीसद शामिल हैं लेकिन तस्दीक़ बिलक़ल्ब में मर्तबे हैं जो जितने नेक आमाल करता है वह इस बात की उतनी तस्दीक़ करता है। लिहाज़ा जो कामिल मोमिन होगा वह आमाल के ज़रिए इसकी सौ फ़ीसद तस्दीक़ करेगा। उसका कोई अमल भी शरिअत के ख़िलाफ़ न होगा।

किरदार के ग़ाज़ी बनने की ज़रूरत

क़ौल व फ़ेअल (करने में) दोनों फ़र्क़ होता है। क़ौल से फ़ेअल तक बात पहुँचाने के लिए कुछ करके दिखाना पड़ता है। ज़बान से बात कह देना और चीज़ है और अमल से उसको साबित कर देना

और चीज़ है। आज यही चीज़ तो ज़्यादा तवज्जोह के लिए लायक़ है। हम क़ाल के तो ग़ाज़ी हैं मगर आमाल में शकिस्त खाने वाले हैं। अल्लामा इक़बाल रह० ने अपने बारे में कहा–

इक़बाल बड़ा उपदेशक है मन बातों में मोह लेता है
गुफ़्तार का यह ग़ाज़ी तो बना किरदार का ग़ाज़ी बन न सका

बताने का मक़सद यह है कि बात का ग़ाज़ी और चीज़ है और किरदार का ग़ाज़ी और चीज़ है बल्कि अल्लामा इक़बाल रह० इसी नज़्म के मतलअ (शुरूआत) में मुसलमानों की बदहाली पर यूँ लिखते हैं–

मस्जिद तो बना दी शब पर में ईमाँ की हरारत वालों ने
मन अपना पुरानी पापी है बरसों में नमाज़ी बन सका

ईमानी की निशानदिही

दरअसल ईमान की निशानदिही इंसान के आमाल से होती है। जिस क़द्र आमाल में पुख़्तगी होती है उसी क़द्र ईमान मज़बूत होता है। फिर इंसान का अमल ही तबलीग़ का दर्जा हासिल कर लेता है। इसलिए ख़ामोश तबलीग़ जितनी असरअंदाज़ है उतनी ज़बानी तबलीग़ मौस्सर नहीं है।

मामलात हों तो ऐसे

आप हैरान होंगे कि दुनिया में पूरा मुल्क दो सहाबा किराम के दुकान बना लेने से मुसलमान हो गया। वह कैसे? दो सहाबा किराम इंडोनेशिया में गए। वहाँ जाकर उन्होंने अपनी दुकान बना ली। वह दिन में पाँच बार दुकान बंद भी करते और जुमा के दिल

भी छुट्टी करते थे। जब वे दुकान से चले जाते तो लोग उनके इंतिज़ार में खड़े रहते और क़तार भी लगी रहतीं। लोग कहते कि हम ने यहाँ मामलात की सफ़ाई देखी है। लिहाज़ा हम तो सौदा इन्हीं से लेंगे। जब तबियतें मानूस हो गयीं तो लोगों ने उनसे पूछा भई! क्या बात है कि आप दर्मियान में दुकान बंद करके चले जाते हैं और लोग फिर भी आप से सौदा लेना पसंद करते हैं। आपको दुकानदारी के ये उसूल किसने बताए हैं?

लोगों के पूछने पर उन्होंने बताया कि हम मुसलमान हैं और हमारे पैग़ंबर अलैहिस्सलाम ने हमें तिजारत के उसूल बताए हैं। जब उन लोगों को इस बात का पता चला तो उन्होंने कहा कि हम भी मुसलमान बनना चाहते हैं। चुनाँचे लोग मुसलमान होना शुरू हो गए यहाँ तक कि इन दो सहाबा किराम की बरकत से पूरे मुल्क के लोग मुसलमान हो गए।

ग़ौर कीजिए आजकल तो लोग तक़रीरों और ख़ुत्बों से मुसलमान नहीं होते मगर सहाबा किराम की दुकानदारी से लोग मुसलमान हो जाते थे। यह होता है क़ौल व फ़ेअल में जोड़।

फ़िक्र की घड़ी

आज जो हम अपने आपको मुसलमान कहते हैं हम ज़रा ग़ौर करें कि क्या हमारी आँखें मुसलमान बन गयी हैं? अगर ये मुलमान बन चुकी हैं तो ये फिर ग़ैर महरम की तरफ़ नहीं उठेंगी। अगर ग़ैर महरम की तरफ़ उठ जाती हैं तो अभी मुसलमान नहीं बनीं। क्या यह ज़बान मुसलमान बन चुकी है? अगर बन गई है तो इससे झूठ और ग़ीबत नहीं निकल सकती और अगर निकलती

है तो फिर अभी मुसलमान नहीं बनी। क्या हमारे कान मुसलमान बन गए? अगर यह बन चुके हैं तो फिर अब ख़िलाफ़े शरअ बातें नहीं सुन सकते? अगर सुनते हैं तो फिर अभी मुसलमान नहीं बने। क्या हमारी शर्मगाह मुसलमान बन चुकी है? अगर यह मुसलमान बन चुकी है तो फिर इससे ख़ता नहीं हो सकती। अगर ख़ता हो जाती है तो फिर अभी मुसलमान नहीं बनी। हम अपने हर हर अज़ू के बारे में सोचें कि हमने अपने किस-किस अज़ू को मुसलमान बना लिया है। अगर हर-हर अज़ू गुनाहों में लिथड़ा हुआ नज़र आता है तो सोचिए कि मुसलमानी किस चीज़ का नाम है। जब ये आज़ा इन्फ़िरादी तौर पर अभी मुसलमान नहीं बने तो हम अपने आपको हक़ीक़ी मानों में कैसे मुसलमान कह सकते हैं।

ख़िर्द ने कह भी दिया ला इलाहा तो क्या हासिल
दिल ओ निगाह मुसलमाँ नहीं तो कुछ भी नहीं

ईमान का मक़ाम

दिल ईमान का महल है जो कि ईमान से भरता है। यह बहुत बड़ी दौलत है यहाँ तक कि इंसान के पास उसकी जान से भी ज़्यादा क़ीमती दौलत उसका ईमान है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ ईमान की इतनी क़ीमत है कि अगर सारी दुनिया काफ़िरों से भर जाए तो वह एक मोमिन के बराबर नहीं हो सकते। क़यामत के दिन एक आदमी निन्नानवे दफ़्तर गुनाहों के लेकर आएगा और उसके मुक़ाबले में एक फ़रिश्ते के पास एक छोटी सी पर्ची होगी। फ़रिश्ता उस पर्ची को नेकियों के पलड़े में रख देगा। काग़ज़ का वह पुर्ज़ा उसके गुनाहों के निन्नानवे दफ़्तरों से भारी हो जाएगा।

वह पूछेगा, या अल्लाह! यह क्या मामला है? अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़रमाएगा कि यह तेरा ईमान है। इस ईमान के मुक़ाबले में ज़मीन व आसमान को रख दिया जाए तो भी ईमान भारी होगा। हमें भी यह चीज़ अच्छी तरह ज़हन में बिठा लेनी चाहिए कि हमारा ईमान हमारी असल दौलत और ख़ज़ाना है क्योंकि जब इंसान को किसी चीज़ की अहमियत का पता नहीं होता तो वह उसे आसानी से गंवा देता है। मसलन डाकू डाका डाल लेते हैं और बंदे को पता भी नहीं चलता।

एक दिलचस्प हिकायत

शेख़ सअदी रह० ने एक क़िस्सा लिखा है कि वह फ़रमाते हैं कि मैं छोटा सा था तो मेरी वालिदा ने मुझे सोने की अंगूठी बनवाकर दी। मैं अंगूठी पहनकर बाहर निकला मुझे एक ठग मिल गया। उसके पास गुड़ की डली थी। उसने मुझे बुलाया और कहा कि यह चखो। मैंने गुड़ को चखा तो मीठा लगा फिर वह कहने लगा कि अब अपनी अंगूठी को चखो। जब मैंने अपनी अंगूठी को चखा तो कुछ लज़्ज़त महसूस नहीं हुई। वह मुझे कहने लगा कि यह बेमज़ा चीज़ दे दो और मज़ेदार चीज़ ले लो। मैंने उसकी बातों में आकर उसे सोने की अंगूठी दे दी और गुड़ की डली ले ली।

ईमान व मुशाहिदे में फ़र्क़

यह आजिज़ इस बात को समझाने की ख़ातिर आप हज़रात से एक सवाल पूछता है। आप इसका जवाब दीजिएगा। क्या आप हज़रात का ईमान है कि मेरे हाथ में क़लम है? (सुनने वालों ने

एक ज़बान होकर कहा, जी हाँ।) सब हज़रात फ़रमा रहे हैं जी हाँ हालाँकि यह जवाब ग़लत है। सवाल यह था कि क्या आपका ईमान है कि मेरे हाथ में क़लम है और आप देखकर फ़रमा रहे हैं जी हाँ। मेरे भाई! देखकर कहना तो मुशाहिदा कहलाता है। लिहाज़ा यह ईमान नहीं है। अगर यह आजिज़ सवाल करता है कि क्या आपका ईमान है कि मेरी जेब में क़लम है और आप मुझ पर यक़ीन करते हुए कि मिम्बर पर बैठकर क्यों झूठ बोलेंगे तस्दीक़ कर देते तो फिर यह ईमान होता। लिहाज़ा अब तो यह मुशाहिदा है। ईमान और मुशाहिदे के दर्मियान फ़र्क़ करने की ज़रूरत है। देखना कुछ और चीज़ है और बिन देखे किसी पर एतिमाद करके कुछ मान लेना और चीज़ है। ईमान यह है कि हमने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर एतिमाद करते हुए हर उस चीज़ को तसलीम कर लिया जो वह अपने रब की तरफ़ से लेकर आए। यह बिन देखा सौदा है। जब देख लेंगे तो फिर इसकी क़ीमत नहीं रहेगी।

एक सबक़ आमोज़ वाक़िआ

किताबों में एक वाक़िआ लिखा है। इससे आपको बात ज़रा जल्दी समझ आ जाएगी। हारून रशीद के ज़माने में बहलोल दाना एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, वह मज्ज़ूब और साहिबे हाल थे। हारून रशीद उनका बड़ा एहतिराम करता था। हारून रशीद की बीवी ज़ुबैदा ख़ातून भी एक नेक और पारसा औरत थी। उसने अपने महल में एक हज़ार ख़ादमाए रखी हुई थीं जो क़ुरआन की हाफ़िज़ा और क़ारिया थीं। उन सबकी ड्यूटियाँ मुख़्तलिफ़ शिफ़्टों में लगी हुई

थीं। चुनाँचे उसके महल में चौबीस घंटे उन बच्चियों के क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ आ रही होती थी। उसका महल क़ुरआन का गुलशन महसूस होता था।

एक दिन हारून रशीद अपनी बीवी के साथ दरिया के किनारे टहल रहा था कि एक जगह बहलोल दाना रह० को बैठे हुए देखा। उसने कहा, अस्सलामु अलैकुम। बहलोल दाना रह० ने जवाब में कहा, वअलैकुम अस्सलाम। हारून रशीद ने कहा, बहलोल! क्या कर रहे हो? उन्होंने कहा, मैं रेत के घर बना रहा हूँ। पूछा, किस लिए बना रहो? बहलोल रह० ने जवाब दिया कि जो आदमी इसको ख़रीदेगा मैं उसके लिए दुआ करूंगा कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसके बदले उसको जन्नत में घर अता फ़रमा दे। बादशाह ने पूछा, बहलोल इस घर की क़ीमत क्या है? उन्होंने कहा कि एक दीनार। हारून रशीद समझा कि यह एक दीवाने की बड़ है। लिहाज़ा वह आगे चला गया।

उसके पीछे ज़ुबैदा ख़ातून आयीं। उसने बहलोल रह० को सलाम किया। फिर पूछा, बहलोल! क्या कर रहे हो? उन्होंने कहा, मैं घर बना रहा हूँ। उसने पूछा, किसके लिए घर बना रहे हो? बहलोल रह० ने कहा, जो आदमी इस घर को ख़रीदेगा मैं उसके लिए दुआ करूंगा कि या अल्लाह इसके बदले उसको जन्नत में घर अता फ़रमा दे। उसने पूछा, बहलोल! इस घर की क्या क़ीमत है? बहलोल रह० ने कहा, एक दीनार। ज़ुबैदा ख़ातून ने एक दीनार निकालकर उनको दे दिया और कहा कि मेरे लिए दुआ कर देना। वह दुआ करवाकर चली गई।

रात को जब हारून रशीद सोया तो उसने ख़्वाब में जन्नत के

मंज़र देखे। आबशारे, मुर्ग़ज़ारें और फल व फूल देखने के अलावा बड़े ऊँचे ऊँचे ख़ूबसूरत महल भी देखे। एक सुर्ख़ याक़ूत के बने हुए महल पर उसने ज़ुबैदा ख़ातून का नाम लिखा हुआ देखा। हारून रशीद ने सोचा कि मैं देखूं तो सही क्योंकि यह मेरी बीवी का घर है। वह महल में दाख़िल होने के लिए जैसे ही दरवाज़े पर पहुँचा तो एक दरबान ने उसे रोक लिया। हारून रशीद कहने लगा, इस पर तो मेरी बीवी का नाम लिखा हुआ है। इसलिए मैंने अंदर जाना है। उसने कहा, नहीं यहाँ दस्तूर अलग है, जिसका नाम होता है उसको अंदर जाने की इजाज़त होती, किसी और को इजाज़त नहीं होती। लिहाज़ा आपको दाख़िल होने की इजाज़त नहीं है। जब दरबान ने हारून रशीद को पीछे हटाया तो उसकी आँख खुल गई। उसे जागने पर फ़ौरन ख़्याल आया कि मुझे तो लगता है कि बहलोल की दुआ ज़ुबैदा के हक़ में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ क़ुबूल हो गई। फिर उसे अपने आप पर अफ़सोस हुआ कि मैं भी अपने लिए एक घर ख़रीद लेता तो कितना अच्छा होता। वह सारी रात इसी अफ़सोस में करवटें बदलता रहा। सुबह हुई तो उसने दिल में सोचा कि आज फिर मैं ज़रूर दरिया के किनारे जाऊँगा। अगर आज मुझे बहलोल मिले तो मैं भी एक मकान ज़रूर ख़रीदूंगा।

चुनाँचे शाम को फिर बीवी के लेकर चल पड़ा। वह बहलोल रह० को तलाश करते हुए इधर-उधर देख रहा था। उसने देखा कि एक जगह बहलोल बैठे उसी तरह मकान बना रहे थे। उसने कहा, अस्सलामु अलैकुम। बहलोल रह० ने जवाब में वअलैकुम अस्सलाम कहा। हारून रशीद ने पूछा क्या कर रहे हो? बहलोल रह० ने कहा मैं घर बना रहा हूँ। उसने पूछा, किस लिए? बहलोल

रह० ने कहा, जो आदमी यह घर ख़रीदेगा मैं उसके लिए दुआ करूंगा कि अल्लाह तआला उसे जन्नत में घर अता कर दे। हारून रशीद न पूछा, बहलोल! इसकी क़ीमत क्या है? बहलोल रह० ने कहा इसकी क़ीमत पूरी दनिया की बादशाही है। हारून रशीद ने कहा, इतनी क़ीमत तो मैं दे भी नहीं सकता। कल तो एक दीनार के बदले दे रहे थे और आज पूरी दुनिया की बादशाही मांगते हो। बहलोल रह० ने कहा, बादशाह सलामत! कल बिन देखे मामला था और आज देखा हुआ मामला है। कल बिन देखे सौदा था इसलिए सस्ता मिल रहा था और आज क्योंकि देखकर आए हो इसलिए अब इसकी क़ीमत ज़्यादा देनी पड़ेगी।

हमारी मिसाल ऐसे ही है कि आज हम ने अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बिन देखे मानना है इसलिए जन्नत में बड़ी सस्ती है लेकिन जब मौत के वक़्त आख़िरत की निशानियाँ देख लेंगे तो उसके बाद फिर इसकी क़ीमत अदा नहीं कर सकेंगे। इर्शादे बारी तआला है :

يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِىْ مِنْ عَذَابِ يَوْمَئِذٍ بِبَنِيْهِ○ وَصَاحِبَتِهٖ وَ اَخِيْهِ○
وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِىْ تُئْوِيْهِ○ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ثُمَّ يُنْجِيْهِ○ (المعارج ١١تا١٤)

रोज़े महशर मुजरिम यह तमन्ना करेगा कि काश! में अपनी सज़ा के बदले में अपने बेटे दे देता, बीवी दे देता, ख़ानदान वाले दे देता हत्ताकि कि जो कुछ दुनिया में है वह सब दे देता और मैं जहन्नम से बच जाता। फ़रमाया ﴿كَلَّا﴾ हर्गिज़ नहीं, हर्गिज़ नहीं।

सबसे ज़्यादा अजीब ईमान

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने एक बार जिहाद से वापस

तशरीफ़ लाते हुए दरिया के किनारे पर पड़ाव डाला। आप अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ हुए और आपने उसी वक़्त तयम्मुम फ़रमा लिया। एक सहाबी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! वह सामने पानी है। फ़रमाया, हाँ, क्या मालूम है कि यहाँ से वहाँ जाने तक मेरी ज़िंदगी साथ देगी या नहीं देगी। इसलिए मैंने एहतियातन तयम्मुम कर लिया है। फिर आपने जाकर वुज़ू फ़रमाया और नमाज़ अदा की।

उसके बाद सहाबा किराम आपके चारों तरफ़ घेरा बनाकर बैठ गए। नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, ऐ मेरे सहाबा! यह बताओ कि सबसे ज़्यादा अजीब ईमान किन का है? सहाबा किराम ने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! सबसे ज़्यादा अजीब ईमान फ़रिश्तों का है। नबी अलैहिस्सलातु वसल्लाम ने फ़रमाया, नहीं। फ़रिश्ते कैसे ईमान नहीं लाएंगे, वो तो नूर से बने हैं। अर्श के ऊपर के जहान को देखते हैं और वे अल्लाह की मासियत कर ही नहीं सकते क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया :

﴿لَا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ. (التحريم:٦)﴾

लिहाज़ा उनका ईमान तो इतना अजीब नहीं है।

सहाबा किराम ने अर्ज़ किया ऐ अलह के नबी! फिर अंबिया किराम का ईमान बड़ा अजीब है। नबी अलैहिस्सलातु वसल्लाम ने इर्शाद फ़रमाया, नहीं इसलिए कि अंबिया किराम पर अल्लाह तआला की तरफ़ से "वही" उतरती है। उन्हें मौजिज़ात मिलते हैं। अगर अंबिया किराम ही ईमान नहीं लाएंगे तो और कौन ईमान लाएगा।

सहाबा किराम ने हैरान होकर अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी!

अगर उनका ईमान भी इतना अजीब नहीं है तो फिर हमारा ईमान अजीब है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, नहीं। तुम्हारा ईमान भी इतना अजीब नहीं है क्योंकि तुमने मेरा दीदार किया है, तुमने जिब्रील अलैहिस्सलाम को उतरते देखा है और तुम्हारे सामने क़ुरआन आया है। जब तुमने इतनी निशानियाँ अपनी आँखों से देख लीं और अल्लाह तआला की मदद नुसरत का भी मुशाहिदा कर लिया तो फिर तुम्हारा ईमान भी इतना अजीब नहीं है।

उसके बाद सहाबा किराम ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! अल्लाह और उसके रसूल ही ज़्यादा बेहतर जानते हैं कि किसका ईमान ज़्यादा अजीब है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, मेरे सहाबा! मेरे बाद मेरी उम्मत के कुछ लोग आएंगे, वे मेरे पर्दा करने के बाद सैंकड़ों साल बाद पैदा होंगे। वे लोग ऐसे वक़्त में आएंगे जब न तो वे मेरा दीदार करेंगे, न वे क़ुरआन को उतरते देखेंगे और न फ़रिश्तों को उतरते देखेंगे, इसके अलावा हर तरफ़ फ़ितने होंगे, शक व शुब्हात पैदा किए जाएंगे लेकिन जब उलमा उनके सामने मेरी बातों को पेश करेंगे तो वे मेरी मुहब्बत में उस बात को बिन देखे मान लेंगे। उन लोगों का ईमान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ बड़ा ही अजीब होगा।

इस्तिक़ामत (जमाव) की अहमियत

यक़ीनन यह बड़ी अजीब बात है कि हमने अल्लाह और रसूल को बिन देखे माना है। उस मिश्काते नबुव्वत को गए हुए चौदह सौ साल गुज़र चुके हैं। आज चारों तरफ़ से फ़ितने हैं, अंधेरा है,

फ़साद है। हर तरफ़ लोग ईमान पर डाका डालने के लिए तैयार हैं और आज सीधे रास्ते से हटाने के लिए लोग मौजूद हैं। इस वक़्त जो ईमान के ऊपर जमा रहे वह अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त के हाँ बड़े दर्जे वाला है।

ज़िंदगी गुज़ारने के दो तरीक़े

ज़िंदगी गुज़ारने के दो तरीक़े हैं। एक तरीक़ा नज़र की ज़िंदगी गुज़ारना यानी जो कुछ आँख देखती है उसको मान लेना मसलन आँख देखती है कि रिश्वत लेने में फ़ायदा है, पैसा आ रहा है। आँख देखती है कि धोका देकर माल कमाओ, नफ़े ज़्यादा हैं। आँख दखेती है कि मिलावट कर लें तो ज़्यादा आमदनी होती है यानी आँख देखती है कि इन कामों में ज़्यादा फ़ायदा है। अब जो बंदा इस पर अमल करेगा वह गोया मुशाहिदे और नज़र की ज़िंदगी गुज़ारने वाला होगा और दूसरा तरीक़ा है ख़बर की ज़िंदगी गुज़ारना। मसलन एक आदमी अल्लाह तआला के हुक्मों को देखता है कि मिलावट करने से मना फ़रमा दिया गया है इसलिए नुक़सान को देखकर वह पीछे हट जाता है। वह समझता है कि रिश्वत लेना गुनाह है, लिहाज़ा वह पीछे रुक जाता है। इसी तरह किसी को धोका देकर माल हासिल करना गुनाह है। लिहाज़ा वह फिर भी पीछे हट जाता है। इसको ईमान वाली ज़िंदगी कहते हैं।

दूसरे लफ़्ज़ों में ख़बर की ज़िंदगी से मुराद यह है कि अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त की तरफ़ से जो दीन मिला है उस पर आँखें बंद करके अमल कर लिया जाए और जो आदमी अपनी आँख से देखता फिरता है। शरई या ग़ैर शरई हर तरीक़े से फ़ायदे उठाने

की कोशिश करता है, वह नज़र की ज़िंदगी गुज़ारने वाला है। याद रखना कि हमारी कामयाबी ख़बर की ज़िंदगी गुज़ारने में है, नज़र की ज़िंदगी गुज़ारने में नहीं है। मिसालों से बात वाज़ेह करने की कोशिश की।

पहली मिसाल

जादूगरों से मुक़ाबले के दौरान हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चारों तरफ़ साँप मौजूद हैं। आपके हाथ में सिर्फ़ असा (छड़ी) है। अगर ऐसी हालत में अक़्ल से पूछें कि क्या करना चाहिए तो अक़्ल कहेगी कि अपनी लाठी को मज़बूती से पकड़ें और जो साँप आपके क़रीब आए, यह लाठी उसके सर पे मारें और उसे कुचल कर रख दें। इस तरह आप बच जाएंगे मगर लाठी को हाथ से मत छोड़ना। अगर छोड़ बैठे तो उम्मीद का आख़िरी सहारा भी ख़त्म हो जाएगा। ऊपर परवरदिगार से पूछें कि इस हालत में मुझे क्या करना है तो अल्लाह तआला की तरफ़ से हुक्म आता है, ऐ मेरे प्यारे मूसा! ﴿اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ﴾ आप अपने आसा को ज़मीन पर डाल दीजिए। अब अक़्ल चीख़ती है, चिल्लाती है, शोर मचाती है और कहती है कि नहीं, नहीं लाठी को ज़मीन पे न डालना वरना तुम्हारी उम्मीद की आख़िरी किरन भी ख़त्म हो जाएगी। मगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के पैग़ंबर थे। लिहाज़ा उन्होंने उसके मुताबिक़ अमल किया जो अल्लाह तआला का हुक्म था। जैसे ही हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने आसा को ज़मीन पर डाला वह असा अज़दहा बन गया। उसने सब सांपों को खा लिया और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कामयाब फ़रमा दिया।

दूसरी मिसाल

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सामने दरियाए नील है और पीछे फ़िरऔन की बड़ी फ़ौज है। जब मूसा अलैहिस्सलाम के सहाबा ने देखा तो कहा, ﴿قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ (الشعراء،٦١)﴾ मूसा अलैहिस्सलाम के सहाबा ने कहा कि अब तो हम पकड़े गए। ﴿قَالَ كَلَّا﴾ फ़रमाया हर्गिज़ नहीं। एक यक़ीन भरी आवाज़ उठी ﴿اِنَّ مَعِىَ رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ﴾ मेरा रब मेरे साथ है। वह ज़रूर मेरी रहनुमाई फ़रमाएगा।

अब ऐसे मौक़े पर अक़्ल से पूछें कि बंदे को क्या करना चाहिए। अक़्ल कहेगी कि आगे पानी का दरिया है और पीछे इंसानों का दरिया है और तुम दोनों के बीच हो। तुम्हारे हाथ में सिर्फ़ लाठी है। तुम इसे मज़बूती से पकड़ना और दुश्मन का डटकर मुक़ाबला करना, हो सकता है कि तुम कामयाब हो जाओ। अल्लाह तआला से पूछिए कि रब्बे करीम! इन हालात में क्या करना चाहिए। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, ऐ मेरे प्यारे मूसा! ﴿اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرِ﴾ आप इस लाठी को पानी पर मारिए। अक़्ल चीख़ती है चिल्लाती है, शोर मचाती है और कहती है कि पानी पर लाठी मारोगे तो क्या बनेगा। अगर लाठी मारनी ही है तो फ़िरऔन के सर पर मारो। पानी पर मारने से क्या बनेगा? मगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने वही काम किया जिसका अल्लाह तआला की तरफ़ से हुक्म था। चुनाँचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जब असा को पानी पर मारा तो बारह रास्ते बन गए। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको कामयाब फ़रमा दिया और फ़िरऔन और उसकी क़ौम को दरिया में ग़र्क़ फ़रमा दिया।

तीसरी मिसाल

जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल को लेकर दरिया से आगे वादिए तीह में पहुँचे तो देखा कि वहाँ पानी नहीं है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत के लोग पानी न होने की वजह से परेशान हुए और कहने लगे, हज़रत! यहाँ तो पानी भी नहीं है, क्या करें? इस पर अक़्ल से पूछें तो अक़्ल कहती है कि आपके पास इस वक़्त और तो कोई हथियार नहीं है, सिर्फ़ एक लाठी है लिहाज़ा आप इस लाठी की मदद से एक गढ़ा खोदें, हो सकता है कि इस गढ़े में से पानी निकल आए लेकिन ज़रा आहिस्ता आहिस्ता एहतियात से खोदना ताकि कहीं लाठी टूट न जाए। अगर लाठी टूट गई तो उम्मीद का आख़िरी सहारा भी ख़त्म हो जाएगा। इस हालत में अल्लाह तआला से पूछिए कि या अल्लाह! अब क्या करना चाहिए तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, मेरे प्यारे नबी! ﴿اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ﴾ आप पत्थर पर लाठी मारिए। जब अक़्ल सुनती है कि पत्थर पर लाठी मारिए तो अक़्ल फिर हैरान होकर कहती है कि यह क्या मामला है? पत्थर पर मारेंगे तो लाठी भी टूट जाएगी और उम्मीद का आख़िरी सहारा भी ख़त्म हो जाएगा। मगर अल्लाह तआला के पैग़ंबर अलैहिस्सलाम ने वही किया जो अल्लाह तआला ने हुक्म दिया। लिहाज़ा जब पत्थर पर मारा तो पत्थर में से चश्मे जारी हो गए और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको कामयाब फ़रमा दिया। इन मिसालों से यह बात साबित हुई कि नज़र के रास्ते पर चलने वाले नाकाम होते हैं जबकि ख़बर के रास्ते पर ज़िंदगी गुज़ारने वाले कामयाब होते हैं।

अल्लाह तआला के हुक्मों के साथ चिमट जाएं

काफ़िर लोग नज़र के रास्ते पर अमल करने वाले हैं और मोमिन मुसलमान ख़बर के रास्ते पर अमल करने वाले हैं। इसलिए यह बात ज़हन में अच्छी तरह बिठा लीजिए कि हमने दुनिया के फ़ायदों को नहीं देखना बल्कि हम ने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्मों को देखना है। हमें जो मर्ज़ी सामने नज़र आए यहाँ तक कि बहुत से फ़ायदे भी नज़र आएं तो हम उनको को ठोकर लगाकर अल्लाह के हुक्मों के साथ चिमट जाएं।

इंसान और आज़माईश

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से इस दुनिया में हर इंसान पर आज़माइशें आती हैं लेकिन अल्लाह तआला ख़बर के रास्ते पर ज़िंदगी गुज़ारने वालों को हमेशा कामयाब फ़रमा देते हैं। इर्शाद बारी तआला है :

﴿أَحَسِبَ النَّاسُ أَنْ يُّتْرَكُوْٓا أَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ○ (العنكبوت۲)﴾

क्या इंसानों ने यह गुमान किया कि वे छोड़ दिए जाएंगे अगर वे कहेंगे कि हम ईमान ले आए और उनको आज़माया नहीं जाएगा। ﴿وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ﴾ तहक़ीक़ हमने आज़माया उनसे पहले वालों को भी ﴿فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ﴾ और अल्लाह तआला खरे और खोटे को पहचान कर रहेंगे। लिहाज़ा इंसान यह गुमान न करे कि हम ईमान ले आए और अब हमें आज़माया नहीं जाएगा और बस इतनी ही बात काफ़ी हो जाएगी। नाँ नाँ नाँ बल्कि अल्लाह तआला आज़माएंगे, अल्लाह तआला

फ़रमाते हैं :

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ٥ (البقرة١٥٥)

हम मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से आज़माएंगे और जो इन तमाम आज़माईशों में कामयाबी पाएंगे उनको आप बशारत सुना दीजिए। साबित यह हुआ कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त बग़ैर आज़माए किसी के ईमान को क़ुबूल नहीं करेंगे।

हर हाल आज़माईश का हाल

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हर इंसान को आज़माते हैं। जिसके पास पैसे खुला है, पैसा उसके लिए आज़माईश है। जो ग़रीब है उसके लिए ग़ुरबत आज़माईश है, जिसको सेहत मिली है उसके लिए सेहत आज़माइश है, जो बीमार है उसके लिए बीमारी आज़माईश है। अल्लाह तआला हर आदमी को मुख़्तलिफ़ हालात में रखते हैं और जिस हालत में उसको रखा हाता है वह उस हाल में आज़माया जा रहा होता है ताकि पता चले कि वह वाक़ई दिल से ईमान लाने वालों में से है या नहीं। जो अच्छे हाल में हो उसे चाहिए कि शुक्र अदा करे जो बुरे हाल में हो उसे चाहिए कि सब्र करे। शुक्र करने वाला भी जन्नती और सब्र करने वाला भी जन्नती होगा।

अदलते बदलते दिन

अल्लाह तआला इंसान को हमेशा एक ही हाल में नहीं रखते बल्कि ﴿وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ (آل عمران١٤٠)﴾ और हम इंसानों के

दर्मियान दिनों को फेरते रहते हैं। आज जिस घर में खुशियाँ मनाई जा रही होती हैं कल उस घर में रोना पीटना हो रहा होता है। जो आज जवानी के नशे में धुत होता है कल वही बीमार होकर बिस्तर पर पड़ा होता है—

खुशी के साथ दुनिया में हज़ारों ग़म भी होते हैं
जहाँ बजती है शहनाइयाँ वहाँ मातम भी होते हैं

आज़माईश में डालने का मक़सद

याद रखना! आज अगर हमने बर्तन ख़रीदने हों तो उनको भी ठोंक बजाकर देखते हैं। अल्लाह तआला भी इसी तरह ईमान के मामले में बंदे को ठोंक बजा कर देखते हैं और बंदे के ईमान का फ़ौरन पता चल जाता है। जो कच्चे यक़ीन वाले होते हैं वे पीछे भाग जाते हैं और सिर्फ़ वही जमे रहते है जिनका ईमान बहुत मजबूत होता है।

ईमान का इम्तिहान

आज़माईशें अल्लाह वालों पर भी आया करती हैं। पहले ज़माने में भी आज़माइशें थीं और आज के ज़माने में भी आज़माइशें हैं। ऊपर से बारिश बंद है, नीचे से चश्मे बंद हैं और पेड़ों पर फल नहीं हैं। ऐसे में अल्लाह पर यक़ीन कैसे रखना। दूसरी तरफ़ से इमदादों की भरमार लगी हुई है और कहा जाता है जल्दी आ जाओ और अल्लाह तआला के दफ़्तर से नाम कटवाकर हमारे दफ़्तर में लिखवाओ। ईमान का यहाँ पर मुज़ाहिरा करना है और कहना है कि नहीं हमने अल्लाह को अपना परवरदिगार माना

है। इसलिए हम अपने ईमान से एक इंच भी आगे पीछे नहीं हो सकते। यह है ईमान का इम्तिहान। हर दौर और हर ज़माने में इम्तिहान के मुख़्तलिफ तरीक़े हुआ करते हैं। एक तरफ़ भूख प्यास नज़र आ रही है और दूसरी तरफ़ माले दुनिया दिखाया जा रहा है और कहा जा रहा है कि आओ हमारी दावत को क़ुबूल कर लो। हम ख़ज़ानों के मुँह खोल देंगे। अब फ़ैसला यह होना है कि यहाँ पर अल्लाह का बंदा कौन है और दुनिया का बंदा कौन है। याद रखना कि हमारा परवरदिगार अगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत को चालीस साल तक बग़ैर किसी मेहनत के मन-सलवा अता कर सकता है तो वह परवरदिगार हमें भी रिज़्क़ अता फ़रमा सकता है। इसलिए हम उसके ख़ज़ानों पर यक़ीन रखते हैं। उसके ख़ज़ानों में कोई कमी नहीं है बल्कि यह हमारी बदआमालियाँ हैं जिन्होंने रिज़्क के दरवाज़ों को बंद किया हुआ है।

रिज़्क़ के दरवाज़े बंद होने की असल वजह

इंसानों की बदआमालियों की वजह से अल्लाह तआला रिज़्क़ के दरवाज़ों को बंद कर देते हैं। इर्शादे बारी तआला है :

﴿وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا. (طٰہٰ:۱۲۴)﴾

जो अल्लाह की याद से ऐराज़ (ग़फ़लत) करता है अल्लाह तआला उसकी मईशत (ज़िंदगी) को तंग कर देते हैं।

अगर हम गुनाह करना छोड़ दें तो फिर देखना कि अल्लाह तआला की तरफ़ से रिज़्क़ की बहुतात होगी। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰىٓ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ. (الاعراف٩٦)

अगर ये बस्ती देसों वाले ईमान ले आए और तक़्वा अख़्तियार करते तो अल्लाह तआला उनके लिए आसमान और ज़मीन से बरकतों के दरवाज़े खोल देते।

﴿لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ﴾

अल्लाह उनको वे नेमतें खिलाता जो ऊपर से उतरती हैं और वे नेमतें भी खिलाता जो पाँव के नीचे (ज़मीन) से निकलती हैं।

आज़माईश को ख़ुशी से क़ुबूल कीजिए

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि हम हर बंदे को आज़माएंगे ताकि खरे और खोटे की पहचान हो जाए। हमें चाहिए कि हम अल्लाह तआला से माफ़ी मांगते रहें। हम कमज़ोर हैं, आज़माईश के क़ाबिल नहीं हैं लेकिन अगर कभी अल्लाह तआला की तरफ़ से कोई आज़माईश आ जाए तो घबराने की ज़रूरत नहीं है। परवरदिगार जो बोझ सर पर रखता है फिर उसे उठाने की तौफ़ीक़ भी अता फ़रमा देता है ﴿لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا﴾ अल्लाह तआला किसी की हिम्मत से ज़्यादा उस पर बोझ नहीं डालता। क्या हम एक बच्चे के ऊपर एक मन का बोझ कभी डालेंगे? नहीं डालेंगे नाँ बल्कि किसी बच्चे को कुछ वज़न उठवाना भी हो तो पहले देखेंगे कि बच्चा इतना वज़न उठा भी सकेगा या नहीं। जब हम जैसे लोग भी इस बात को देखते हैं कि इतना बोझ बच्चे पर डालना मुनासिब नहीं है तो अल्लाह तआला भी हिम्मत से ज़्यादा बोझ नहीं डालते बल्कि सच्ची बात यह है कि सर पर बोझ बाद

में डालते और उसे उठाने की हिम्मत पहले दे देते हैं। इसलिए अगर कोई आज़माईश आ भी जाए तो उसे ख़ुशी से क़ुबूल कीजिए। और दिल में कहिए—

तेरा ग़म भी मुझ को अज़ीज़ है
के यह तेरी दी हुई चीज़ है

इसलिए आज़माईश पे साबित क़दम रहिए। यह इम्तिहान पहले भी हुए हैं और आइन्दा भी होते रहेंगे।

सैय्यदना मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा का ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ

आपको एक ईमान बढ़ाने वाला वाक़िआ सुनाता हूँ। उसे ध्यान से सुनिएगा। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

واوحينا الٰى امى موسٰى ان ارضعيه فاذا خفت عليه فالقيه فى اليم
ياخذوه عدوولى وعدو له ولا تخافى ولا تحزنى انا رادوه اليك
وجاعلوه من المرسلين. (سورة القصص)

और हमने 'वही' की मूसा अलैहिस्सलाम की माँ को कि तुम अपने बच्चे को दूध पिलाओ और अगर तुम्हें इसके बारे में डर लगे कि फ़िरऔन के फ़ौजी इसको क़त्ल न कर दें तो तुम इसे पानी में डाल देना और आगे फ़रमाया कि इसको जो पकड़ेगा वह मेरा भी दुश्मन होगा और इसका भी दुश्मन होगा और साथ तसल्ली भी देते हैं कि डरना भी नहीं है और ग़मज़दा भी नहीं होना। हम इसे तेरे पास लौटाएंगे और हमने तो इसे रसूलों में से बनाया है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ एक औरत थीं। वह ज़हन में सोच सकती थीं कि ऐ अल्लाह! अगर आपने इसको रसूलों में से बनाया है तो फ़िरऔन का कोई फ़ौजी इधर आ ही न सके या ऐ अल्लाह! मैं इसे किसी गुफ़ा में रख आती हूँ और उधर कोई जा ही न सके या मैं इसे घर की छत पर रख देती हूँ ताकि बच्चा महफ़ूज़ रह सके। मगर अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि बच्चे को पानी में डालना। अक़्ल कहती है कि पानी में बच्चा डूब जाएगा। अच्छा उसको संदूक़ में डालती हूँ। संदूक़ में डालेगी तो उसके अंदर पानी भर जाएगा। अगर सारे सुराख़ बंद करें तो हवा के अंदर न जाने की वजह से आक्सीजन नहीं मिल सकेगा जिसकी वजह से बच्चा मर जाएगा। अक़्ल कहती है कि या तो यह पानी की वजह से मरेगा या हवा न होने की वजह से मरेगा। तेरा बच्चा बाक़ी नहीं बचेगा। लेकिन उस औरत ने अल्लाह तआला के वादे पर भरोसा किया और अपने जिगर के टुकड़े को दरिया के अंदर डाल दिया और वापस आ गई। अल्लाह तआला की शान देखिए कि फ़िरऔन अपनी बीवी के साथ दरिया के किनारे टहल रहा था। चार सौ ग़ुलाम उसके आगे पीछे और इर्द-गिर्द थे। उन्होंने जब संदूक़ को देखा तो उठा लिया और फ़िरऔन के सामने पेश कर दिया। जब संदूक़ खोला गया तो उसमें बच्चे को पाया। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿والقيت عليك محبة منى﴾ ऐ प्यारे मूसा! हमने आपके चेहरे पर मुहब्बत की तजल्ली डाल दी थी। गोया अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चेहराए अक़्दस को ज़ेबाई अता करके ऐसा दिलकश बना दिया था कि जो भी देखता वह दिल दे बैठता। लिहाज़ा जैसे ही फ़िरऔन की बीवी ने देखा तो कहने लगी ﴿لا تقتلوه﴾ तुम्हें इसे क़त्ल नहीं करना। ﴿عسى

﴿ان ينفعنا او نتخذه ولدا﴾ या यह हमें नफ़ा पहुँचाए या हम इसे बेटा बना लेंगे।

बीवी की बात सुनकर फ़िरऔन ने सोचा कि जब हम इसे बेटे की तरह पालेंगे तो फिर यह तो हमारी हुकूमत हमसे नहीं छीनेगा क्योंकि हमारे एहसानों में दबा हुआ होगा। उसने कहा, ठीक है इसको क़त्ल नहीं करते। उसकी अक़्ल ने उसे धोका दे दिया। हज़ारों बच्चों को क़त्ल करने वाला कितने आराम से धोका खा रहा है।

किताबों में लिखा है कि फ़िरऔन की बीवी ने जब यह सुना तो वह ख़ुश हो गई और कहने लगी ﴿قرة عين لى ولك﴾ कि यह मेरी और तेरी आँखों की ठंडक है। फ़िरऔन ने उसके जवाब में कहा ﴿قرة عين لك﴾ यह तेरी आँखों की तो ठंडक है ﴿لا حاجة لى﴾ लेकिन मुझे इस की ज़रूरत नहीं। "रुहुलमानी" में लिखा है कि जब फ़िरऔन की बीवी ने ﴿قرة عين لى ولك﴾ कहा था, उस वक़्त अगर फ़िरऔन बदबख़्त सिर्फ़ हाँ कह देता तो उस हाँ की बरकत से अल्लाह तआला उसको भी ईमान लाने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा देता।

फ़िरऔन की बीवी (आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा) क्योंकि ख़ुश हुई थीं इसलिए फ़िरऔन ने उनकी ख़ुशी की वजह से वहाँ पर मौजूद चार सौ ग़ुलामों को आज़ाद कर दिया था। तफ़्सीर में एक अजीब नुक्ता लिखा है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अभी बचपन में थे मगर जब वहाँ पहुँचे तो चार सौ ग़ुलामों की आज़ादी का सबब बन गए। इस तरह अल्लाह वाले जिस आबादी में चले जाते हैं उस आबादी के लिए नफ़्स और शैतान की ग़ुलामी से

आज़ादी पाने का सबब बन जाया करते हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को महल में ले जाया गया तो उन्हें दूध पिलाने के बारे में फ़िक्र होने लगी। औरतों ने उन्हें दूध पिलाना चाहा मगर उन्होंने दूध न पिया। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿وحرمنا عليه المراضع من قبل﴾ और हमने उन पर दूसरी औरतों का दूध हराम फ़रमा दिया था। फ़िरऔन बड़ा परेशान हुआ कि बच्चा दूध नहीं पीता। उसने कहा, कुछ और औरतों को बुलाओ। लिहाज़ा कई औरतों को बुलाया गया लेकिन बच्चे ने किसी का भी दूध न पिया। फ़िरऔन और ज़्यादा परेशान हुआ। इसी हालत में रात गुज़र गई।

इधर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ बहुत ही ज़्यादा परेशान हाल थीं। दुखः और ग़म के साथ सुबह की। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿ان كادت لتبدى به لو لا ان ربطنا علىٰ قلبها﴾ अगर हम उसके दिल पर गिरह न दे देते, उसके दिल को सकून न दे देते तो वह अपना राज़ खोल ही बैठती यानी वह रो पड़ती और लोगों को पता चल जाता। गोया अल्लाह तआला ने उनको रब्ते क़ुलूब अता फ़रमा दिया। उन्होंने अपनी बेटी से कहा कि जाओ और अपने भाई का पता करके आओ। लिहाज़ा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बहन भागी गई। उन्होंने फ़िरऔन के महल में जाकर देखा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम गोद में लेटे हुए हैं। औरतें उनको दूध पिलाने की कोशिश कर रही हैं और वह दूध नहीं पी रहे और फ़िरऔन बहुत परेशान है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बहन ने फ़िरऔन से कहा,

﴿هل ادلكم علىٰ اهل بيت يكفلونه لكم وهم له ناصحون.﴾

क्या मैं तुम्हें ऐसे घरवालों के बारे में न बताऊँ कि जो इस बच्चे को दूध पिलाएंगे, वे इसके परवरिश करेंगे और इसके बड़े ख़ैरख़्वाह होंगे।

जब उसने यह कहा कि वे इसके बड़े ख़ैरख़्वाह होंगे तो फ़िरऔन को बात खटक गई। वह कहने लगा, अच्छा! क्यों ख़ैरख़्वाह होंगे? वह भी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बहन थीं। इसलिए निहायत समझदारी दिखाते हुए कहने लगीं कि हम आपकी रिआया हैं। अगर हम ही ख़ैरख़्वाही नहीं करेंगे तो फिर आपकी ख़ैरख़्वाही कौन करेगा? फ़िरऔन कहने लगा, बात तो ठीक है, अच्छा जाओ जिसको चाहो बुलाकर लाओ।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बहन दौड़ती हुई घर आई और कहने लगी, अम्मी! चलें भाई दूध नहीं पी रहा है। लिहाज़ा आपकी वालिदा आयीं, उन्होंने दूध पिलाना शुरू कर दिया और बच्चे ने दूध पीना शुरू कर दिया। फ़िरऔन बहुत खुश हुआ कि चलो परेशानी ख़त्म हो गई। दो तीन दिन उन्होंने महल ही में दूध पिलाया। उसके बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा ने कहा कि मैं तो अपने घर में जाकर रहूँगी। मुझसे महल में नहीं रहा जाता। फ़िरऔन कहने लगा, अच्छा तो फिर तुम इस बच्चे को भी अपने साथ ले जाओ। अपने घर जाकर इसको दूध पिलाती रहना। मैंने ख़ज़ाने से तुम्हारी तंख़्वाह तय कर दी है। लिहाज़ा मैं हर महीने तुम्हारी तंख़्वाह भेज दिया करूंगा। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿فرددنه الى امه﴾ हमने उसे लौटा दिया उसकी माँ के पास ﴿كى تقر عينها﴾ ताकि उसकी आँखें ठंडी हों ﴿ولا تحزن﴾ और वह ग़मज़दा न हो ﴿ولتعلم﴾ और वह जान ले

﴿ان وعد الله حق﴾ कि अल्लाह वादे के सच्चे हैं ﴿ولكن اكثرهم لا يعلمون﴾ लेकिन अक्सर लोग इस बात को नहीं जानते।

दुगना ईनाम

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो आदमी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा की तरह अल्लाह के वादे पर भरोसा करेगा अल्लाह तआला उसे दुगना ईनाम देंगे। सहाबा किराम ने पूछा, ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! दुगना ईनाम कैसा? फ़रमाया, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ को देखो कि वह अपने ही बेटे को दूध पिलाती थीं और ख़ज़ाने से तंख़्वाह भी मिला करती थी।

ईमान की हिफ़ाज़त

हमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ज़ात पर मुकम्मल भरोसा करना चाहिए। हम यूँ हो जाएं जैसे हमारे पाँव के नीचे चट्टान है। यहाँ तक कि कोई हमें सूली पर चढ़ाए दे या कोई ज़िंदा हालत में हमारे जिस्म से खाल उतारने की कोशिश करे, हम फिर भी दिल में ईमान को मज़बूत रखें। हम यह कहें कि तू हमारे जिस्म से जान तो निकाल सकता है लेकिन हमारे दिल से ईमान को नहीं निकाल सकता।

अल्लाह वालों की इस्तिक़ामत

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरे खिलाफ़त में दो मुसलमान काफ़िरों के हाथों गिरफ़्तार हुए। जब काफ़िर लोगों ने देखा तो उन्होंने बादशाह को मशूवरा दिया कि बजाए इसके कि

आप इनको क़त्ल करें या कोई सज़ा दें, आप इन लोगों को इस तरह क़ायल करें कि ये आपके दीन को अपना लें क्योंकि इनके चेहरों से ऐसी बहादुरी टपकती है कि आपकी फ़ौज के सिपाहसालार बन सकते हैं। लिहाज़ा उन्होंने कोशिश की कि हम किसी तरह इनको अपने दीन की तरफ़ माइल कर लें। पहले उन्होंने इनको लालच दिए लेकिन जब देखा की दाल नहीं गलती तो उन्हें डराया धमकाया यहाँ तक कि उन्हें यह कहा गया कि हम तुम्हें मौत के घाट उतार देंगे। बेहतर यह है कि तुम हमारे दीन को क़ुबूल कर लो। लेकिन उनका जवाब यही था :

﴿فاقض ما انت قاض انما تقضى هذه الحيوة الدنيا.(طٰہٰ:۷۲)﴾

तू जो कर सकता है अपनी तरफ़ से ज़ोर लगा ले, तू क्या करेगा। यही होगा कि तेरे इस तकलीफ़ देने से हमें मौत आ जाएगी। जब उनकी तरफ़ से यह जवाब सुना तो वे सटपटा उठे और परेशान हुए कि उनके साथ क्या मामला किया जाए। आख़िर थक कर उन्होंने यह प्लान बनाया कि हम एक जगह तेल गर्म करते हैं और इनमें से एक को उसमें डाल देते हैं। शायद उसकी वजह से दूसरा डर जाए और हमारे दीन को क़ुबूल कर ले। चलो दोनों नहीं तो इनमें से एक तो हाथ आ ही जाएगा। लिहाज़ा तेल गर्म किया गया और इन दोनों को उसके पास बिठाकर डराया गया कि अगर तुम हमारी बात क़ुबूल नहीं करते तो तुम्हें इस तेल के अंदर डाल दिया जाएगा। जब देखा कि वे अपनी बात पर जमे हुए हैं तो उन्होंने इनमें से एक को उठाकर गर्म तेल में डाल दिया। ज़रा तसव्वुर कीजिए कि जब तेल गर्म हो और उसमें गोश्त डाला जाए तो फिर किस तरह कबाब बनता है और क्या नक़्शा सामने आता है। इनमें से जब एक इस तरह कबाब बन गया तो

लोगों ने दूसरे के चेहरे के हाव-भाव देखे। जब उन्हें देखा तो उनकी आँखों में आँसू नज़र आए। वे समझ गए कि यह कुछ डर गए हैं। लिहाज़ा वे कहने लगे कि हम तो पहले ही कहते थे कि अगर तुम हमारी बात मान लोगे तो हम तुम्हें कुछ भी नहीं कहेंगे। चलो पहले के साथ तो जो कुछ पेश आया वह तो हो गया। अब अगर तुम हमारी बात मान लो तो हम तुम्हें तेल में नहीं डालेंगे। इस पर उन्होंने बादशाह को जवाब दिया कि शायद तू यह समझता है कि मैं इस बात से डर रहा हूँ कि जैसे तूने इसे तेल में डाला है इसी तरह तू मुझ भी तेल में डाल देगा, हर्गिज़ ऐसा नहीं है। हक़ीक़त यह है कि मुझे यह ख़्याल आ रहा है कि मेरी यह एक ही जान है। जब तुम मुझे एक दफ़ा तेल में डालोगे तो यह तो ख़त्म हो जाएगी। काश! मेरे जिस्म के बालों के बराबर मेरी जानें होतीं, तू मुझे उतनी दफ़ा तेल में डालता और मैं उतनी जानों का नज़राना अपने रब के हुज़ूर में पेश करता, सुब्हानअल्लाह।

सनफ़ नाज़ुक (नाज़ुक औरत) की इस्तिक़ामत

इस आजिज़ को सन् 1994 ई० में समरकंद जाने का मौक़ा मिला तो जामा मस्जिद कलाँ समरक़ंद में ख़ुत्बा जुमा दिया। नमाज़े जुमा के बाद कुछ नौजवान इस आजिज़ के पास आए और कहने लगे, हज़रत! आप हमारे घर तशरीफ़ ले चलें, हमारी वालिदा आपसे मिलना चाहती हैं। इस आजिज़ ने माज़रत कर दी कि इतने लोग यहाँ मौजूद हैं, मैं इनको छोड़कर वहाँ कैसे जाऊँ? मुफ़्ती आज़म समरक़ंद इस आजिज़ के साथ ही खड़े थे। वह कहने लगे, हज़रत! आप इनको इंकार न करें, मैं भी आपके साथ

चलूँगा। इनके हाँ जाना ज़रूरी है। मैंने कहा बहुत अच्छा। लिहाज़ा हम दोस्तों से मुलाक़ात करके चल पड़े।

रास्ते में मुफ़्ती आज़म बताने लगे कि इन नौजवानों की माँ एक मुजाहिद और पक्की मोमिना है। जब कम्युनिज़्म का इंक़लाब आया तो उस वक़्त वह बीस साल की नौजवान लड़की थी। उसके बाद सत्तर साल गुज़र चुके हैं। इस तरह उसकी उम्र नव्वे साल हो चुकी है। अल्लाह तआला ने कम्युनिज़्म के दौर में इतना मज़बूत ईमान दिया था कि इधर दहरियत का सैलाब आया और उधर यह नौजवान लड़कियों को दीन पर जमे रहने की तबलीग़ करती थी। उनसे घंटों बहस करती और उनको कलिमा पढ़ाकर ईमान पर ले आती। हम परेशान होते कि इस नौजवान लड़की की जान भी ख़तरे में है और यह दहरिए क़िस्म के फ़ौजी इसकी इज़्ज़त ख़राब करेंगे और इसे सूली पर लटका देंगे। लिहाज़ा हम इसे समझाते, बेटी! तू जवान उम्र है, तेरी इज़्ज़त आबरु और जान का मामला है, इतना खुलकर लोगों को इस्लाम की तबलीग़ न किया कर। मगर वह कहती कि मेरी इज़्ज़त व आबरु और जान इस्लाम से ज़्यादा क़ीमती नहीं है। मेरी जान अल्लाह के रास्ते में क़ुबूल हो गई तो क्या फ़र्क़ पड़ जाएगा। लिहाज़ा यह औरतों को खुलेआम तबलीग़ करती रही यहाँ तक कि सैकड़ों की तादाद में औरतें दहरियत से तोबा करके दोबारा मुसलमान हो गयीं। हमें इसका हर वक़्त ख़तरा रहता था। सब उलमा परेशान थे कि पता नहीं इस लड़की का क्या बनेगा? पता नहीं कौन सा दिन होगा जब इसे सूली पर लटका दिया जाएगा और इसको सब लोगों के सामने बेलिबास करके ज़लील और रुसवा कर दिया जाएगा। मगर

यह न घबराती, यह उनको दीन की तबलीग़ करती रहती यहाँ तक उसने सत्तर साल दीन की तबलीग़ की और हज़ारों औरतों के ईमान लाने का सबब बन गई। अब वह बीमार है, बूढ़ी है और चारपाई पर लेटी हुई है। इस औरत को किसी ने आपके बारे में किसी ने बताया कि पाकिस्तान से एक आलिम आए हैं, उसका जी चाहा कि वह आपसे बातचीत करे। इसलिए मैंने कहा कि आप इंकार न करें। इस आजिज़ ने जब यह सुना तो दिल बहुत खुश हुआ और कहा कि जब वह ऐसी अल्लाह की नेक बंदी है तो हम भी उनसे दुआ करवाएं।

जब हम उनके घर पहुँचे तो देखा कि सहन में उनकी चारपाई पड़ी हुई थी और वह उस पर लेटी हुई थी। लड़कों ने उसके ऊपर एक पतली सी चादर डाल दी। हम चारपाई से तक़रीबन एक मीटर दूर जाकर खड़े हो गए। इस आजिज़ ने जाते ही सलाम किया, सलाम करने बाद आजिज़ ने अर्ज़ किया, अम्मा! हमारे लिए दुआ मांगिए, हम आपकी दुआएं लेने के लिए आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए हैं। जब इस आजिज़ ने अर्ज़ किया तो उसने चादर के अंदर ही अपने हाथ उठाए और बूढ़ी आवाज़ में सबसे पहले यह दुआ मांगी, "ख़ुदाया! ईमान सलामत रखना।" यक़ीन कीजिए कि हमारी आँखों से आँसू आ गए। उस दिन एहसास हुआ कि ईमान कितनी बड़ी नेमत है कि सत्तर साल तक ईमान पर मेहनत करने वाली औरत अब भी जब दुआ मांगती है तो पहली बात कहती है, "ख़ुदाया ईमान सलामत रखना।"

सबसे क़ीमती दौलत

ईमान कोई मामूली चीज़ नहीं बल्कि यह बड़ी दौलत है जो

परवरदिगार ने हमें अता कर दी है। इसलिए हमें इसकी हिफ़ाज़त की हर वक़्त फ़िक्र रहनी चाहिए। हम इस ईमान को क़ीमती समझें और इसके मुक़ाबले में कोई चीज़ आए तो उसको ठोकर लगा दें। हमें चाहिए कि हम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से इस नेमत की हिफ़ाज़त मांगा करें कि ऐ अल्लाह! हमें इस नेमत की हिफ़ाज़त की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा। जान इतनी क़ीमती नहीं, इज़्ज़त इतनी क़ीमती नहीं बल्कि ईमान सबसे ज़्यादा क़ीमती है। इसलिए हम अल्लाह तआला पर पक्का ईमान रखें। हमें अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो कुछ बताया, उसके ऊपर पक्के रहें। इससे इंसान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के मक़्बूल बंदों में शामिल हो जाता है।

एक नौजवान की इस्तिक़ामत

समरक़ंद के इसी सफ़र में एक आलिम एक नौजवान को आजिज़ से मिलाने के लिए लाए और बताया कि यह वह ख़ुशनसीब नौजवान है जो रूसी इंक़लाब के ज़माने में रोज़ाना पाँच बार अज़ान देकर खुले आम नमाज़ें पढ़ता था। यह सुनकर इस आजिज़ को हैरत हुई और पूछा, वह कैसे? उस नौजवान ने अपनी पीठ पर से कपड़ा हटा दिया। हमने देखा तो उसकी पीठ के एक एक इंच पर ज़ख़्मों के निशानात मौजूद थे। इस आजिज़ ने पूछा यह क्या मामला है?

उसने अपनी दास्तान बयान करना शुरू की। वह कहने लगा, जब मैंने पहली बार अज़ान दी तो पुलिस वाले मुझे पकड़ कर ले गए और ख़ूब मारा। मैं जानबूझ कर इस तरह बन गया जिस

तरह कोई पागल होता है। वह जितना ज़्यादा मारते मैं उतना ज़्यादा हँसता। एक एक वक़्त में कई कई पुलिस वाले मारते मारते थक जाते मगर मैं अल्लाह के नाम पर मार खाते खाते न थकता, मुझे बिजली के झटके भी लगाए गए मगर मैंने बर्दाश्त कर लिए, मुझे कई कई घंटे बर्फ़ पर लिटाया गया, मुझे पूरी पूरी रात उल्टा लटकाया गया, मुझे गर्म चीज़ों से दाग़ा गया, मेरे नाखुन खींचे गए मगर मैं इस तरह महसूस करवाता जैसे कोई पागल होता है। मैं जानबूझकर पागलों वाली हरकतें करता था। पुलिस वालों ने एक साल मेरी पिटाई करने के बाद मुझे पागलख़ाने भिजवा दिया। वहाँ भी मैंने एक साल इसी तरह गुज़ारा यहाँ तक कि डाक्टर ने लिखकर दे दिया कि यह आदमी पागल है, इसका दिमाग़ ख़राब है, यह किसी को नुक़सान नहीं पहुँचाता, यह अपने आप में ही मग्न रहता है। लिहाज़ा अब इसको दोबारा गिरफ़्तार न किया जाए। इस तरह उस डाक्टर की रिपोर्ट पर मुझे आज़ाद कर दिया गया। जब मैं बाहर आया तो मैंने एक जगह पर छोटी सी मस्जिदनुमा जगह बनाई। मैं वहीं दिन में पाँच बार अज़ानें देता और पाँच नमाज़ें खुलेआम पढ़ा करता था। इस आजिज़ ने बढ़कर उसकी पेशानी पर बोसा दिया और कहा–

उस क़ौम को शमशीर की हाजत नहीं होती
हो जिसके जवानों की ख़ुदी सूरते फ़ौलाद

यह आजिज़ उस नौजवान के चेहरे को बार-बार देखता और उसकी साबित क़दमी पर रश्क करता रहा–

अज़ल से रच गई है सरबुलंदी अपनी फ़ितरत में
हमें कटना तो आता है मगर झुकना नहीं आता

सहाबा किराम के नज़दीक ईमान की क़द्र

अल्लाह तआला ने सहाबा किराम को ईमान की नेमत नसीब फ़रमाई तो उन्होंने उसकी क़द्र की और उसकी हिफ़ाजत के लिए हर वक़्त फ़िक्रमंद रहते थे। वह फ़रमाया करते थे ﴿تعلمنا الايمان ثم تعلمنا القرآن﴾ हम ने पहले ईमान सीखा उसके बाद फिर हम ने क़ुरआन सीखा। मेरे दोस्तो! वह ईमान जो सहाबा किराम ने बदर वाले दिन तलवारों के साया के नीचे पाया था। आज हम इस ईमान को पंखों की ठंडी हवा के नीचे ढूंढते फिरते हैं। क्या इस तरह ईमान मिल जाएगा? नहीं बल्कि उसके मेहनत करना पड़ती है। दीन की ख़ातिर जान माल व माल और सब कुछ क़ुर्बान करना पड़ता है। तब इंसान को ईमान की हरारत नसीब है।

वक़्त की एक अहम ज़रूरत

याद रखिए कि आज के दौर में इतने फ़ित्ने मौजूद हैं कि जिन लोगों के दिलों में ओहद पहाड़ जैसा ईमान है वह भी ऐसे लरज़ते और कांपते नज़र आते हैं जैसे उन्हें अपने हर लम्हे अपने मुरतद हो जाने का ख़ौफ़ हो। और अजीब बात है कि जिन लोगों के दिलों में ज़र्रा बराबर ईमान है वह उसकी हिफ़ाज़त से भी ग़ाफ़िल हैं और उन्हें इस बात का एहसास ही नहीं कि हमारे पास कितनी बड़ी दौलत मौजूद है। इसलिए ईमान की अहमियत का दिल में होना वक़्त की एक अहम ज़रूरत है।

शक से बचने की ज़रूरत

काफ़िरों की तरफ़ से इस्लामी मुल्कों में जो तन्ज़ीमें आती हैं वे

सब से पहले मुसलमानों के दिलों में शक पैदा कर देती हैं। और शक एक ऐसी ख़तरनाक और बुरी चीज़ है जो ईमान की बुनियाद को हिलाकर रख देती है। इसलिए नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने दुआ मांगी और शिर्क से पहले शक से पानाह मांगी :

اللهم انی اعوذبك من الشك والشرك والشقاق والنفاق وسوء الاخلاق.

ऐ अल्लाह! मैं शक से, शिर्क से, शिक़ाक़ से, निफ़ाक़ से और बुरे अख़्लाक़ से तेरी पनाह चाहता हूँ।

इसीलिए क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया ﴿ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ﴾ कि वह किताब है जिसमें कोई शक नहीं। अब यहाँ ग़ौर कीजिए कि अल्लाह तआला ने ﴿لَا رَيْبَ فِيْهِ﴾ पहले कहा और ﴿هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ. (البقرة:٢)﴾ बाद में कहा। इसलिए कि अगर शक रह गया तो हिदायत नहीं पा सकोगे। यही वजह है कि जो कुफ़्र की तहरीकें चल रही हैं वे ईमान वालों के दिलों में शक पैदा कर देती हैं और शक करने से ईमान ख़त्म हो जाता है।

ईमान के इज़्हार करने का तरीक़ा

अगर आप से कोई यह पूछे कि क्या आप मोमिन हैं तो उसे जवाब दीजिए ﴿انا مومن حقا﴾ मैं पक्का मोमिन हूँ। इसलिए कि यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत है कि उसने हमें कलिमा पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। इसमें शक वाली क्या बात है। कोई ढुल-मुल बात करने की ज़रूरत नहीं। इमाम शाफ़ई रह० ने जो यह फ़रमाया कि ﴿انا مومن انشاء الله﴾ तो उन्होंने अपने अंजाम और ख़ात्मे पर नज़र रखकर बात की है। यह उलमा का मक़ाम है जब कि हम आम लोग हैं। हमें एक ही बात करनी चाहिए कि ﴿انا

﴿مومن حقا﴾ और यह बात करते हुए पाँव के नीचे चट्टान होनी चाहिए।

मज़बूत ईमान की निशानी

इमाम राज़ी रह० ने वजूद बारी तआला पर सौ दलाइल जमा किए। एक बार उनकी शैतान से मुलाक़ात हो गई। वह शैतान से काफ़ी देर बहस करते रहे। इस दौरान उन्होंने फ़रमाया कि ऐ इबलीस! मेरा अल्लाह पर ईमान बड़ा पक्का है। तू मुझे बहका नहीं सकता। इब्लीस ने कहा हर्गिज़ नहीं। यह सामने देहाती खेत में हल चला रहा है। इसका ईमान आपसे ज़्यादा पक्का है। आपने पूछा वह कैसे? उसने कहा, अभी तमाशा देखें। चुनाँचे शैतान एक अजनबी आदमी की सूरत में उस देहाती के पास पहुँचा और कहने लगा कि ख़ुदा मौजूद नहीं है। उसने दो बड़ी-बड़ी गालियाँ दीं और पाँव से जूती निकाली कि उसकी पिटाई करे। इब्लीस वहाँ से भागा और इमाम राज़ी रह० से कहने लगा, देखा इसका ईमान इतना क़वी है कि वह सुनना भी गवारा नहीं करता कि कोई ख़ुदा के वजूद का इंकार करे। मरने मारने पर तुल गया। आपसे मैंने बहस शुरू की। आपने दलाइल देने शुरू किए। गोया यह बात सुन ली कि ख़ुदा मौजूद नहीं है। अब रही दलाइल की बात तो मैं क़वी दलीलें दे दूंगा तो आप फिसल जाएंगे। आपके दिल में ज़रा शक पैदा हो गया तो आप ईमान से महरूम हो जाएंगे।

ईमान जैसे चट्टान

याद रखना कि जो चीज़ें हल्की होती हैं वे पानी के साथ बह

जाती हैं जैसे लकड़ी, घास, तिनके, काग़ज़ वग़ैरह। क्या चट्टानें भी पानी के साथ बहती हैं? नहीं बल्कि वे पानी के रुख़ को मोड़ दिया करती हैं। मेरे दोस्तो! आज बेराह रवी, बेहयाई और नंगेपन का दरिया बह रहा है। आप चट्टान बन जाइए। उसके साथ बहने के बजाए उसके रुख़ को मोड़ दीजिए।

याद करता है ज़माना उन इंसानों को
रोक देते हैं जो बढ़ते हुए तूफ़ानों को

अल्हम्दुलिल्लाह हम मोमिन हैं, इसमें हमारा कोई कमाल नहीं बल्कि यह उस कमाल वाले परवरदिगार का कमाल है कि उसने हमें यह नेमत अता कर दी है। हमें चाहिए कि हम इस नेमत पर पक्के हो जाएं और पूरी ज़िंदगी इसी ईमान की मेहनत पर लगा दें। फिर देखना कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से कैसी मदद और रहमत नसीब होती है।

कम और ज़्यादा का चक्कर

ईमान क़िल्लत और कसरत को नहीं देखा। अभी एक आदमी कह रहा था कि हम बहुत थोड़े हैं। अरे थोड़े लोगों का क्या? अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةً بِإِذْنِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ مَعَ الصَّابِرِيْنَ۝ (البقرہ:۲۴۰)﴾

जब अल्लाह तआला की मदद शामिल होती है तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त चिड़ियों से बाज़ मरवा दिया करते हैं। इसलिए तादाद और इंतिज़ाम को न देखें बल्कि अल्लाह तआला की मदद को देखें। ज़ब मदद उतर आएगी तो इंशाअल्लाह कामयाबी हासिल हो जाएगी।

इस्लाम और ईमान में फ़र्क़

इस्लाम लाने का मतलब है फ़रमांबरदारी के लिए तैयार हो जाना। एक मुनाफ़िक़ आदमी अगर ज़ाहिर में कलिमा पढ़ता है तो उसको मुसलमान कहा जाता है लेकिन हक़ीक़त में वह ईमान से ख़ाली होता है। इस्लाम और ईमान में सिर्फ़ कैफ़ियत का फ़र्क़ है। इस्लाम का ताल्लुक़ ज़ाहिर से है और ईमान का ताल्लुक़ बातिन से है। जो कोई आदमी रियाकारी या धोका देने की नीयत से कलिमा पढ़े तो शरअ शरीफ़ में उसको मुसलमान समझा जाएगा मगर अल्लाह तआला के हाँ वह मोमिन नहीं होगा। जैसे कि मुनाफ़िक़ कहते थे कि हम ईमान ले आए लेकिन :

﴿وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ.○ (البقره:١٤)﴾

जब वे अपने शैतान दोस्तों के पास जाते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, हम मुसलमानों से मज़ाक़ करते थे।

मुनाफ़िक़ीन का एहसान जतलाने का वाक़िआ

बनू असद नामी एक क़बीले के लोगों ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में आकर कलिमा पढ़ा और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने अपने ईमान लाने का एहसान जतलाने लगे। हक़ीक़त में वे दिल से मुसलमान हुए ही नहीं थे। दुनिया के माली फ़ायदे हासिल करना उनका मक़सद था। लिहाज़ा वे कहने लगे कि ये दूसरे क़बीले वाले आप से लड़ाईयाँ लड़ते रहे और बाद में मुसलमान हुए लेकिन हम लोग बग़ैर लड़ाई के मुसलमान हो गए हैं। इस पर अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया ﴿قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا﴾ आप कह दीजिए कि तुम

ईमान नहीं लाए बल्कि यूँ कहो कि हम मुसलमान हुए ﴿وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيْمَانُ فِي قُلُوْبِكُمْ﴾ और अभी तुम्हारे दिलों में ईमान कामिल पैदा नहीं हुआ ﴿وَإِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ﴾ और अगर तुम इताअत करोगे अल्लाह और उसके रसूल की तो ﴿لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْئًا﴾ वह कमी न करेगा तुम्हारे कामों में कुछ भी ﴿إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ. (الحجرات ١٤)﴾ बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला और रहम करने वाला है।

इन आयतों पर ग़ौर किया जाए तो पता चलता है कि ये चीज़ बहुत ज़रूरी है कि हम अपने ज़बानी दावों के साथ-साथ अपने आमाल से अपने आपको क्या ज़ाहिर करते हैं। ज़बान से तो हम दूसरों को भी नसीहत कर रहे होते हैं लेकिन हमारे अमल से कितने लोग नसीहत पाते हैं।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.﴾

दीन इस्लाम के मुहाफ़िज़

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से यह दीन ताबईन किराम ने सीखा और ताबईन किराम से तबे ताबईन किराम ने सीखा। यह एक इल्मी सिलसिला है। हम तक जो दीन पहुँचा है यह तवातुर (सिलसिलावार) पहुँचा हैं। हम रात की तारीकी में नहीं बल्कि दिन की रोशनी में बात कर रहे हैं कि हमारा एक इल्मी शजरा है। यह एक ऐसा इल्मी ताल्लुक़ है जो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से चलता है और हमारे उन उस्तादों तक पहुँचता है जिन से हम ने दीन सीखा है।

दीनो इस्लाम के मुहाफ़िज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

وَالرَّبَّانِيُّوْنَ وَ الْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوا

عَلَيْهِ شُهَدَاءَ○ سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○

وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

सआदतों का मख़ज़न

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम इस दुनिया में दो चीज़ें लेकर आए। एक रोशन किताब और दूसरी चीज़ रोशन दिल। एक चमकता हुआ दिल और दूसरा दमकते हुए अख़्लाक़, एक इल्म कामिल और दूसरा अमल कामिल। काएनात की जितनी भी सआदतें हैं वे इल्म और अमल के अंदर ही रखी गई है।

गिरावट का दौर

आज का दौर इल्म और अमल की गिरावट का दौर है। हमारी नौजवान नस्ल इल्मी तौर पर और अमली तौर पर दीन से दूर होती जा रही है। हर आने वाला दिन यह फ़ासले बढ़ाता जा रहा है। यह हम सब के लिए फ़िक्र की घड़ी है।

सहाबा किराम की गवाही

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से जो दीन लेकर आए आप ने उसको ठीक-ठीक सहाबा किराम तक पहुँचा दिया यहाँ तक कि जब हज्जतुल-विदा के मौक़े पर सहाबा किराम के मजमे से गवाही मांगी तो एक लाख चौबीस हज़ार सहाबा किराम ने तस्दीक़ की कि आपने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने का हक़ अदा कर दिया है। इसके बाद आपने आसमान की तरफ़ देखकर फ़रमाया :

"ऐ अल्लाह! गवाह हो जाइए, ऐ अल्लाह! गवाह हो जाइए।"

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म व अमल के मुहाफ़िज़

सहाबा किराम ने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस दीन को सीखा और उसको अमली जामा पहनाया। वे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के इल्म व अमल दोनों के मुहाफ़िज़ बने। उन्होंने दीन को अपने दिमाग़ में भी महफ़ूज़ किया और अपने बदन पर अमल की शक्ल में भी महफ़ूज़ किया। गोया इल्म सीनों में भी महफ़ूज़ हुआ और सफ़ीनों में भी महफ़ूज़ हुआ। सहाबा किराम की जमाअत नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की अदाओं की मुहाफ़िज़ थी। वह आशिक़ों का मजमा था। अल्लाह तआला की चुनी हुई जमाअत थी। वे नबी अलैहिस्सलाम को जो कुछ करते देखते थे वे ख़ुद भी उसी तरह करते थे। उनको नबी अलैहिस्सलाम की मुबारक सुन्नतों पर अमल करने का इस हद

तक शौक़ होता था कि उनकी चाल ढाल और बातचीत हर चीज़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक तरीक़े के मुताबिक़ होती थी। बाहर मुल्कों के तजूरिबेकार और दुनिया देखे हुए लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिलने के लिए आते थे और नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम महफ़िल में तशरीफ़ फ़रमा होते थे मगर सब लोग अपने ज़ाहिर आमाल, बातचीत, चाल-ढाल और शख़्सियत में इस क़द्र एक जैसे होते थे कि उनको पूछना पड़ता था कि आप में से अल्लाह के नबी कौन हैं? हक़ीक़त यह है कि नक़ल असल के इतने क़रीब हो चुकी थी और ताबे और मतबूअ (जिसकी इत्तिबा की जाए) इतने क़रीब हो चुके थे कि दोनों के बीच फ़ासले सिमट चुके थे जिसकी वजह से लोगों को पहचान नहीं होती थी।

आक़ा और ग़ुलाम में हैरतनाक मुमासलत (शबाहत)

हिजरत के मौक़े पर जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम और सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना तैय्यबा जाते हैं तो वहाँ के समझदार लोग दोनों हज़रात को आते हुए देखते हैं तो वे पहचान नहीं कर पाते कि उनमें आक़ा कौन है और ग़ुलाम कौन है क्योंकि वे दोनों ज़ाहिरी रफ़्तार, बातचीत और किरदार में एक जैसे नज़र आ रहे थे यहाँ तक कि मदीना के लोग आगे बढ़कर हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु से मुसाफ़ा करना शुरू कर देते हैं। वे भी मुसाफ़ा करते रहे क्योंकि उन्होंने सोचा कि महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस वक़्त थके हुए हैं इसलिए उनको और न थकना पड़े। फिर जब सूरज निकला और उसकी

किरनों ने नबी अलैहिस्सलातु वसल्लाम के मुबारक चेहरे को छुआ तब वे लोग यह देखकर हैरान हुए कि जिसको अल्लाह का नबी समझकर मुसाफ़ा करते रहे वह उठे और उन्होंने अपनी चादर अपने महबूब के सर मुबारक के ऊपर तान दी। तब पता चला कि आक़ा कौन था और ग़ुलाम कौन था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा और इत्तिबाए सुन्नत

एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हज के लिए सफ़र पर चले। रास्ते में उन्होंने अपने सवारी को एक जगह पर रोका। नीचे उतरे और वीराने में एक तरफ़ को इस तरह गए जैसे कोई आदमी क़ज़ाए हाजत के लिए जाता है। फिर एक जगह पर बैठ गए। लगता यूँ था कि फ़राग़त हासिल करने के लिए बैठे हैं मगर फ़ारिग़ नहीं हुए बल्कि ऐसे ही वापस आ गए और ऊँट पर बैठ कर चल पड़े। साथियों ने पूछा हज़रत आपके इस अमल की वजह से हमें रुकना पड़ा हालाँकि आपको फ़राग़त हासिल करने की ज़रूरत नहीं थी। वह फ़रमाने लगे कि मैं इसलिए नहीं रुका था कि मुझे ज़रूरत थी बल्कि असल में बात यह है कि मैंने एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ इसी रास्ते से सफ़र किया था। इसी जगह पर मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रुके थे और आपने इस जगह पर जाकर क़ज़ाए हाजत से फ़राग़त हासिल की थी। मेरा जी चाहा कि मैं भी अपने महबूब के इस अमल के मुताबिक़ अपना अमल कर लूँ। इससे अंदाज़ा लगाइए कि वह नबी अलैहिस्सलातु

वस्सलाम की अदाओं के कितने मुहाफ़िज़ थे। वह जो कुछ नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़बान से सुनते थे या उनको करते हुए देखते थे उसके मुताबिक़ अमल करते थे।

फ़रमाने नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लिहाज़

मस्जिदे नबवी का एक दरवाज़ा था। जहाँ से अक्सर औरतें आया करती थीं और जब औरतें नहीं होती थीं तो कभी-कभी मर्द भी उस दरवाज़े से आ जाया करते थे। एक बार नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कितना अच्छा होता कि इस दरवाज़े को औरतों के लिए छोड़ दिया जाता। यह सुनकर मर्दों ने उस दरवाज़े से आना ही छोड़ दिया। हत्ताकि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर इन अल्फ़ाज़ को सुनने के बाद पूरी ज़िन्दगी में कभी भी उस दरवाज़े से मस्जिदे नबवी में दाख़िल नहीं हुए थे। सुब्हानअल्लाह! उनका एक-एक काम नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की अदाओं का मज़हर हुआ करता था। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको नबी का ऐसा इश्क़ अता फ़रमाया था कि उनको नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की हर-हर बात याद रहती थी। उन्होंने अपने दिमाग़ों में इस इल्म को याद रखा और अपने जिस्म के आज़ा पर भी इस इल्म पर अमल के ज़रिए से यादें ताज़ा रखीं।

एक हब्शी सहाबी और इत्तिबाए सुन्नत

एक सहाबी हब्शा के रहने वाले थे। वह जब भी नहाकर निकलते तो उनका जी चाहता था कि मैं भी अपने सर में इसी तरह बीच में मांग निकालूँ जिस तरह नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम निकाला करते हैं लेकिन हब्शी नसल होने की वजह से उनके बाल

घुंघरियाले, छोटे और सख़्त थे। इसलिए उनकी मांग नहीं निकल सकती थी। वह इस बात को सोचकर बड़े उदास रहते थे कि मेरे सर को मेरे महबूब के मुबारक सर की मुशाबिहत नहीं है। एक दिन चुल्हा जल रहा था। उन्होंने लोहे की सलाख़ लेकर उसको आग में गर्म की और अपने सर के दर्मियान सलाख़ को फेर लिया। गर्म सलाख़ के फिरने से उनके बाल भी जले और खाल भी जली। उससे ज़ख़्म हो गया। जब ज़ख़्म सही हो गया तो उनको अपने सर के बीच एक लकीर नज़र आती थी। लोगों ने कहा तुमने इतनी तकलीफ़ क्यों उठाई? वह फ़रमाने लगे कि मैंने तकलीफ़ तो बरदाश्त कर ली है लेकिन मुझे अब इस बात की बहुत ख़ुशी होती है कि सर को अब महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर मुबारक से मुशाबिहत नसीब हो गई।

हमारा इल्मी शजरा

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से यह दीन ताबईन किराम ने सीखा और ताबईन किराम से तबे ताबईन किराम ने सीखा। यह एक इल्मी सिलसिला है। हम तक जो दीन पहुँचा है यह तवातुर (सिलसिलावार) पहुँचा हैं। हम रात की तारीकी में नहीं बल्कि दिन की रोशनी में बात कर रहे हैं कि हमारा एक इल्मी शजरा है। यह एक ऐसा इल्मी ताल्लुक़ है जो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से चलता है और हमारे उन उस्तादों तक पहुँचता है जिन से हम ने दीन सीखा है।

उलमा किराम की ज़िम्मेदारी

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने दीने मतीन की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी

उम्मत के उलमा और मशाइख़ के कंधों पर डाल दी है। इर्शाद बारी तआला है ﴿وَالرَّبَّانِيُّوْنَ وَ الْاَحْبَارُ﴾ रब वाले यानी अल्लाह वाले। अहबार हबर की जमा है जिसके माने हैं उलमा यानी आलिम बिल्लाह और अल्लाह की किताब के आलिम। उनकी ज़िम्मेदारी क्या है? ﴿بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ(المائده:٤٤)﴾ उन्होंने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की किताब की हिफ़ाज़त करनी है। चुनाँचे जैसे दरिया के पुल के ऊपर चौकियाँ बनी हुई हैं और पुलिस उसकी हिफ़ाज़त करती है इसी तरह इन उलमा ने क़ुरआन की हर आयत पर डेरे डाले हैं, झुग्गियाँ बनाई हैं और तन-मन-धन की बाज़ी लगाकर उनकी हिफ़ाज़त की है।

उलमा किराम किसी आदमी को न तो किसी भी आयत की ज़ाहिरी में तब्दीली करने की इजाज़त देंगे और न ही उसके मानी ग़लत लेने की इजाज़त देंगे। अगर कोई ऐस नापाक हिम्मत करेगा तो यह हक़ को हक़ और बातिल को बातिल करके दिखाएंगे। यह इन उलमा की ज़िम्मेदारी है कि वे ऊपर वालों से इल्म सीखें और आने वालों तक पहुँचाएं। इसी तरह यह दीन इस उम्मत में चलता रहा है। अल्लाह का शुक्र है इस इल्मी सिलसिले का एक बहुत बड़ा पसमंज़र (बैकग्राउंड) है।

नौजवान नस्ल

मदरसों में जो कुछ पढ़ाया जाता है वह आज की कोई नई बात नहीं है। ये उन्हीं बड़ों से सीखी हुई बातें हैं जो आने वाली नस्लों को पढ़ाई जाती हैं। इसलिए हर मोमिन पर दो तरह की ज़िम्मेदारिया आती हैं, एक तो ख़ुद दीन सीखना और दूसरा अपनी

आने वाली नस्ल को दीन सिखाना। लेकिन अफ़सोस की बात यह है कि आज यह उम्मत अपनी नौजवान नस्ल को अंग्रेज़ी तहज़ीब की भट्टी में झोंक चुकी है। आप सुबह के वक़्त देखते होंगे कि सैंकड़ों बच्चे और बच्चियाँ खिले और तर व ताज़ा चेहरों के साथ स्कूलों, कालिजों और युनिवर्सिटियों में जा रहे होते हैं। उनमें कितने फ़ीसद बच्चे ऐसे होते हैं जो तफ़्सीर या हदीस का इल्म सीखने के लिए जा रहे होते हैं। कोई निस्बत भी नहीं बनती। हम अपनी औलादों को अंग्रेज़ी तालीम क्यों दिलवाते हैं? इसलिए कि यह ज़रूरते ज़िंदगी है और हमने उन्हें दीनी तालीम क्यों दिलवानी है ? इसलिए कि यह मक़सदे ज़िंदगी है। लेकिन कितनी अजीब बात है कि ज़रूरते ज़िंदगी के लिए पूरी क़ौम अपने बच्चों को रोज़ाना बाक़ायदगी के साथ भेजती है और बच्चों को मक़सदे ज़िंदगी सिखाने के लिए कभी तवज्जोह ही नहीं देते। दुनियावी तालीम तो हर घर के बच्चे स्कूलों और कॉलेजों, ग्राइमर स्कूलों, इंगलिश स्कूलों और साइंस कॉलेजों में बाक़ायदगी से हासिल करते हैं लेकिन बाक़ायदा दीनी तालीम नहीं सीख पा रहे।

हमारी नवजान नस्ल का दीन सुना सुनाया होता है। याद रखें कि सुने सुनाए दीन की जड़ें गहरी नहीं होतीं। उनको अगर कोई ज़्यादा बातूनी बंदा मिल जाएगा तो वह उनका रुख़ फेर देगा। इसी वजह से वे नवजान फ़ित्नों में उलझ जाते हैं और हमेशा शक शुब्हे का शिकार रहते हैं। यह आफ़त उन पर इसलिए आन पड़ती है कि उन्होंने दीन बाक़ायदा सीखा नहीं होता।

उन्होंने दीन कहाँ सीखा भला जा जा के मक्तब में
पले कॉलेज के चक्कर में मरे साहब के दफ़्तर में

लोग दीन दुनिया बराबर-बराबर का नारा तो लगा देते हैं लेकिन अमली तौर पर पूरी औलाद को दुनिया की तालीम खिा रहे होते हैं। दीनी तालीम के लिए बचपन में नाज़रा क़ुरआन पढ़ाने को काफ़ी समझते है। अल्लाह अल्लाह ख़ैर सल्ला। इस तर्ज़े अमल का नतीजा बहुत ख़तरनाक निकलता है।

बी०ए० पास लड़की की ख़स्ताहाली

हमारे जामिया में एक लड़की आई। उस वक़्त उसकी उम्र बाइस साल थी। वह बी०ए० कर चुकी थी। उसने जामिया की प्रिन्सिपल साहिबा से कहा कि मेरी अम्मी मेरी शादी करना चाहती है। मैं आपके पास इसलिए आई हूँ, आप मुझे ग़ुस्ल के मसाइल समझा दें। उन्होंने पूछा आप तो तक़रीबन पंद्रह साल की उम्र में जवान हुई होंगी? उसने कहा जी हाँ। उन्होंने कहा कि पंद्रह साल की उम्र से लेकर आप अब तक आप हर महीने ग़ुस्ल भी करती होंगी। उसने कहा, नहीं, मैं बाक़ायदा ग़ुस्ल तो नहीं किया करती थी। बस जैसे दूसरे नहाते थे वैसे ही मैं भी नहा लेती थी। मुझे तो यह भी नहीं पता था कि ग़ुस्ल भी करना होता है। अब उस नौजवान लड़की के नौ साल जो नापाकी में गुज़रे उसका ज़िम्मेदार कौन है? उसने नमाज़ें भी पढ़ी होंगी और तिलावत भी की होगी। लेकिन जब ग़ुस्ल ही ठीक नहीं था तो यह गुनाह किसको हुआ होगा? यक़ीनन उसके माँ-बाप को हुआ होगा।

माँ-बाप के ख़िलाफ़ मुक़दमा

इसलिए हमारी ज़िम्मेदारी है कि ख़ुद भी अपनी औलाद के सामने अमली नूमना बनकर दिखाएं और उन्हें भी दीन सीखने पर

लगाएं। अगर दीन सीखने पर नहीं लगाएंगे तो वह क़यामत के दिन हम पर मुक़दमा दायर कर देंगे। क़ुरआन अज़ीमुश्शान गवाही देता है कि रोज़े महशर जब उन बच्चों को अज़ाब के लिए भेजा तो वे कहेंगे :

﴿رَبَّنَا اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَ كُبَرَآءَ نَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلاً﴾

ऐ परवरदिगार! हम ने अपने बड़ों की पैरवी की। मुफ़स्सिरीन ले लिखा है कि यहाँ माँ-बाप की तरफ़ इशारा है। बेटी कहेगी कि ऐ परवरदिगार! मेरे माँ-बाप ने कहा था कि बेटी! कम्पयुटर के कोर्स कर लो, मैंने कर लिए थे। इन्होंने कहा था, बेटी! लेडी डॉक्टर बनकर दिखा दो, मैं बन गई थी। इन्होंने कहा था बेटी! तुम अब एम०ए० कर चुकी हो लिहाज़ा अब एम०एड० भी करके दिखा दो, मैंने कर लिया था। ऐ अल्लाह! इन्होंने जो लाइन दी थी हमने वह पूरी करके दिखाई। अगर ये दुनिया के उलूम की लाइन दे सकते थे तो यह भी तो कह सकते थे कि बेटी! तुम क़ुरआन मजीद तर्जुमे के साथ पढ़कर दिखाओ। तुम नबी अलैहिस्सलातु वसल्लाम की हदीस काइल्म हासिल करके दिखाओ। ऐ अल्लाह! अगर वे हमें यह कहते तो हम करके दिखाते। उन्होंने ही हमें रास्ते से भटका दिया था। ﴿رَبَّنَا اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ﴾ ऐ अल्लाह इनको दुगना अज़ाब दीजिए, ﴿وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا (الاحزاب ٦٨)﴾ और ऐ अल्लाह इन पर लानतों की बारिश बरसा दीजिए क्योंकि वे ख़ुद भी डूबे थे और हमें भी ले डूबे थे। अब बताइए कि जब औलाद कह रही होगी कि ऐ अल्लाह! हमारे माँ-बाप को दुगना अज़ाब दीजिए और इन पर लानतों की बारिश बरसा दीजिए तो फिर हमारी नमाज़ें किस काम आएंगी। इसलिए हमारी ज़िम्मेदारी है कि

हम दीन ख़ुद भी सीखें और अपनी आने वाली नस्लों तक दीन को पहुँचाएं।

हिफ़ाज़ते दीन की असल वजह

हर दौर में दीन पर बड़े हमले हुए। कभी काफ़िरों की तरफ़ से और कभी अंदर से मुनाफ़िक़ीन की तरफ़ से। लेकिन जहाँ से भी हमला हुआ उलमा की जमाअत ने उन तमाम सुराख़ों को बंद कर दिया। उन्होंने जानी और माली क़ुर्बानी देकर दीन की हिफ़ाज़त फ़रमाई। यही वजह है कि आज चौदह सौ साल का लंबा अरसा गुज़रने के बाद भी दीन अपनी असली हालत में हमारे पास महफ़ूज़ है। यह दीन हम तक हलवे खा-खा कर नहीं पहुँचा बल्कि क़ुर्बानियों के ज़रिए पहुँचा है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दिलदारी

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम तक जो दीन पहुँचाया इसमें महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कितनी क़ुर्बानी देनी पड़ी। ज़रा किताबें खोलकर देख लीजिए। हमारे आक़ा को रातों को नींद ही नहीं आती थी। सीना घुटता महसूस होता था और ख़ुद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनको तसल्लियाँ देते थे। फ़रमाते थे ﴿وَاصْبِرْ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا﴾ महबूब! आप सब्र फ़रमा लीजिए। आप हमारी आँखों के सामने हैं। ﴿وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ﴾ अपने रब के लिए सब्र कर लीजिए।

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِیْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ۝
اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ۝ (النحل ١٢٧ تا ١٢٨)

क्योंकि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब की हालत यह होती थी कि रातों को रोते रहते थे और मुबारक आँसुओं की लड़ियाँ मोतियों की तरह नीचे गिरती चली जाती थीं। न सिर्फ़ यही बल्कि लंबे-लंबे सज्दे फ़रमाया करते थे।

अबूजहल को दावते इस्लाम

किताबों में लिखा है कि अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अबूजहल के घर तीन हज़ार मर्तबा चलकर तशरीफ़ ले गए। एक बार बारिश और तूफ़ान था, लोग डर के मारे घरों में दुबके पड़े थे। अबूजहल के दरवाज़े पर दस्तक हुई। दस्तक सुनकर अबूजहल ने अपनी बीवी से कहा, लगता है कि आज कोई बड़ा ज़रूरतमंद इस बुरे मौसम में हमारे घर का दरवाज़ा खटखटा रहा है। अच्छा पता करता हूँ कि कौन है? मैं उसका सवाल पूरा कर दूंगा। अबूजहल बाहर निकला तो देखा कि अल्लाह के महबूब खड़े थे। उसने पूछा, आप इस वक़्त में आए? अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाने लगे कि मेरे दिल में यह बात आई कि मुमकिन है कि अल्लाह ताअला तेरे दिल को अब दीन के लिए मोम कर दिया हो।

सब्र की इंतिहा

नबी अलैहिस्सलातु वसल्लाम मक्का मुकर्रमा के बाज़ार में से गुज़र रहे थे। कुछ नवजवानों ने अल्लाह के महबूब को देखा और कहा अच्छा यही वह आदमी है जो हमारे माबूदों को बुरा कहते हैं। चुनाँचे उन्होंने अल्लाह के महबूब को घेर लिया। उनमें से

किसी बदबख़्त ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमामे मुबारक को खींचा, किसी पत्थर दिल ने आप के मुबारक बालों को खींचा, किसी ने कपड़ों को खींचा। उन्होंने अल्लाह के महबूब को बहुत परेशान किया। मक्का के इन कमीनों में से एक कमीने ने नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के चेहरए अनवर पर थूक दिया। उसको देखकर दूसरे ने थूक दिया यहाँ तक कि सब कमीनों ने थूका। उनहोंने इसी पर बस नहीं किया बल्कि उनमें से एक बदबख़्त ने मिट्टी लेकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरए अनवर पर फेंक दी जिसकी वजह से वज़्ज़ुहा वाले चेहरए अनवर पर कीचड़ सा बन गया। इतना परेशान करने के बाद जब वे थक गए तो वे कहने लगे, अच्छा हम दोबारा आप से पूछेंगे कि आप हमारे लात व मनात को कैसे बुरा कहते हैं।

यह कहकर वे ख़बीस चले गए। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बड़ी बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को पता चला तो वह प्याले में पानी लेकर आयीं। जब उन्होंने अब्बा हुज़ूर के चेहरे अनवर पर कीचड़ बना बना हुआ देखा तो उनकी आँखों में आँसू आ गए। नबी अलैहिस्सलाम ने उनको तसल्ली दी और फ़रमाया बेटी! आप रो नहीं, जिस दीन को तेरा बाप लेकर आया है एक वक़्त आएगा कि वह हर कच्चे और पक्के मकान में पहुँच कर रहेगा।

बेटी हो तो ऐसी

अल्लाह के महबूब फ़ाक़े बर्दाश्त फ़रमाया करते थे। सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने घर में खाना खा रही थीं। उन्हें

कोई ख़्याल आया और आधी रोटी लपेटकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़ियारत के लिए तशरीफ़ लायीं। अल्लाह के महबूब से मिलीं। आपन पूछा बेटी फ़ातिमा! कैसे आना हुआ? उन्होंने कहा ऐ अल्लाह के महबूब! मैंने रोटियाँ पकाई थीं, सब के हिस्से में एक-एक रोटी आई थी। जब मै। रोटी खाने लगी तो मेरे दिल में ख़्याल आया, फ़ातिमा! तू खुद तो खा रही है पता नहीं कि तेरे वालिद गरामी को कुछ खाने के लिए मिला होगा या नहीं। लिहाज़ा मैंने आधी रोटी खाई और बाक़ी आधी रोटी आपको हदिए के तौर पर पेश करने के लिए हाज़िर हुई हूँ। सुब्हानअल्लाह ऐसी बेटी अल्लाह तआला हर एक को अता फ़रमाए। नबी अलैहिस्सलातु वसल्लाम ने रोटी के उस आधे हिस्से को लिया और एक टुकड़ा में मुबारक मुँह में डाल कर फ़रमाया, फ़ातिमा! मुझे क़सम है उस रब्बे ज़ुलजलाल की जिसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जान है, तीन दिन से मेरे मुँह में रोटी का कोई टुकड़ा नहीं गया। अल्लाहु अकबर अल्लाह के महबूब ने यूँ मुशक़्क़तों से दीन पहुँचाया।

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु पर ज़ुल्म व सितम

सहाबा किराम को भी बेहद तकलीफ़ें दी गयीं। हज़रत बिलाल को कितनी तकलीफ़ें दी जाती थीं। सख़्त गर्मी के मौसम में तपती रेत पर लिटाकर ऊपर चट्टान रख दी जाती थी। मगर इतने ज़ुल्म व सितम के बावजूद अभी अहद! अहद कहते थे।

सैय्यदा ज़ुन्नैरा रज़ियल्लाहु अन्हा पर ज़ुल्म व सितम

सैय्यदा ज़ुन्नैरा को बुढ़ापे की हालत में इतना मारा गया कि

उनकी आँखों की रोशनी चली गई। अबूजहल ने कहा, लात व मनात ने तुम्हारी आँखों की रोशनी को छीन लिया। सैय्यदा ज़ुन्नैरा ने पहले तो इस तकलीफ़ को बर्दाश्त कर लिया था लेकिन जब अबूजहल ने कहा कि लात तुम्हारी बीनाई को छीन लिया तो फूट फूट कर रोने लग गयीं।

वह रोते रोते कमरे में चली गयीं और सज्दे में सर डालकर परवरदिगार आलम से फ़रियाद करने लगीं कि परवरदिगार! इन्होंने मुझे इतना मारा कि मेरी रोशनी चली गई। मैंने आपकी ख़ातिर हर तकलीफ़ को बर्दाश्त कर लिया। अब ये मुझे ताना दे रहे हैं कि लात ने तेरी आँखों को रोशनी को छीन लिया है। ऐ मालिक! जब रोशनी नहीं थी तब भी आपने ही दी थी ओर जब थी तो आप ने ही वापस ली थी। मेरे मौला! मेरी बीनाई वापस अता फ़रमा दीजिए। अभी उन्होंने सज्दे से सर उठाया था कि अल्लाह तआला ने बीनाई दोबारा अता फ़रमा दी, सुब्हानअल्लाह।

दीन के दुश्मनों के सामने सीसा पिलाई दीवारें

यह दीन नबी अलैहिस्सलातु वसस्सलाम से सहाबा किराम तक पहुँचा और सहाबा किराम से आगे हम तक पहुँचा। यह सिलसिला लगातार हर दौर और हर ज़माने में चलता रहा। वक़्त के बादशाहों ओर मतलबी लोगों ने इस दीन के ख़ज़ाने पर डाके डालने की कोशिश की। उन्होंने इसको अपनी मनमर्ज़ी के मुताबिक़ मोड़ने की कोशिश की कि यह दीन हमारी ख़्वाहिशा का मजमुआ बन जाए मगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उन उलमाए किराम को जज़ाए ख़ैर दें जो उनके सामने चट्टान बनकर खड़े हो गए

और उन्होंने कहा कि यह हो ही नहीं सकता कि हम तुम्हें दीन के अहकाम में रद्द व बदल करने की इजाज़त दें। इस मिशन में उन्हें बड़ी-बड़ी क़ुर्बानियाँ देनी पड़ीं।

हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की इस्तिक़ामत

ऐसा भी हुआ कि हिज्जाज बिन यूसुफ़ के सामने हज़रत सईद बिन जुबैर रह० खड़े हैं। हिज्जाज कहता है कि मैं अभी तुम्हें फ़ना फ़िन्नार करता हूँ मगर इस्तिक़ामत के पहाड़ सईद बिन जुबैर रह० कहते हैं कि मैं तुझे दोज़ख़ और जन्नत का मालिक नहीं समझता। जी हाँ वह ऐसे थे जो निडर होकर जाबिर सुल्तान के सामने कलिमाए हक़ कहते थे।

इमामे आज़म रहतुल्लाहि अलैहि पर ज़ुल्म व सितम

इमाम आज़म रह० का जनाज़ा जेल के अंदर से निकला। उनको Slow Poison दी गई क्योंकि हाकिम लोग देख रहे थे कि उनके शागिर्दों में इज़ाफ़ा होता जा रहा है। लिहाज़ा उन्हें डर था कि कहीं वह हमारे लिए ख़तरा न बन जाएं।

इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि की जुर्रात

हज़रत इमाम मालिक रह० से फ़तवा पूछा गया। उन्होंने हाकिमों की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ फ़तवा दिया। उनको सज़ा के तौर पर गधे पर बिठा दिया गया और उनके चेहरे पर स्याही मल दी गई। फिर वक़्त के हाकिम ने हुक्म दिया कि उन्हें मदीना में फिराओ। लिहाज़ा मदीना मुनव्वरा के इमाम और फ़क़ीह के चेहरे

को स्याह कर दिया गया और गधे पर बिठाकर फिराया गया। अब हज़रत इमाम मालिक रह० की जुर्रात देखिए कि फ़रमाने लगे, लोगो! तुम में जो पहचानते हो कि मैं इमाम मालिक हूँ वे तो पहचानते हैं और जो नहीं पहचानते हो वे भी सुन लें कि मैं अनस का बेटा मालिक हूँ ﴿ولا يخافون لومة لائم﴾ दीन के मामले में उन्होंने मालामत करने वाले की मलामत की कोई परवाह नहीं की।

इमाम अहमद बिन हंबल रह० पर ज़ुल्म व सितम

इमाम अहमद बिन हंबल रह० को मसअला ख़ल्के क़ुरआन में ऐसे सख़्त कोड़े लगाए गए कि वह कोड़े अगर हाथी को भी मारे जाते तो वह भी बिलबिला उठता। उनके जिस्म पर जहाँ कोड़े लगे वहाँ का गोश मुर्दा हो गया था। उस गोश्त को क़ैंची के साथ काटकर वहाँ मरहम लगाया गया। वह दीन हिफ़ाज़त के लिए इस्तिक़ामत के साथ डटे रहे।

चिराग़े ईमान को रोशन करना

दीन को मिटाने के लिए कुफ़्र की इतनी तेज़ आँधियाँ चलीं मगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फिर भी ईमान के चिराग़ को जलाए रखा।

शकिस्ता दिल से जो आह निकले तो फ़र्श क्या अर्श काँप उठेगा
दरे क़फ़स जो वा न होगा तो एक दिन टूट कर रहेगा
किसी के रोके से हक़ का पैग़ाम कब रुका है जो अब रुकेगा।
चिराग़े ईमान तो आँधियों में जला है जला करेगा

अंग्रेज़ के दौर में मुसलमानों के पास इंतिज़ाम नहीं था। उलमा

ने चटाइयों पर बैठकर जिंदगी गुज़ार दी। मोहतरम जमाअत! इंसान अपनी ग़रीब तो बर्दाश्त कर लेता है मगर औलाद को ग़रीबी में देखना बहुत मुश्किल है। मगर उन उलमा ने ख़ुद भी चटाईयों पर ज़िंदगी गुज़ार दी और अपनी औलादों को भी इस तरह मशक़्क़तों से निमटने के लिए ज़हनी तौर पर तैयार किया। गोया उनके लिए भी इन्हीं चटाईयों को पसन्द किया। यह कोई मामूली क़ुर्बानी नहीं है। उन्होंने क़दम क़दम पर आम लोगों को बताया कि हम इस दीन को सीने से लगाकर रखें।

हिन्द व पाक में अंग्रेज़ों के ज़ुल्म व सितम

जब 1857 ई० की जंग अंग्रेज़ ने जीती तो उसने मुसलमानों के चारों तरफ़ शिकंजा कस दिया। उन्होंने माहिर लोगों को बुलवाया और उनसे कहा कि जाएज़ा लेकर हमें बताओ कि मुसलामनों की तहरीकें कैसे ख़त्म करें। उन माहिरीन ने जाएज़ा लेकर तीन बातें बतायीं और कहा कि अगर तुम ये तीन काम कर लो तो मुसलमानों की तहरीक ख़त्म हो जाएगी :

1. मुसलमानों से क़ुरआन छीन लो,
2. उलमा को ख़त्म कर दो और
3. आम लोगों को अंग्रेज़ी तालीम इस अंदाज़ से दो कि उन्हें अपने रंग में रंग लो।

चुनाँचे अंग्रेज़ ने सबसे पहले क़ुरआन मजीद के लाखों नुस्ख़ें ज़ब्त कर लिए फिर उन्होंने उलमा के लिए बाक़ायदा तहरीक चलाई और चौदह हज़ार उलमा को फांसी दी। "अंग्रेज़ के बाग़ी मुसलमान" किताब में लिखा हुआ है कि देहली से लेकर पेशावर

तक जीटी रोड के इर्दगिर्द पीपल और बड़ के बड़े पेड़ों के ऊपर फंदा लटकाया गया। उलमा को उन पर फांसी दी जाती और उनकी लाशों को लटकने दिया जाता। कोई उतारने वाला नहीं होता था। कई कई दिनों तक लाशें लटकी रहतीं ताकि आम लोगों के दिलों में ख़ौफ़ बैठ जाए कि हम जो मर्ज़ी बनें मगर आलिम न बनेंगे।

बादशाही मस्जिद के दरवाज़े पर फांसी का फंदा लटकाया गया। ड्यूटी बदल बदल करे उलमा को एक के बाद दूसरे चौबीस घंटे फ़ांसी दी जाती थी। एक आलिम को लटकाया जाता, जब उसकी लाश फड़कती रहती उस वक़्त तक लोग मंज़र देखते रहते। जब उसकी लाश ठंडी हो जाती तो फिर दूसरे आलिम को लटकाया जाता।

बाग़ (आज़ाद कश्मीर) में मंग के इलाक़े में अब भी एक ऐसा पेड़ मौजूद है जिस पर दो हज़रात सब्ज़ अली और रमली को लटकाकर उनके ज़िंदा जिस्म से खाल उतार ली गई थी। इस आजिज़ को बाज़ उलमा ने जाकर वह पेड़ दिखाया भी है।

एक ज़्यादती भरा सफ़र

मौलाना जाफ़र थांसेरी रह० अपनी किताब "तारीख़ काला पानी" में लिखते हैं कि हमारा उलमा का एक क़ाफ़िला था। अंग्रेज़ ने उस क़ाफ़िले को देहली से लाहौर भेजा। मगर जिस अंग्रेज़ ने देहली से लाहौर भेजा उसने हमें सिर्फ़ हथकड़ियाँ लगायीं। लिहाज़ा हम बड़े इत्मिनान से अल्लाह अल्लाह करते हुए देहली से लाहौर पहुँच गए लेकिन लाहौर जेल का इंचार्ज बहुत ही

जाबिर और ज़ालिम क़िस्म का आदमी था। उसने कहा ये मौलवी आराम के साथ सफ़र करके यहाँ आ गए। अब मैं इनको सबक़ सिखाउंगा कि ये हमारे साथ कैसे ग़द्दारी करते हैं और हमारे नमक हराम बनते हैं। लिहाज़ा उसने रेलगाड़ी के अंदर छोटे छोटे केबिन बनवाए और हर केबिन में चारों तरफ़ कील लगवाए। वह फ़रमाते हैं कि हमारे बैठने की जगह के चारों तरफ़ एक-एक दो-दो इंच के फ़ासले पर कील लगे हुए थे। उन केबिनों में हमें बिठाया गया। जब रेलगाड़ी चलती और पीछे झटका लगता तो हमारे जिस्म पर पीछे कील चुभ जाते, जब दायीं तरफ़ झटका लगता तो दायीं तरफ़ कील चुभ जाते, जब बायीं तरफ़ झटका लगता तो बायीं तरफ़ कील चुभ जाते। चलती हुई गाड़ी पर हमें पता नहीं होता था कि ब्रेक लगनी है या नहीं। जब एकदम ब्रेक लगती तो हमारे इन ज़ख़्मों पर फिर कील चुभते। फ़रमाते हैं कि वहीं पसीना भी निकलता और ख़ून भी बहता, सो भी नहीं सकते थे। हमें उन्होंने लाहौर से मुल्तान भेजना था। यह तकलीफ़ देने वाला सफ़र एक माह में तय हुआ और हम पूरा महीना दिन में भी बैठे रहते और रात को भी बैठे रहते। उसी जगह पर हमारा पेशाब पाख़ाना भी निकल जाता। हमारे लिए पानी वग़ैरह भी कुछ नहीं होता जिसकी वजह से बदबू भी बहुत ज़्यादा थी। इतनी सख़्त सज़ा इसलिए दी कि हम तंग आकर कह दें कि जी आप जो कुछ कहते हैं हम मान लेते हैं मगर क़ुर्बान जाएं उनकी अज़मतों पर कि उन्होंने यह तकलीफ़ तो बरदाश्त कर ली मगर उन्होंने फ़िरंगी की बात को मानना पसंद न किया।

फ़रमाते हैं कि एक महीने के इतने मुशक़्क़त भरे सफ़र के

बाद जब हम मुल्तान पहुँचे तो वहाँ पर मौजूद हाकिम ने कहा कि इन लोगों को हम कल फांसी के फंदे पर लटका देंगे। जब हमने फांसी की ख़बर सुनी तो हमारे दिल ख़ुश हुए कि अब हमें अपना मक़सद नसीब हो जाएगा।

अगले दिन वह जब हमें फांसी देने के लिए आया तो उसने देखा कि हमारे चेहरों पर रौनक़ थी क्योंकि थकावट ख़त्म हो चुकी थी। हमारे तर व ताज़ा चेहरों की चमक देखकर वह कहने लगा ओ मुल्लाओ! तुम्हारे चेहरों पर मुझे ताज़गी क्यों नज़र आ रही है? हम में से एक ने जवाब दिया कि हमारे चेहरे इसलिए तर व ताज़ा है कि आप हमें फांसी देंगे तो हमें शहादत नसीब हो जाएगी। जब उसने यह बात सुनी तो वहीं से वापस दफ़्तर चला गया और उसने अपनी बड़ी आथोर्टी से राब्ता किया और बताया कि ये तो ख़ुश हैं कि इनको फांसी दे दी जाए।

लिहाज़ा उसने वापस आकर ऐलान किया कि ओ मुल्लाओ! तुम ख़ुश होकर मौत मांगते हो लेकिन हम तुम्हें मौत भी नहीं देना चाहते। हमने यह फ़ैसला किया है कि तुम्हें काला पानी भेज दिया जाए। इस जगह पर पहुँचकर मौलाना जाफ़र थांसेरी रह० ने एक शे'र लिखा, फ़रमाते हैं—

मुस्तहिक़े दार को हुक्म नज़रबंदी मिला
क्या कहूँ कैसे रिहाई होते होते रह गई

सब्र की आज़माइश की एक घड़ी

फ़रमाते हैं कि इससे भी बड़ी क़ुर्बानी का वक़्त वह आया जब वह हमें काला पानी भेज रहे थे। उस वक़्त उन्होंने मंसूबाबंदी के

तहत हमारे बेटों, बेटियों, बीवियों और बाक़ी छोटे बड़ों को बुलवा लिया और हमें ज़ंजीरों में बांधकर और बेड़ियाँ पहनाकर उनके सामने सामने पेश किया और उनसे कहा कि तुम इन्हें मना लो। अगर ये कह दें कि हम फ़िरंगी के ग़द्दार नहीं हैं तो हम इन्हें अभी तुम्हारे साथ घर भेज देते हैं। फ़रमाते हैं कि अब बीवी रो रही थी, बेटी भी रो रही थी, मेरा एक छोटा बेटा भी रो रहा था और मेरे साथ लिपट कर कह रहा था कि अब्बू! आप यह कह क्यों नहीं देते। बस आप कहकर हमारे साथ घर चलें। फ़रमाते हैं कि मेरे लिए इससे बड़ा डगमगाने वाला लम्हा कोई नहीं था। जब मेरा बेटा बहुत ज़्यादा रोया तो मैंने अपनी बीवी को इशारा किया बच्चे को सीने से लगाओ और उस बच्चे से कहा कि बेटा! अगर ज़िंदगी रही तो तुम्हारा बाप तुम्हें दुनिया में आकर मिलेगा और अगर न रही तो फिर क़यामत के दिन हौज़े कौसर पर हमारी मुलाक़ात होगी।

मैं सलाम करता हूँ उन उलमा की अज़मत को, मैं सलाम करता हूँ उनकी इस्तिक़ामत को जिन्होंने इस क़द्र क़ुर्बानियाँ देकर दीन की किश्ती को बहरे ज़ुलमात के भंवर से महफ़ूज़ रखा और अल्लाह का शुक्र है कि हमारे पास आज यह दीन महफ़ूज़ हालत में मौजूद है।

औरतों की तालीम की अहमियत

आज नवजवान नस्ल को दीन पहुँचाने का सबसे बेहतरीन तरीक़ा अपनी बेटियों को दीनी तालीम दिलवाना है। यह आजिज़ ज़िम्मेदारी के साथ कहता है कि अगर किसी बंदे के दो बच्चे हों,

एक बेटा हो और दूसरी बेटी और उसके ज़रिए इतने हों कि वह इन दो में से किसी एक को पढ़ा सकता है तो उसको चाहिए कि बेटी को दीन की तालीम पहले दिलवाए इसलिए–

"मर्द पढ़ा, फ़र्द पढ़ा औरत पढ़ी ख़ानदान पढ़ा।"

जब एक बच्ची दीन की तालीम हासिल कर लेती है तो फिर पूरे घर के माहौल पर उसका असर हुआ करता है।

लड़कों के बिगाड़ की वजह

आज क्योंकि घरों में औरतों में दीनी तालीम की कमी होती है, इसलिए बच्चे बिगड़ते चले जा रहे हैं। आज का बाप बेटियों को आँख दिखाकर घर का पाबन्द बना लेता है मगर अपने बेटों पर उसका कोई हुक्म नहीं चलता। जिस घर को भी देखें लड़के बाप के नाफ़रमान नज़र आएंगे। फिर रोते हैं और कहते हैं कि न पढ़ सके न नौकरियाँ करते हैं न बात मानते हैं। इसकी क्या वजह है? इसकी बुनियादी वजह यह है कि उनको दीन नहीं पढ़ाया गया।

औरतों की तालीम में एक बड़ी रुकावट

आज अगर मदरसों में पढ़ने के लिए बेटियाँ तैयार होती हैं तो माँ-बाप रुकावटें डालते हैं। हैरत होती है युनिवर्सिटी के हॉस्टल में उनको अकेला रखते हैं हालाँकि वहाँ किसी क़िस्म की कोई गारन्टी नहीं होती कि वहाँ उसका क्या मामला बनेगा। इसके ख़िलाफ़ परहेज़गारी वाले माहौल में जहाँ औरतें पढ़ाती हैं वहाँ बेटी को लाने के लिए रुकावटें डालते हैं कि जी लोग क्या कहेंगे कि

बेटी को मदरसे भेजते हैं। यह सिर्फ़ अपने अंदर का रोग होता है। शैतान ऐसा काम नहीं करने देता।

विरासते नबवी की हिफ़ाज़त

हमें चाहिए कि हम इस वक़्त यह नीयत कर लें कि अपनी औलादों को बाक़ायदा दीन की तालीम दिलवाएंगे। इससे हम नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की उस लाई हुई नेमत की हिफ़ाज़त में शरीक हो जाएंगे जिस की ख़ातिर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मुबारक आँसू बहाए थे और जिसके ख़ातिर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का मुबारक ख़ून बहा। इस नेमत की हिफ़ाज़त की वजह से हम भी क़यामत के दिन मुँह दिखाने के लायक़ हो जाएं।

मुसलमानों की कमज़ोरी

हम न सिर्फ़ अपनी औलादों को दीन की तालीम दिलाएं बल्कि उनको दीन आगे पहुँचाने की भी तालीम दें। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, ﴿بدء الاسلام غريبا وسيعود غريبا﴾ इस्लाम इब्तिदा में भी बे यार व मददगार था और क़रीब क़यामत में भी यह एक बार फिर बे यार व मददगार हो जाएगा। लोग इसके माने यह समझ लेते हैं कि इस्लाम कमज़ोर हो जाएगा। नहीं! नहीं!! नहीं!!! इस्लाम कमज़ोर नहीं है बल्कि इस्लाम आज भी उतना ही ताक़तवर है मगर मुसलमान कमज़ोर हैं। जो इस्लाम का रोना रोते हैं वे दरअसल अपनी मुसलमानी का रोना रोते हैं। इस्लाम यक़ीनन इसी तरह मज़बूत है और महफ़ूज़ है जैसा सहाबा किराम के दौर में महफ़ूज़ था। आज अल्हम्दुलिल्लाह हमारे पास

क़ुरआन भी मौजूद है, सुन्नत भी है, हदीस भी है और चीज़ महफ़ूज़ भी है। लेकिन आज ये चीज़े बेयार व मददगार हैं। यही वजह है कि अंग्रेज़ी तालीम की सरपरस्ती के लिए नीचे से ऊपर तक हुकूमती लोग सब तैयार हैं लेकिन मदरसों के लिए कोई प्लानिंग नहीं है। अब बताइए कि दीन बेयार व मददगार हो चुका है या नहीं। मुसलमानों के अपने घरों में नबी अलैहिस्सलातु वसल्लाम की मुबारक सुन्नतों को ज़िब्ह किया जाता है और उस पर दुख खाने वाला कोई नहीं होता। बेटा अगर किसी मज़मून में फेल हो जाए तो बाप उसको घर से निकालने के लिए तैयार हो जाता है और अगर वही बेटा बेटा सुन्नत नहीं रखता या फ़र्ज़ नमाज़ नहीं पढ़ता तो या मस्जिद में नमाज़ में नमाज़े जुमा पढ़ने नहीं जाता तो बाप उसको घर से नहीं निकालेगा। जो बेटा कमाकर लाता है, हलाल या हराम वह माँ-बाप की आँख का तारा होता है। आज हमारी यह हालत है। इसलिए हम अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस करते हुए ख़ुद भी दीन सीखें औ दूसरों को भी दीन सीखने की तर्ग़ीब दें।

हिफ़ाज़ते दीन के क़िला

ये जामिआत आज के दौर में दीन की हिफ़ाज़त के क़िले हैं। बच्चों के हैं या बच्चियों के, इन जामिआत से राब्ता रखिए और दीनी तालीम पाने के लिए अपनी औलादों को भेजिए। इन की हर तरह से मदद कीजिए। इसलिए कि अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿يَآ أَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوٓا إِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ.﴾

ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह

तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दमों को जमा देगा। क्या मतलब? ख़ुदा नख़्वास्ता क्या अल्लाह तआला के ख़ज़ाने को चोर और डाकू पड़ गए हैं जो मदद की ज़रूरत पड़ी नहीं बल्कि इसका मतलब यह है कि अगर तुम अल्लाह के दीन की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दमों को जमा देगा। आज हर बंदा अल्लाह की मदद को उतरते हुए महसूस नहीं कर रहा है, क्यों? इसलिए कि हम दीन की मदद नहीं कर रहे। अगर यह दीन की मदद करते तो क़ुरआन कहता है कि ﴿وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ﴾ वह तुम्हारे क़दमों को ज़मीन पर जमा देते। तो हमारे लिए दीन व दुनिया की कामयाबी इसी में है कि हम ख़ुद भी दीनदार बनें और अपने बच्चों को भी दीनदार बनाने की कोशिश करें।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हम सब का यहाँ आना क़ुबूल फ़रमा ले और इसके बदले हमें अपनी बख़्शिश किए हुए गुनाहगारों में शामिल फ़रमा लें। (आमीन सुम्मा आमीन)

❋ ❋ ❋

इस्तिक़ामत की फ़ज़ीलत

कुछ चीज़ें वज़न में इतनी हल्की होती हैं कि वे पानी के साथ बह जाती हैं मसलन काग़ज़ और घास-फूस वग़ैरह। लेकिन कुछ चट्टाने होती हैं जो पानी के साथ बहती नहीं बल्कि वे पानी का रुख़ मोड़ देती हैं। हम मोमिन हैं इसलिए हम घास फूँस और तिनके न बनें बल्कि हम चट्टान बन जाएं और बहते हुए पानी का रुख़ फैर दें।

इस्तिक़ामत की फ़ज़ीलत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo
اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰئِكَةُ اَلَّا
تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَo نَحْنُ
اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْ
اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ. نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍo سُبْحٰنَ
رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَo وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَo
وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَo

शरिअत पर चलने में तीन रुकावटें

शरिअत व सुन्नत के रास्ते पर चलते हुए इंसान को तीन क़िस्म की रुकावटें पेश आती हैं। सबसे पहले नफ़्स की तरफ़ से रुकावट होती है। नफ़्स चाहता है कि मेरी हर ख़्वाहिश पूरी हो। जिस तरह छोटा बच्चा ज़िद करता है कि मेरी हर बात पूरी होनी चाहिए इसी तरह इंसान का नफ़्स भी हर काम में ज़िद करता है कि मेरी चाहत पूरी होनी चाहिए।

दूसरी रुकावट शैतान की तरफ़ से होती है। वह भी नेकी के रास्ते से हटाकर इंसान को गुनाह के रास्ते पर लगाता है। वह रोड़े

अटकाता है और गुनाहों को सजाकर पेश करता है। चुनाँचे वह रिश्वत लेने वाले के दिल में यह डालता है कि तुम यह रिश्वत अपने लिए तो नहीं ले रहे, आख़िर बीवी-बच्चों का पेट पालना भी तो फ़र्ज़ है। गोया उसके सामने वह गुनाह को हल्का करके पेश करता है। इंसान झूठ बोलता है मगर वह इंसान के ज़हन में यह बात डालता है कि तूने मसलेहत से झूठ बोला है। यहीं से आदमी की "मसलेहतन" झूठ बोलने की आदत पड़ जाती है। यहाँ तक कि एक वक़्त आता है कि अल्लाह तआला उस बंदे का नाम "झूठों के दफ़्तर" में लिखवा देते हैं। शैतान के गुर हर बंदे के हिसाब से होते हैं। दुनियादार के लिए उसके हिसाब से और दीनदार के लिए उसके हिसाब से हैं। इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि शैतान एक ऐसा दुश्मन है जो न तो रिश्वत क़ुबूल करता है और न ही कोई सिफ़ारिश क़ुबूल करता है। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि आप शैतान को रिश्वत दे दें और वह आपकी जान छोड़ जाए या आप थोड़ी देर के लिए उसकी ख़ुशामद कर लें और वह कहे कि अच्छा आज के बाद मैं आपको तंग नहीं करूंगा।

तीसरी रुकावट इंसानों की तरफ़ से आती है। कभी रिश्तेदार दीन के रास्ते में रुकावट बन जाते हैं। किसी की शख़्सियत या उसकी शक्ल व सूरत अच्छी लगी और वह दिल में बस गया। अब सारा दिन उसी की सोचें ग़ालिब रहती हैं। रोग पाला होता है और दिन रात उसी ख़्याल में मर रहे होते हैं। किसी को ख़्वाहिशात नफ़्सानी की वजह से भाई बनाया मगर वह क़साई होता है। कभी घरवाले दीन के रास्ते में रुकावट बनते हैं। कई नौजवान चाहते हैं कि हम सुन्नत के मुताबिक़ अपना चेहरा बनाएं मगर उनकी बीवी रुकावट बन जाती है। कई माँ-बाप नहीं चाहते

कि घर में टीवी हो लेकिन बच्चे टीवी निकालने ही नहीं देते। ये इंसान चाहे देखने में बहुत ही क़रीबी होते हैं, जिगर के टुकड़े होते हैं आँखों की ठंडक होते हैं मगर हक़ीक़त में वे दुश्मनी कर रहे होते हैं क्योंकि शरिअत के ख़िलाफ़ पर अमल पर आमादा कर रहे होते हैं।

इन तीनों रुकावटों को दूर करके शरिअत पर अमल करते रहने का नाम "मुजाहिदा" है। यह मुजाहिदा मोमिन को सारी ज़िंदगी करना पड़ता है।

इस्तिक़ामत (जमाव) का मतलब

"इस्तिक़ामत" का मतलब है किसी बात पर डट जाना, जम जाना, ठहर जाना। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को इस्तिक़ामत बहुत ज़्यादा पसन्द है। इस्तिक़ामत तो यह हो गई कि मस्जिद में तोबा की, फिर मस्जिद के बाहर क़दम रखा तो भले बाज़ार में शक्लें सूरतें नज़र आ रही हों मगर वह उनकी तरफ़ ध्यान ही न दे और सोचे की मैंने अब सच्ची तोबा कर ली है इसलिए मेरी आँख अब किसी नामहरम की तरफ़ नहीं उठेगी। इसी तरह इरादा कर लिया कि झूठ नहीं बोलना, अब हर मसलेहत को एक तरफ़ रख दे और झूठ न बोले। शैतान कहता है कि मसलेहत है, झूठ बोलो, झूठ बोलोगे तो फ़ायदा होगा जबकि रहमान का वादा यह है कि सच बोलोगे तो फ़ायदा होगा।

मशाइख़ के साथ निस्बत की बरकत

आज इस इस्तिक़ामत की कमी है। सालिकीन अक्सर अपने

हालात सुनाते हैं कि तौबा तो करते हैं मगर वह तौबा चंद दिन भी साथ नहीं देती। बार बार तौबा टूटती रहती है। यह भी एक अच्छी अलामत है कि बार-बार तौबा करते हैं। यह मशाइख़ के साथ निस्बत की बरकत होती है कि बार-बार तौबा करने की तौफ़ीक़ मिलती रहती है क्योंकि चिंगारी अंदर ही अंदर सुलग रही होती है। उन्हें गुनाह में सुकून नहीं मिलता। उनका ज़मीर झंझोड़ रहा होता है कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ, बुरा कर रहा हूँ। इसका मतलब है कि अभी शाख़ हरी है। जिस तरह ज़मीन में लगा हुआ पौधा हरा हो तो उम्मीद होती है कि उसकी कोंपलें फूट आएंगी, बिल्कुल इसी तरह जिसका राब्ता अपने मशाइख़ के साथ पक्का हो उसकी शाख़ हरी होती है। उस पर किसी वक़्त कोंपल फूट सकती है। इस्तिक़ामत की ज़िंदगी गुज़ारने वालों पर अल्लाह तआला की मदद उतरती है। याद रखें कि जिस आदमी में इस्तिक़ामत नहीं होती वह अल्लाह की नज़र में मरदूद होता है।

पेड़ के साथ एक अजीब बातचीत

एक बार हज़रत सिर्री सिक़्ती रह० जा रहे थे। दोपहर का वक़्त था। उन्हें नींद आई। वह क़ैलूला की नीयत से एक पेड़ के नीचे सो गए। कुछ दरे लेटने के बाद जब उनकी आँख खुली तो उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने ग़ौर किया तो पता चला कि उस पेड़ से आवाज़ आ रही थी जिसके नीचे लेटे हुए थे। जी हाँ जब अल्लाह तआला चाहते हैं तो ऐसे वाक़िआत दिखा देते हैं। पेड़ उन्हें कह रहा है, ﴿يا سرى! كن مثلى﴾ ऐ सिर्री! तू मेरे जैसा हो जा। वह यह आवाज़ सुनकर बड़े हैरान हुए। जब पता चला कि

यह आवाज़ पेड़ से आ रही है तो आप ने उस पेड़ से पूछा ﴿كيف اكون مثلك﴾ कि ऐ पेड़! मैं तेरे जैसा कैसे बन सकता हूँ? पेड़ ने जवाब दिया ﴿ان الذين يرمونني بالاحجار فارميهم بالاثمار﴾ ऐ सिर्री! जो लोग मुझ पर पत्थर फेंकते हैं मैं उन लोगों की तरफ़ अपने फल लौटाता हूँ। इसलिए तू भी मेरे जैसा बन जा। वह उसकी यह बात सुनकर और भी ज़्यादा हैरान हुए मगर अल्लाह वालों को फ़िरासत (समझबूझ) मिली होती। लिहाज़ा उनके ज़हन में फ़ौरन ख़्याल आया कि अगर यह पेड़ इतना ही अच्छा है कि जो इसे पत्थर मारे, यह उसे फल देता है तो अल्लाह तआला ने पेड़ की लकड़ी को आग की ग़िज़ा क्यों बनाया? लिहाज़ा उन्होंने पूछा कि ऐ पेड़! अगर तू इतना ही अच्छा है तो ﴿فكيف مصيرك الى النار﴾ यह बता कि अल्लाह तआला ने तुझे आग की ग़िज़ा क्यों बनाया दिया? इस पर पेड़ ने जवाब दिया ऐ सिर्री! मेरे अंदर ख़ूबी भी बहुत बड़ी है मगर इसके साथ एक कमी भी बहुत बड़ी है। इस कमी ने मेरी इतनी बड़ी ख़ूबी पर पानी फेर दिया है। अल्लाह तआला को मेरी वह कमी इतनी नापंसद है कि अल्लाह तआला ने मुझे आग की ग़िज़ा बना दिया है। मेरी कमी यह है ﴿فامليت بالهواء هكذا هكذا﴾ जिधर की हवा चलती है मैं उधर को ही डोल जाता हूँ यानी मेरे अंदर इस्तिक़ामत नहीं है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस्तिक़ामत का हुक्म

कई लोग तो इस बात के मिस्दाक़ होते हैं—

चलो तुम उधर को हवा हो जिधर की

वे बचारे रस्म व रिवाज के मुताबिक़ चल रहे होते हैं जबकि अल्लाह तआला चाहते हैं कि मेरे बंदे इस्तिक़ामत की ज़िंदगी गुज़ारें। शरिअत हमें इसी चीज़ का हुक्म देती है। चुनाँचे इर्शादे बारी तआला है ﴿إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ﴾ वे लोग जिन्होंने कहा कि हमारा रब अल्लाह है ﴿ثُمَّ اسْتَقَامُوا (حم سجده ٣٠)﴾ फिर वे इस बात पर जम गए, न सिर्फ़ यही बल्कि अल्लाह तआला अपने महबूब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हैं :

﴿فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ﴾

आप इस पर बात डट जाइए जिसका आपको हुक्म दिया और जो आप के साथ ईमान लाने वाले हैं वे भी डट जाएं।

क़ुरआन और इज़्ज़त

जो बंदा इस्तिक़ामत के साथ अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल पैरा होने के लिए डट जाता है तो अल्लाह तआला उसकी पुश्तपनाही फ़रमाते हैं। क़ुरआने अज़ीमुश्शान हमारी इज़्ज़तों और ग़लबे के लिए दुनिया में भेजा गया है। लिहाज़ा जो आदमी क़ुरआन मजीद पर अमल करेगा वह आदमी इज़्ज़त पाएगा और जो जमाअत इस पर अमल करेगी वह जमाअत इज़्ज़तें पाएगी।

सहाबा किराम और असबाब

सहाबा किराम के पास असबाब में से बहुत ही मामूली चीज़ें पास होती थीं। मगर कितनी अजीब बात है कि वह दुश्मन के साथ लड़ने के लिए तैयार खड़े होते थे। पूरे लश्कर के पास दो तलवारें थीं, कुछ ऐसे भी थे जिनके हाथों में पेड़ों की टहनियाँ

थीं। सहाबा किराम फ़रमाते हैं कि बदर के मैदान में जब हम ने काफ़िरों के नवजवानों को देखा तो वे लोहे में डूबे हुए थे तो हमें यह महसूस हुआ कि हमें मौत के मुँह में धकेला जा रहा है,

﴿كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ. (الانفال:٦)﴾

लेकिन अल्लाह तआला ने सहाबा किराम के हौसले पस्त नहीं किए बल्कि इस्तिक़ामत के साथ लड़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

सहाबा किराम की आज़माईश

अल्लाह तआला ने सहाबा किराम को बहुत ज़्यादा आज़माया। उलमा ने लिखा है कि सहाबा किराम की आज़माईश पहली उम्मतों से बहुत ज़्यादा थी। इसीलिए फिर उनको ईनाम भी पहली उम्मतों की बनिस्बत ज़्यादा मिला। आम दस्तूर भी यही है कि जब पेपर सख़्त होता है तो फिर ईनाम भी बड़ा होता है। पहली उम्मतों पर जो आज़माइशें आयीं उनके बारे में अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं कि उनको इतना आज़माया गया :

مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ (البقرہ ٢١٤)

उन पर तंगदस्ती और परेशानी इतनी आई और इतना झंझोड़ा गया कि अल्लाह के रसूल और उनके साथ जो ईमान लाने वाले थे वे सब पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी। तब अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ﴿اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ﴾ जान लो कि अल्लाह की मदद क़रीब है यानी उनको इतना आज़माया गया कि उनके लिए ﴿وَزُلْزِلُوْا﴾ का इस्तेमाल किया गया।

एक आज़माइश सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम पर भी आई है। उस आज़माईश का तज़्किरा करते हुए अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं कि मोमिनों पर एक ऐसा वक़्त आया कि ﴿وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا﴾ इस आयत से पता चलता है कि सहाबा किराम की आज़माईश पहली उम्मतों की आज़माईश की निस्बत ज़्यादा थी क्योंकि उनके लिए लफ़्ज़ ﴿وَزُلْزِلُوا﴾ इस्तेमाल किया गया। मगर सहाबा किराम के लिए तीन अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए गए क्योंकि सहाबा किराम का इम्तिहान भी बड़ा था, इसलिए उनको ईनाम भी बड़ा मिला।

गिरते वक़्त थामने वाली ज़ात

इस्तिक़ामत के साथ शरिअते मुताहिरा पर अमल करने वालों की अल्लाह तआला कैसे मदद फ़रमाते हैं इसे एक मिसाल से समझिए। एक छोटे से बच्चे को वालिद खड़ा करके कहता है कि बेटे! मेरे पास आइए। वालिद को पता है कि यह कमज़ोर है और कम उम्र है। उसे यह भी पता होता है कि यह गिर जाएगा। लिहाज़ा वालिद तैयार होता है कि अगर यह क़दम उठाएगा और मेरी तरफ़ आने की कोशिश करेगा तो मैं इसको गिरने नहीं दूंगा। इसलिए जब बच्चा क़दम उठाता है और गिरने लगता है तो वालिद उसको फ़ौरन उठाकर सीने से लगा लेता है। इसी तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त भी बंदे को अपनी तरफ़ बुलाते हैं कि शरिअत के रास्ते पर चलते हुए मेरे पास आ जाओ। अल्लाह तआला को पता है कि इस रास्ते में तीन रुकावटें भी हैं और उन रुकावटों की वजह से बंदा गिर भी सकता है लेकिन अगर यह मेरी तरफ़ आने की नीयत ठीक कर लेगा और फिर नेक नीयती

के साथ क़दम उठाएगा तो फिर मैं इस बंदे को गिरने नहीं दूंगा बल्कि गिरने से पहले-पहले अपने इस बंदे को अपना वस्ल अता फ़रमा दूंगा।

इस्तिक़ामत के सामने पहाड़ की हैसियत

हमारा काम नेक नीयती के साथ शरिअत के रास्ते पर क़दम उठाना है। अगर हमारे रास्ते में रुकावटों के पहाड़ भी आएंगे तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उन पहाड़ों को भी हटा देंगे। एक आदमी ने ख़्वाब में देखा कि उसे कहा गया कि अगर तुम अल्लाह के रास्ते में निकलो और तुम्हें जो चीज़ सबसे पहले नज़र आए और तुम उसे खा लो तो तुम्हें बड़े दर्जात मिल जाएंगे। उसकी आँख खुली तो उसने नीयत कर ली। लिहाज़ा जब वह सुबह उठकर शहर से बाहर निकला तो उसकी पहली नज़र पहाड़ पर पड़ी। उसके दिल में ख़्याल आया कि मैं पहाड़ तो नहीं खा सकता। लेकिन ख़्वाब में यह शर्त थी कि जो चीज़ पहली दफ़ा नज़र आए, उसको अगर खाओगे तो तुम्हें बड़े दर्जात मिलेंगे। कभी तो उसके दिल में ख़्याल आता कि मैं पहाड़ को खा ही नहीं सकता। लिहाज़ा मुझे आगे जाने की ज़रूरत ही नहीं है और कभी ख़्याल आता कि नहीं, जाना मेरा काम है, अल्लाह तआला आसान कर देंगे। चुनाँचे वह आदमी चलता रहा, चलता रहा। लेकिन अल्लाह की शान कि वह जैसे-जैसे पहाड़ की तरफ़ क़दम उठाता रहा, हर क़दम पर पहाड़ छोटा होता गया यहाँ तक कि जब यह आदमी क़रीब पहुँचा तो देखा कि वहाँ गुड़ की एक छोटी सी डली पड़ी हुई है। उसने उसे उठाकर मुँह में डाल लिया। इस्तिक़ामत के साथ क़दम उठाने पर अल्लाह तआला पहाड़ को भी गुड़ की डली बना देते हैं।

सहाबा किराम के जीतने का राज़

सहाबा किराम के दिलों में यह बात उतर चुकी थी कि रुकावटों को दूर करने वाली ज़ात हमारे साथ है। इसलिए वे रुकावटों को रुकावटें ही नहीं समझा करते थे। उनका काम बस अल्लाह के रास्ते में क़दम उठाना होता था। इसीलिए उनको फिर कामयाबियाँ भी मिलती थीं–

बात क्या कि न क़ैसर ओ किसरा से दबे
चंद वो लोग के ऊँटों को चराने वाले

जिनको काफ़ूर पे होता था नमक का धोका
बन गए दुनिया की तक़दीर बदलने वाले

इसलिए कि उनको अल्लाह के वादों पर पूरा यक़ीन था।

टल न सकते थे अगर जंग में अड़ जाते थे
पाँव शेरों के भी मैदान से उखड़ जाते थे

इसी इस्तिक़ामत की वजह से फ़तेह के दरवाज़े खुले और अल्लाह तआला ने उनको फ़ातेह आलम बना दिया।

अल्लाह की मदद आने की निशानी

मेरे दोस्तो! आज भी वही क़ुरआन है और वही अल्लाह का फ़रमान है। अगर हम शरिअत पर इस्तिक़ामत की ज़िंदगी गुज़ारेंगे तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें भी कामयाबियाँ अता फ़रमाएंगे। काफ़िरों की गीदड़ भपकियाँ हमारा बाल भी बीका नहीं कर सकतीं। जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मदद किसी के पलड़े में आती है तो फिर उस पलड़े को पूरी दुनिया से भी भारी बना देती

है और अल्लाह तआला की मदद के आने की निशानी यह है कि जब उसकी मदद आती है तो फिर किश्ती को दरिया की लहरों के बेरहम थपेड़ों के रहम व करम पर नहीं छोड़ देते बल्कि उस किश्ती को किनारे लगा देते हैं। लिहाज़ा ईमान वालों को चाहिए कि ﴿عضوا عليه بالنواجذ﴾ के मिस्दाक़ शरिअत के रास्ते पर डट जाएं और अपने दांतों से मज़बूती के साथ उसको थाम लें। लोग कहेंगे कि भूके मर जाओगे। आप उनसे कहें कि हर्गिज़ नहीं, हमें रिज़्क़ देने वाला भी अल्लाह है और मदद देने वाला भी अल्लाह है। अगर पूरी दुनिया के काफ़िर इकठ्ठे होकर आ जाएं तो वे हमारा बाल भी बीका नहीं कर सकते क्योंकि मारने वालों से बचाने वाला बड़ा है।

ग़ज़्वए अह्ज़ाब में काफ़िरों की रुस्वाई

नबी अलैहिस्सलातु वसल्लाम के मुबारक ज़माने में ग़ज़्वए अहज़ाब में भी ऐसा ही हुआ। मक्का वाले मुसलमानों से मुक़ाबला करने के लिए चले और रास्ते में जो क़बीला मिलता उसे साथ लेते। उसे कहते कि हमारे साथ चलो। अगर नहीं चलोगे तो फिर हम तुम से भी जंग करेंगे। इसलिए डर की वजह से लोग साथ चल पड़ते। इस तरह बहुत से क़बीले उनके साथ मिल गए। इधर जब मदीना मुनव्वारा में रहने वाले यहूदियों ने सुना तो वे मुसलमानों के बिला वजह ख़ैरख़्वाही के लिए उन्हें आकर मश्वरा देते कि ﴿إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ (آل عمران:١٧٣)﴾ लोग तुम्हारे लिए जमा होकर आ रहे हैं यानी आलमी बिरादरी जमा होकर आ रही है। कुछ सोच लो वरना वे तुम्हारा नाम व निशान तक मिटा

देंगे और तुम्हारे लिए ज़मीन तंग कर देंगे। मगर सहाबा किराम ने जब सुना तो परेशान होने के बजाए उनके ईमान बढ़ गए। क़ुरआन मजीद इसकी गवाही देता है :

﴿وَمَا زَادَهُمْ اِلَّا اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا. (الاحزاب:٢٢)﴾

कुफ़्फ़ारे मक्का ने आकर सहाबा किराम को घेराव कर लिया यहाँ तक कि एक महीने तक घेराव रखा। उनके दिलों में ग़ुस्से और नफ़रत की यह हालत थी कि वे चाहते थे कि हम मुसलमानों को कच्चा चबा जाएं जैसे आज काफ़िर कहते हैं कि तुम्हें हमारे ग़ुस्से और नफ़रत का सामना करना पड़ेगा। उस वक़्त भी वह इसी तरह ग़ुस्से और नफ़रत को लेकर आए थे। लेकिन क्या हुआ? अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़ुरआन पाक में बड़े अजीब अंदाज़ में फ़रमाते हैं :

﴿وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ (الاحزاب:٢٥)﴾

और अल्लाह तआला ने उन काफ़िरों को उनके ग़ैज़ व ग़ज़ब के साथ नाकाम वापस लौटा दिया। ﴿لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا﴾ उनके पल्ले ठेंगा भी नहीं आया।

ईमान की जांच पड़ताल का वक़्त

एक बात ज़हन में रखें कि हम अपने दुश्मनों को नहीं जानते मगर अल्लाह तआला जानते हैं। अल्लाह भी इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآءِكُمْ (النساء:٤٥)﴾ और अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मनों को जानते हैं। हमें क्या पता है कि कौन ज़ाहिर में हमारा दोस्त बन रहा है और अंदर अंदर से हमारी जड़ें काट रहा है और हमें

ही चारों तरफ़ से घेर रहा है। इस आयत के साथ ही एक ख़ुशख़बरी सुना दी, फ़रमाया :

﴿وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا. (النساء:١٤١)﴾

और अल्लाह तआला काफ़िरों को ईमान वालों तक पहुँचने का रास्ता हर्गिज़ नहीं देंगे। जैसे बच्चे को कोई मार रहा हो और ऊपर से उसका बाप आ जाए तो वह कहता है कि मुझ से बात करो, फिर बच्चे को हाथ लगाना। अल्लाह तआला भी यहाँ यही फ़रमा रहे हैं कि ऐ ईमान वालो! तुम्हारा दुश्मन पहले मुझ से बात करेगा। आजकल लोग कहते हैं कि अगर तुम इधर जाओगे तो मेरी लाश से गुज़रकर जाओगे। मतलब यह है कि पहले मैं तुम्हारा मुक़ाबला करूंगा, फिर तुम्हारा क़दम आगे बढ़ सकेगा। अल्लाह तआला भी यही फ़रमा रहे हैं कि ये काफ़िर तुम्हारी तरफ़ आएंगे लेकिन अल्लाह तआला इनको तुम्हारे तक पहुँचने का रास्ता हर्गिज़ नहीं अता करेंगे। तो जब अल्लाह तआला हमें तसल्लियाँ दे रहे हैं तो फिर हमें घबराने की क्या ज़रूरत है। यही तो ईमान की जांच पड़ताल का वक़्त होता है। जो कमज़ोर यक़ीन वाले होते हैं वह काफ़िर की गीदड़ भपकियों से डर जाते हैं और जो ईमान वाले होते हैं वे उनके सामने सीसा पिलाई हुई दीवार बन जाते हैं। अल्लाह तआला ऐसे ख़ुशनसीब मुजाहिदीन के लिए इर्शाद फ़रमाते हैं :

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ. (الصف:٤)

अल्लाह तआला ऐसे लोगों से मुहब्बत करते हैं जो अल्लाह के रास्ते में ऐसे क़िताल करते हैं जैसे सीसा पिलाई हुई दीवार होती है।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की जवांमर्दी

सहाबा किराम की ज़िंदगियों के हालात पढ़कर हैरानी होती है। उनकी जवांमर्दी पर अश-अश करने को दिल करता है। एक बार मश्वरा होने लगा कि इतने इतने काफ़िरों के मुक़ाबले में कितने मुसलमानों को जाना चाहिए? किसी ने कहा, सत्तर चले जाएंगे। किसी ने कहा, चालीस चले जाएंगे। किसी ने कहा, दस चले जाएंगे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु भी बैठे थे। जब उनसे पूछा गया तो वह कहने लगे, मुझे अकेले को भेज दें। यह सुनकर किसी ने कहा, ख़ालिद! इस बात से तो तकब्बुर की बू आती है। वह फ़रमाने लगे कि हर्गिज़ नहीं, क्योंकि मेरी मिसाल बाज़ की सी है और काफ़िरों की मिसाल ऐसे है जैसे जाल में फंसे हुए परिन्दे होते हैं। अब फंसी हुई चिड़िया बाज़ का क्या बिगाड़ सकती है। फिर वह फ़रमाने लगे कि काफ़िर मुर्दा है और मोमिन ज़िंदा है, इसलिए लाखों मुर्दे मिलकर भी एक ज़िंदा आदमी का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। वाक़ई उन पर ऐसी मदद उतरी कि अल्लाह तआला ने उनको कामयाब फ़रमा दिया।

"फ़ुतुहुश्-शाम" का मक़ाम

अल्लामा वाक़्दी की एक किताब का नाम "फ़ुतुहुश्-शाम" है। अब तो उर्दू ज़बान में भी इसका तर्जुमा हो चुका है। आजकल हर नवजवान को यह किताब पढ़ने की ज़रूरत है। इसमें सहाबा किराम के ऐसे अज़ीमुश्-शान वाक़िआत बयान किए गए हैं कि

उनको पढ़कर दिल खुश हो जाता है। ईमान का पता चल जाता है कि ईमान कहते किस को हैं। याद रखें कि अल्लाह तआला की मदद के वाक़िआत पढ़कर अल्लाह के वादों पर इंसान का यक़ीन मज़बूत हो जाता है। हैरान होते हैं कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इन हज़रात की कैसे मदद फ़रमाई। इस हवाले से "फ़ुतहुश् शाम" की किताब को बड़ा मक़ाम हासिल है।

उलमाए किराम की ज़िम्मेदारी

मेरे दोस्तो! इस रास्ते में रुकावटें आती हैं लेकिन इन रुकावटों से डरने की ज़रूरत नहीं है बल्कि क़दम आगे बढ़ाने की ज़रूरत है। कोई भी ईमान वालों का रास्ता नहीं रोक सकता। हमारा काम है हिम्मत के साथ क़दम आगे बढ़ाना और अल्लाह के वादों पर भरोसा रखना। एक तरफ़ दुनिया के ख़ज़ानों के मुँह खुल रहे हैं और दूसरी तरफ़ अल्लाह का वादा है कि रिज़्क़ मेरे ज़िम्मे है और रिज़्क देना भी मैंने है। हमें चाहिए कि हम दुनिया के पीछे न भागें बल्कि अपने परवरदिगार को राज़ी करने की कोशिश करें। हालात कुछ भी पलटा खा सकते हैं। मगर उलमा का यह काम है कि वे खुद भी शरिअत पर जमे रहें और लोगों को भी शरिअत पर जमे रहने की ताकीद करें क्योंकि उलमा के अंदर इस्तिक़ामत होगी तो फिर अवाम के अंदर भी इस्तिक़ामत पैदा हो जाएगी। यह वक़्त की एक अहम ज़रूरत है।

पहले भी जब उम्मत पर ऐसा वक़्त आया तो उलमा ने ही क़दम उठाया और अल्लाह तआला ने उनकी बरकतों से उम्मत को आज़माईशों से निकाला। जो आज़माईशें अब आ रही हैं इन

आज़माईशों भी अल्लाह तआला उलमा को ही सबब बनाएंगे। यही क़दम उठाएंगे और हमारे लिए इन मुश्किलात से नजात का सबब बन जाएंगे। इसलिए उलमा को चाहिए कि वे क़ुरआन व सुन्नत को सामने रखें क्योंकि क़ुरआन के हिसाब से उन पर यही ज़िम्मेदारी आती है :

وَالرَّبَّانِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ.

अल्लाह वालों और उलमा जिनको हुक्म दिया गया था किताबुल्लाह की हिफ़ाज़त का। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ.

(آل عمران:۱۴۸)

कि कितने ही अंबिया किराम ऐसे गुज़रे हैं जिनके साथ मिलकर उलमा ने क़िताल किया। फिर नतीजा यह निकला कि ﴿فَمَا وَهَنُوْا﴾ न उनके अंदर वहन पैदा हुआ ﴿وَمَا ضَعُفُوْا﴾ और न ही उनके अंदर कमज़ोरी पैदा हुई ﴿وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ﴾ ऐसे सब्र वालों से अल्लाह तआला मुहब्बत फ़रमाते हैं।

उलमा की ज़िम्मेदारी है कि वे इस्तिक़ामत दिखाएं और रातों को अल्लाह के हुज़ूर माफ़ियाँ भी मांगे। अल्लाह तआला ने अगली आयत में यही तो फ़रमाया है :

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ. (آل عمران ۱۴۷)

और नहीं थी उनकी बात सिवाए इसके कि ऐ हमारे रब हमारे गुनाह और हमारी ज़्यादतियाँ बख़्श दे और हमें साबित क़दमी अता फ़रमा दे और हमें काफ़िरीन पर ग़लबा अता फ़रमा दे।

यूँ अल्लाह तआला से माफ़ियाँ मांगी कि ऐ अल्लाह! हमारे किसी गुनाह के सबब यह मदद रुक न जाए, गोया दिन के वक़्त सब उलमा लश्करे ग़ज़्ज़ा बन जाएं और रात के वक़्त लश्करे दुआ बन जाएं ताकि कुफ़्र को पता चल जाए कि ईमान वालों से वास्ता पड़ा है बल्कि उसे पता चल जाए कि उसे नर बंदों से वास्ता पड़ा है। ऐसे मौक़ों पर ज़नाना बनने की ज़रूरत नहीं है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि जब ईमान वाले अल्लाह से मांगेगे तो :

فَاٰتٰهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ٥

(آل عمران:١٤٨)

अल्लाह तआला दुनिया का हिस्सा भी अता फ़रमा देंगे और आख़िरत का भी और अल्लाह तआला तो नेकोकारों से मुहब्बत फ़रमाते हैं।

उलमा किराम की मोहतरम जमाअत! ऐसे हालात में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ज़ात पर नज़र रखिए।

लोहे के चने

जिस दिन क़ुरआन पाक की आख़िरी आयतें उतरीं उसी वक़्त ये आयतें भी उतरीं

﴿اَلْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ (المائدة:٣)﴾

आज के दिन ये काफ़िर तुम्हारे दीन से नाउम्मीद हो चुके हैं। गोया अल्लाह तआला यूँ फ़रमाना चाहते हैं कि आज के दिन काफ़िरों को यह पता चल गया कि ये मुसलमान लोहे के चने हैं और इनको चबाना कोई आसान काम नहीं है।

अल्लाह तआला की तरफ़ से ऐलाने जंग

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿فَلَا تَخْشَوْهُمْ﴾ उनसे नहीं डरना ﴿وَاخْشَوْنِي﴾ बल्कि एक मुझ से डरते रहना। जब हमारे दिल में एक अल्लाह का डर होगा तो अल्लाह तआला दुनिया के डर हमारे दिल से निकाल देंगे। जिस बंदे के दिल में अल्लाह तआला का डर नहीं होता वह फिर अपने साए से भी डरता है, अंधेरे से भी डरता है, रात को अगर खिड़की का पर्दा हिल जाए तो उससे भी डरता है बल्कि वे बेचारे तो बिल्ली की म्याऊँ से भी डर जाते हैं। हमें चाहिए कि हम अल्लाह तआला की ज़ात पर भरोसा रखें। अल्लाह तआला हमारी मदद फ़रमाएंगे। हम ईमान वाले हैं, याद रखिए कि जो ईमान वालों को आँखें दिखाएगा वह अल्लाह से मुक़ाबला करने जाएगा। हदीसे क़ुदसी में अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿من عادلی ولیا فقد اذنته للحرب﴾ कि जिसने मेरे वली से दुश्मनी की उसके साथ मेरा ऐलाने जंग है। अब जो कोई ईमान वालों की तरफ़ मैली आँख से देखेगा अल्लाह तआला उसकी आँख निकाल देंगे और जो उंगली उठाएगा अल्लाह तआला उसको बाज़ू को ख़त्म फ़रमा देंगे।

हज़रत ज़रार बिन अज़्र रज़ियल्लाह अन्हु का जिहाद

शाम की फ़तेह में एक सहाबी हज़रत ज़रार बिन अज़्र के बड़े अजीब व ग़रीब वाक़िआत हैं। मेरे ख़्याल से वह इस किताब के हीरो हैं। इनके बारे में किताबे में लिखा है कि एक बार उन्हें लगातार आठ घंटे जिहाद करना पड़ा। आख़िरकार काफ़िरों के घेरे में आ गए। लगातार आठ घंटे जिहाद करने की वजह से उनका

घोड़ा भी थक चुका था। वह घोड़े को आगे बढ़ाने की कोशिश करते थे मगर वह आगे नहीं जाता था। जब उन्होंने महसूस किया कि मेरा घोड़ा थक चुका है तो उन्होंने सोचा कि अब तो मैं गिरफ़्तार हो जाऊँगा। किताब में लिखा है कि वह उस घोड़े पर झुके और उसकी पेशानी पर मुहब्बत से हाथ फेरकर घोड़े से कहा, ऐ घोड़े! तू थोड़ी देर के लिए मेरा साथ दे दे वरना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़े पर जाकर तेरी शिकायत करूंगा। जब उन्होंने यह अलफ़ाज़ कहे तो घोड़ा हिनहिनाया और ऐसे दौड़ा जैसे कोई ताज़ा दम घोड़ा दौड़ता है। इस तरह वह घोड़ा उनको कुफ़्फ़ार के नरग़े से निकालकर बाहर ले आया, सुब्हानअल्लाह। कुछ वक़्त के बाद वह गिरफ़्तार हो गए। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि हज़रत ज़रार रज़ियल्लाहु अन्हु गिरफ़्तार हो चुके हैं तो वह बड़े हैरान हुए। इतने में कुछ सवार उनके पास आकर कहने लगे कि हमें ज़रार के पीछे जाना चाहिए ताकि हम उनको आज़ाद करवा लाएं।

हज़रत ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा की बहादुरी

इसी नीयत से वह चले ही थे कि उन्होंने घोड़े पर सवार एक ऐसा मुजाहिद को देखा जिसने अपने चेहरे को छिपाया हुआ है। उसके पास तलवार भी है, नेज़ा भी और उसके पास ताज़ा दम घोड़ा भी है। वह भाग कर कभी इधर जाता और कभी उधर। उसकी जवांमर्दी को देखकर मुजाहिद हैरान रह गए।

जब ये सब हज़रात दुश्मनों के पास पहुँचे तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस थके हुए लश्कर के साथ

दुश्मन पर दोबारा हमला किया। उन्होंने काफ़िरों को गाजर मूली की तरह कतरा। लेकिन उन्हें हज़रत ज़रार का पता नहीं चला। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद फ़रमाते हैं कि मैं कई बार काफ़िरों के घेरे में आया लेकिन जैसे ही काफ़िरों के घेरे में आता तो मैं उस सवार को देखता कि वह दौड़कर मेरी तरफ़ आता और काफ़िरों के इस घेरे को तोड़कर मुझे निकालने में मदद करता और कभी मैं उसको काफ़िरों के घेरे में से निकालता। यहाँ तक कि उसने तो ऐसी बहादुरी और दिलेरी दिखाई कि मैं हैरान होने लगा कि ख़ालिद बिन वलीद के पास ऐसा कौन सा मुजाहिद है जो इतनी बहादुरी और दिलेरी से लड़ रहा है। फ़रमाते हैं कि काफ़ी देर क़िताल के बाद जब हम फिर पीछे हटे ताकि हम देंखे कि ज़रार का पता चला है या नहीं चला तो हमने देखा उस मुजाहिद का घोड़ा ख़ून से सना था। उसने इतने काफ़िरों को क़त्ल किया कि उसका घोड़ा भी ख़ून से लतपत हो गया। उसका नेज़ा और तलवार भी ख़ून से सनी थी। मैंने उससे पूछा कि ऐ जवांमर्द तू कौन है? आज तो मैं सैफ़ुल्लाह भी तेरी बहादुरी पर हैरान हूँ। लेकिन उस मुजाहिद ने कोई जवाब न दिया। फिर पूछा मगर फिर भी कोई जवाब न मिला। मैंने तीसरी बार कहा कि मैं अमीर लश्कर हूँ, मैं आप से पूछ रहा हूँ कि तुम कौन हो? तुमने तो मुझे हैरान कर दिया।

जब तीसरी बार पूछा तो जवाब में एक औरत की आवाज़ आई। वह कहने लगी, मैं ज़रार की बहन ख़ौला हूँ। जब मुझे पता चला कि मेरा भाई गिरफ़्तार हो चुका है तो मैंने आपसे इसलिए इजाज़त नहीं मांगी कि कहीं आप इंकार न कर दें। मैंने तलवार

और नेज़ा उठाया और घोड़े पर सवार होकर चुपके से आके लश्कर में शामिल हो गई। जब भाईयों पर मुसीबत आती है तो बहनें उनके काम आया करती हैं। मैं इसलिए क़िताल करने के लिए निकल आई। अब मैं आप से इजाज़त चाहती हूँ ताकि मैं इस जंग में आपके साथ जाकर लड़ सकूं।

मेरे दोस्तो! जिस क़ौम की पर्दे में बैठने वाली औरतों की जवांमर्दी का यह आलम हो, उस क़ौम के जवानों का क्या हाल होगा। हक़ीक़त यह है कि यह ईमान बड़ी नेमत है। जब ईमान को सामने रखकर बंदा क़दम उठा लेता है तो फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त मदद फ़रमा देते हैं।

घोड़े की इस्तिक़ामत

अगर एक मुजाहिद किसी घोड़े को इसलिए पालता है कि मैं इसकी पीठ पर बैठकर जिहाद करूंगा तो वह घोड़ा पहचानता है कि मुझे इसलिए खिलाया पिलाया गया था कि मैंने जिहाद में शरीक होना है। लिहाज़ा जब उसका मालिक ज़िरह पहनकर उस पर सवार हो जाता है और तलवार हाथ में ले लेता है और उसे दुश्मन के सामने लाकर खड़ा करता है तो वह घोड़ा हालाँकि जानवर है मगर उसमें इतनी समझ ज़रूर होती है कि अब उस वादे के पूरा करने का वक़्त आ चुका है जिसके लिए मेरे मालिक ने मेरी ख़िदमत की थी। लिहाज़ा घोड़ा तैयार हो जाता है। उसको अपने सामने तलवारें और तीर नज़र आ रहे होते हैं मगर वह घोड़ा घबराता नहीं है। लिहाज़ा जब उसका मालिक उसे भागने के लिए ऐड़ी का इशारा करता है तो वह घोड़ा भागना शुरू कर देता

है। वह बढ़ता चला जाता है, सामने दुश्मन तीर बरसाता है। मगर तीर तलवार और दुश्मन के वार से उसके जिस्म से ख़ून के फ़व्वारे भी छूट रहे हों तो वह इस बात की परवाह किए बग़ैर दुश्मन की सफ़ों में घुसता चला जाता है। वह अपनी जान तो क़ुर्बान कर देता है मगर वह अपने मालिक के इशारे की लाज रख लेता है। अल्लाह तआला को घोड़े की इस्तिक़ामत इतनी पसन्द आई कि उस घोड़े के पाँव से उड़ने वाली मिट्टी की भी अल्लाह पाक ने अपने क़ुरआन में क़समें खायीं हैं। लिहाज़ा फ़रमाया,

﴿والعديت ضبحا فالموريت قدحا فالمغيرات صبحا.﴾

सुब्हानअल्लाह, ऐ मुजाहिद! तेरी अज़मत को सलाम कि तेरे घोड़े के क़दमों से उठने वाली मिट्टी की भी तेरा परवरदिगार क़स्में खा रहा है। जिस परवरदिगार को घोड़े की जवांमर्दी और बहादुरी इस क़द्र पसंद आई हो कि वह क़समें खाकर क़ुरआन पाक में उसके तज़्किरे फ़रमाते हैं तो जब मोमिन बहादुरी का इज़्हार करेंगे तो अल्लाह तआला को यह बात कितनी पसंद आएगी।

नुसरते इलाही के वादे

मेरे दोस्तो! हमें भी अल्लाह के वादों पर भरोसा करके क़दम आगे बढ़ाने की ज़रूरत है। क्या नहीं देखते कि दीने इस्लाम की नुसरत करने वालों के साथ अल्लाह तआला ने क्या-क्या वादे फ़रमाए हैं। कहीं इर्शाद फ़रमाया ﴿إِنْ تَنْصُرُوْا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ (محمد:٦)﴾ कहीं इर्शाद फ़रमाया ﴿إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا (المؤمن:٥١)﴾ और एक मक़ाम पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद

फ़रमाते हैं ﴿وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا﴾ कि कौन है अल्लाह से ज़्यादा सच्ची बात कहने वाला। मेरे दोस्तो! अल्लाह तआला के वादे सच्चे हैं। वह परवरदिगार यक़ीनन हमें कामयाब फ़रमाएगा।

चट्टान बनने की ज़रूरत

कुछ चीज़ें वज़न में इतनी हल्की होती हैं कि वे पानी के साथ बह जाती हैं मसलन काग़ज़ और घास-फूस वग़ैरह। लेकिन कुछ चट्टाने होती हैं जो पानी के साथ बहती नहीं बल्कि वे पानी का रुख़ मोड़ देती हैं। हम मोमिन हैं इसलिए हम घास फूँस और तिनके न बनें बल्कि हम चट्टान बन जाएं और बहते हुए पानी का रुख़ फैर दें। कहने वाले ने क्या ही ख़ूब कहा है—

याद करता है ज़माना उन इंसानों को
रोक देते हैं जो बढ़ते हुए तूफ़ानों को

आज कुफ़्र और बेहयाई का सैलाब बढ़ रहा है। हमें चाहिए कि हम इस्तिक़ामत के साथ डट जाएं और शरिअत व सुन्नत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें।

हज़रत मशाता रज़ियल्लाहु अन्हा की इस्तिक़ामत

फ़िरऔन के महल में 'मशाता' नामी एक औरत फ़िरऔन की बेटियों के बाल संवारा करती थी। एक बार वह फ़िरऔन की बेटी के बाल संवार रही थी। इसी बीच उसके हाथ से कंघी नीचे गिर गई। जब वह कंघी उठाने लगी तो उस ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के परवरदिगार का नाम लिया। जब मशाता रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का नाम लिया तो

फ़िरऔन की बेटी समझ गई कि यह मेरे वालिद को माबूद नहीं मानती बल्कि मूसा अलैहिस्सलाम के अल्लाह पर ईमान रखती है। लिहाज़ा उस लड़की ने मशाता रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा, क्या तुम मेरे वालिद को "इलाहा" नहीं मानती हो? उसने कहा हर्गिज़ नहीं। मेरा खुदा तो वह है जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का परवरदिगार है। जब लड़की ने मशाता रज़ियल्लाहु अन्हा का दो टूक जवाब सुना तो वह भागकर अपने बाप के पास गई और कहने लगी कि आपके महल में आपके साए के नीचे रहने वाली औरत आपको खुदा नहीं मानती। बेटी की लगी लिपटी बातें सुनकर फ़िरऔन ग़ुस्से में आ गया। लिहाज़ा वह कहने लगा, अच्छा! मैं दरबार में जाकर उस औरत को ऐसी इबरतनाक सज़ा देता हूँ कि या तो वह मूसा अलैहिस्सलाम के इलाहा को इलाहा कहने से बाज़ आ जाएगी या फिर अपनी जान से हाथ धो बैठेगी।

फ़िरऔन जब अपने दरबार में पहुँचा तो उसने उस औरत को अपने पास बुलवाया और कहा, तुम मूसा अलैहिस्सलाम के इलाहा को इलाहा कहना छोड़ दो। वह कहने लगी, हर्गिज़ नहीं। उसने मशाता रज़ियल्लाहु अन्हा को बड़ा डराया धमकाया मगर वह कहने लगी कि अब तुम जो कुछ कर सकते हो कर लो, मैं पीछे नहीं हट सकती। ﴿فاقض ما انت قاض﴾ उसका यह दिलेराना जवाब सुनकर फ़िरऔन ने "अना" (नाक) का मसूअला बना लिया। लिहाज़ा फ़िरऔन ने कहा कि इसको ज़मीन पर लिटा दिया जाए। उसे ज़मीन पर लिटा दिया गया। उसके दोनों हाथों और पाँव में कीलें गाड़ दी गयीं ताकि वह हरकत न कर सके। इसी दौरान वज़ीर आया और उसने फ़िरऔन से कहा कि उसकी एक दूध

पीती छोटी बच्ची भी है, अगर इसकी उस बेटी को इसके सामने क़त्ल कर दो तो यह अपनी मामता से मजबूर होकर आपकी बात मान जाएगी। लिहाज़ा फ़िरऔन ने उसकी दूध पीती बच्ची को घर से बुलवाया और उसके सीने पर लिटा दिया। वह बच्ची माँ के सीने से लगकर दूध पीने लग गयी। बच्ची अभी दूध पी ही रही थी कि फ़िरऔन ने कहा कि मैं तुम्हारी इस बच्ची को तुम्हारे ही सीने पर क़त्ल कर दूँगा। वह इतनी बड़ी धमकी सुनकर भी कहने लगी कि अब मेरे दिल में इतना इत्मिनान भर चुका है कि मैं अपनी आँखों से बेटी को ख़ून में लतपत तड़पता तो देख सकती हूँ मगर मैं अपने ईमान का ख़ून नहीं कर सकती। लिहाज़ा मशाता रज़ियल्लाहु अन्हा के सीने पर ही उसके मासूम बच्चे की गर्दन काट दी गई। जिस माँ के सीने पर बेटी का ख़ून बह रहा हो उस माँ के दिल पर क्या गुज़रती है। जब बेटी ठंडी हो गई तो फ़िरऔन ने कहा कि अब तुम्हें क़त्ल कर देंगे। उसने कहा, तुमको जो मर्ज़ी हो कर लो, मैं पीछे नहीं हट सकती। आख़िर उस औरत को शहीद कर दिया गया।

हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा की इस्तिक़ामत

फ़िरऔन हज़रत मशाता को शहीद करवाकर जब घर पहुँचा तो अपनी बीवी हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा से कहने लगा कि मैंने एक औरत को इबरतनाक सज़ा दे दी है। उसकी बीवी ने कहा, तेरा नास हो, तूने एक मासूम बच्ची की जान भी ली और बेगुनाह औरत का क़त्ल भी नाहक़ किया। फ़िरऔन ने कहा, मैंने उसको इसलिए इबरतनाक सज़ा दी कि वह मुझे ख़ुदा नहीं मानती

थी। यह सुनकर हज़रत आसिया ने कहा कि ख़ुदा तो मैं भी तुझे नहीं मानती थी बल्कि एक आम इंसान है। जब फ़िरऔन ने यह सुना तो हैरान रह गया क्योंकि उसे हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा से बड़ी मुहब्बत थी। हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा को अल्लाह तआला ने बड़ा हुस्न व जमाल अता किया था। फ़िरऔन ने उसे पूरी क़ौम की औरतों में से चुनकर उसके हुस्न व जमाल की वजह से अपनी बीवी बनाया था। इस वजह से वह उससे बड़ी मुहब्बत करता था। लिहाज़ा फ़िरऔन कहने लगा, तुम कैसी बातें कर रही हो? वह कहने लगीं, मैं बिल्कुल ठीक कह रही हूँ कि तू झूठा है। परवरदिगार तो वही है जिसका पैग़ाम लेकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए हैं। फ़िरऔन ने यह बात सुनी तो उसे बहुत ग़ुस्सा आया। लिहाज़ा कहने लगा कि मैं तुम्हारा भी वही हश्र करवाऊंगा जो मैंने मशाता का करवाया है। वह कहने लगीं तू जो चाहता है कर ले, मेरे साथ मेरा परवरदिगार है। अब मैंने फ़ैसला कर लिया है कि मैं अपने परवरदिगार को नहीं छोड़ सकती हाँ तेरी हर चीज़ को लात मार सकती हूँ। जब उसने ये बातें सुनीं तो वह फिर दरबार में आया। अब फिर उसने लोगों को बुलवाया और कहने लगा, देखो यह कितनी बड़ी साज़िश हो गई है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने मेरी बीवी को भी बहका लिया है। आज इस औरत को या तो मार डालूंगा या फिर वह अपनी बात से हट जाएगी। लिहाज़ा उसने अपनी बीवी को गिरफ़्तार करवा कर दरबार में बुलवाया। वह तो मलिका थी और उसके इशारों पर नौकर चाकर भाग-भाग कर काम करते थे। लोग एहतिराम की वजह से उसकी तरफ़ आँख उठकार भी नहीं देखते थे। आज वह

फ़िरऔन के दरबार में मुलज़िम बनकर खड़ी है। फ़िरऔन ने उसे कहा कि तू इतने अलीशान महल में रहती है, इतनी नेमतों में पली है, मैंने तुझे अपनी महबूबा बनाया हुआ हूँ, तुझे अब महल वाली नाज़ व नेमत वाली ज़िंदगी से महरूम होना पड़ेगा। बेहतर है तू अब भी बाज़ आ जा और मुझे इलाहा मान ले। वह कहने लगी अब मैंने ईमान क़ुबूल कर लिया है। लिहाज़ा मैं अपनी बात से पीछे नहीं हट सकती। इसलिए फ़िरऔन ने फ़ैसला कर लिया कि मैं इसे भी सज़ा दूँगा।

फ़िरऔन ने सबसे पहले सज़ा के तौर पर उसे रुसवा करने का फ़ैसला किया। लिहाज़ा उसने कहा कि सबसे पहले इस औरत के जिस्म से लिबास उतार दिया जाए। अब बताइए किसी मर्द को कहा जाए कि तुझे लोगों के बीच बेलिबास कर देंगे, मर्द को कितनी शर्म आती है। वह चाहता है कि ज़मीन फट जाए और मैं अंदर उतर जाऊँ। वह तो आख़िर औरत थीं और औरत के अंदर तो अल्लाह तआला ने शर्म हया रखी होती है। फ़िरऔन ने उसके जिस्म से लिबास उतरवा दिया। अब सोचिए कि वह अब कितनी अजीब हालत की शिकार है। एक तरफ़ ईमान है दूसरी तरफ़ इम्तिहान है। वह डटी रहीं। फ़िरऔन ने कहा, अच्छा! अगर अब भी नहीं मानती तो मैं तुझे और तरह का अज़ाब दूंगा। लिहाज़ा फ़िरऔन ने कहा कि इसका मुँह मेरे महल की तरफ़ करके लिटा दो ताकि आख़िरी वक़्त भी निगाहें इसकी मेरे महल की तरफ़ लगी रहें और इसके दिमाग़ में यह बात रहे कि मैं इन नेमतों को ठुकराकर ज़लील व ख़्वार होकर मर रही हूँ। लिहाज़ा उसे फ़िरऔन के हुक्म के मुताबिक़ लिटा दिया गया। उसके हाथों और पाँव में

लोहे की कीले गाड़ दी गयीं ताकि हिल न सके। उसके बाद फ़िरऔन ने लोगों को बुलाकर कहा कि इसके जिस्म से खाल जुदा करना शुरू कर दो। अब बताइए कि वह ज़िंदा औरत है और उसके जिस्म से खाल उतारी जा रही है। नाज़ुक बदन है मगर उसको बरदाश्त कर रही है। उसे अल्लाह के नाम पर तकलीफ़ दी जा रही है। इस तरह उसके जिस्म से खाल उतार दी गई। अल्लाह की शान देखिए कि वह अभी तक ज़िंदा थीं मगर जिस्म ज़ख़्म ज़ख़्म बन चुका था।

फ़िरऔन का दिल अब तक ठंडा नहीं हुआ था। लिहाज़ा वह कहने लगा, मिर्चें लाओ और इसके पूरे जिस्म पर छिड़क दो। हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा के जिस्म पर मिर्चे डाल दी गयीं तो वह मछली की तरह तड़पने लग गयीं। इस तड़पने की हालत में उन्होंने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हुज़ूर एक दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! फ़िरऔन का महल सामने है, वह कहता है कि हम ने तुम्हें इस महल से निकाल दिया है। आज के बाद तुम इस महल में नहीं जा सकोगी। इसलिए ﴿رب ابن لی عندك بيتا فی الجنة﴾ ऐ परवरदिगार! मुझे इस महल के बदले में जन्नत में आपके पास एक घर चाहिए,

﴿ونجنی من فرعون وعمله ونجنی من القوم الظالمين. (التحريم:١١)﴾

और मुझे फ़िरऔन और उसके अमले से निजात अता फ़रमा दीजिए।

अल्लाह तआला ने उसी हाल में उनको शहादत के मतर्बे पर पहुँचा दिया, सुब्हानअल्लाह।

हज़रत मशाता रज़ियल्लाहु अन्हा का ईनाम

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त भी कैसे क़द्रदान हैं कि इन दो औरतों ने अल्लाह के नाम पर क़ुर्बानी दी तो अल्लाह तआला ने भी उनको क़ाबिले रश्क अज्र दिया। हदीस पाक में आया है कि मैराज के वक़्त जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम बैतुलमक़दस की तरफ़ सफ़र कर रहे थे तो रास्ते में एक वादी में से ख़ुशबू आई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम से पूछा, जिब्रील! जो ख़ुशबू मैं यहाँ सूंघ रहा हूँ, वह तो बड़ी अनोखी ख़ुशबू है। यह कहाँ से आ रही है? जिब्रील अलैहिस्सलाम ने बताया कि अल्लाह के महबूब! फ़िरऔन के महल में 'मशाता' नाम की जो एक नौकरानी थी, यहाँ उसकी क़ब्र है। यह ख़ुशबू उसकी क़ब्र से आ रही है और आपको महसूस हो रही है।

हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा का ईनाम

हज़रत आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा को क्या ईनाम मिला? हदीस पाक में आया है कि नबी अलैहिस्सलाम के सामने उनकी बीवी मोहतरमा हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा जब आख़िरी लम्हों में थीं तो नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, ख़दीजा! आप अल्लाह तआला के पास जा रही हैं। जब जन्नत में जाओ तो वहाँ मेरी बीवियों को सलाम कहना। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हैरान होकर पूछा, ऐ अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं आपकी पहली बीवी हूँ, मुझे से पहले आपकी कौन सी बीवियाँ जन्नत में हैं? मेरे आक़ा ने इर्शाद फ़रमाया, दुनिया में आप मेरी पहली बीवी हैं मगर हज़रत मरयम और हज़रत आसिया

आप से पहले जन्नत में पहुँच चुकी हैं। अल्लाह तआला ने उनको भी मेरी बीवियाँ बना दिया, सुब्हानअल्लाह।

देखिए कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त कितने क़द्रदान हैं कि हज़रत आसिया फ़िरऔन के महल में और उसकी नेमतों को लात मारती हैं तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनको अपने महबूब की बीवी बना देते हैं। परवरदिगार! आप कितने बड़े क़द्रदान हैं कि जो बंदा आपके रास्ते में क़ुर्बानी देता है आप उसकी अवक़ात से बढ़कर उसे ईनाम अता फ़रमा देते हैं। कहाँ वह दुनिया में फ़िरऔन की बीवी थी और कहाँ जन्नत में वह अल्लाह के महबूब की बीवी बनकर ज़िंदगी गुज़ारेगी।

रहमते इलाही का सहारा

हमें भी चाहिए कि हम दीन इस्लाम की सरबुलन्दी के लिए इस्तिक़ामत के साथ क़दम आगे बढ़ाएं। इस तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मदद हमारे साथ होगी। दुआ है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें आज़माईशों से महफ़ूज़ फ़रमाए क्योंकि हम बहुत कमज़ोर हैं। अगर हम अपने आपको देखें तो वाक़ई डर लगता है। ऐ अल्लाह! हमारे पल्ले कुछ नहीं है, बस तेरी रहमत का ही सहारा है। हम ने तो सिर्फ़ कलिमा पढ़ा है। ऐ अल्लाह! तू उसी कलिमे की लाज रख लेना। ऐ अल्लाह! यह तेरे कुछ बंदे जिन्होंने तेरी धरती पर दीन का निज़ाम क़ायम किया आज पूरी दुनिया इन बे सर व सामान बंदों को डरा धमका रही है कि तुम्हारा नाम व निशान मिटाकर रख देंगे। ऐ अल्लाह! इनके पास तो तेरे सिवा कोई सहारा नहीं, मेरे मौला! आप इनकी पुश्तपनाही फ़रमा दीजिए

और अपनी मदद के साथ इनको इस्तिक़ामत नसीब फ़रमा दीजिए। परवरदिगार आलम! हमारी ज़िंदगियों को भी दीन के लिए क़ुबूल फ़रमा ले। जब तक हम ज़िंदा रहें हम दीन पर ही जमे रहें और जब मौत का वक़्त आए तो हमें भी शहादत की मौत आए, आमीन।

वो जो बेचते थे दवाए दिल

वह हस्ती आज दुनिया से चली गई है जिनकी दुआएं हमारे गिर्द पहरा दिया करती थीं। जिस तरह भेड़ बकरियों के गल्ले के लिए निगहबान और मुहाफ़िज़ होता है और उसकी मौजूदगी में भेड़िया या कोई जंगली जानवर उन भेड़ बकरियों को नुक़सान नहीं पहुँचा सकता इसी तरह शेख़ की मौजूदगी में मुरीदीन के दिलों पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत का पहरा होता है। इसलिए फ़रमाया, "सायाए मुर्शिद बेहतर अस्त अज़ ज़िक्रे हक़।"

वो जो बेचते थे दवाए दिल

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ وَّ يَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ o وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ اٰخَرَ اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ o اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَo لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِي الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ o وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ اٰخَرَ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَo وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ط بَلْ اَحْيَآءٌ وَّ لٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَo وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ o الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالُوْا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَo اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ o

وقال رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم المرء مع من احب او كما قال عليه الصلوة والسلام. سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَo وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَo وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَo

एक अज़ीम सदमा

आज हम एक ऐसी मज्लिस में यहाँ इकठ्ठे हैं कि सबके दिलों

पर एक सदमा है। एक ऐसा सदमा है कि ज़िंदगी में शायद ऐसा शदीद झटका और कोई नहीं हो सकता। आज हमारे दिलों में एक ऐसा ग़म है कि अगर वह पहाड़ पर डाल दिया जाए तो शायद उनके लिए भी उठाना मुश्किल हो जाए।

रहमते इलाही का पहरा

वह हस्ती आज दुनिया से चली गई है जिनकी दुआएं हमारे गिर्द पहरा दिया करती थीं। जिस तरह भेड़ बकरियों के गल्ले के लिए निगहबान और मुहाफ़िज़ होता है और उसकी मौजूदगी में भेड़िया या कोई जंगली जानवर उन भेड़ बकरियों को नुक़सान नहीं पहुँचा सकता इसी तरह शेख़ की मौजूदगी में मुरीदीन के दिलों पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत का पहरा होता है। इसलिए फ़रमाया, "सायाए मुर्शिद बेहतर अस्त अज़ ज़िक्रे हक़।" (मुर्शिद का साया ज़िक्रे हक़ से बेहतर है।)

हिफ़ाज़त के लिए एक मसनून दुआ

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० की शख़्सियत रहीम व शफ़ीक़ ज़ात थी। हर आदमी यूँ समझता था कि उनका मुझ से ही सबसे ज़्यादा ताल्लुक़ है। उनके ख़ूबियाँ और फ़ज़ाईल एक मज्लिस में तो बयान नहीं किए जा सकते। अलबत्ता इतना अर्ज़ करता हूँ कि यह हमारे लिए कए बहुत बड़ा सदमा है। हम इस पर सब्र करें। ﴿اللهم لا تحرمنا اجره ولا تفتنا بعده﴾ इस मसनून दुआ के पढ़ने से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाएंगे।

शेख़ की जुदाई का ग़म

मुरीद को शेख़ के साथ इश्क़ व मुहब्बत का जितना ताल्लुक़ होता है उसे शेख़ की जुदाई का ग़ाम उसके बक़द्र होता है। इस सिलसिले में हर आदमी की कैफ़ियत जुदा होती है। सलफ़ सालिहीन जब इस दुनिया से जाते थे तो उनके मुरीद व ताल्लुक़ रखने वालों पर भी यही कैफ़ियत तारी होती थी। उनके लिए यह ग़म बर्दाश्त करना मुश्किल होता था। तारीख़ ऐसे वाक़िआत से भरी पड़ी है।

मुहब्बत हो तो ऐसी

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात पर हज़रत सुहैब रूमी रज़ियल्लाहु अन्हु शिद्दते ग़म की वजह से ऊँची आवाज़ से रो पड़े और कहने लगे, ﴿واعمراه واحبيباه وااخاه﴾ दूसरे सहाबी ने उन्हें सब्र की तलक़ीन करते हुए कहा, सब्र करें ऐसा नहीं करना चाहिए। उन्होंने जवाब में फ़रमाया, उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) की मौत पर नहीं रो रहा हूँ बल्कि इस्लाम के ज़ौफ़ पर रो रहा हूँ।

ईमान की बक़ा का ज़रिया

कुछ हस्तियाँ ऐसी होती हैं कि जिनका वजूद लाखों इंसानों के ईमान की बक़ा का ज़रिया बन जाता है। ऐसे आदमियों का दुनिया से उठ जाना कोई मामूली बात नहीं होती। ऐसी हस्तियाँ तो दुनया में इंक़लाब की मानिन्द होती हैं। लेकिन—

जो बादा ख़्वाह थे पुराने वो उठते जाते हैं

उनके चले जाने से ज़मीन के वे टुकड़े रोते हैं जहाँ पर वह

बैठकर इबादत किया करते थे। आसमान के वे दरवाज़े रोते हैं जहाँ से उनके लिए रिज़्क़ उतारा जाता था। उन हज़रात की जुदाई दिल पर ऐसा ज़ख़्म कर जाती है कि जिसे कोई भी मरहम नहीं भर सकता।

जब हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० की वफ़ात हुई तो अमीर ख़ुसरो रह० ने हिन्दी ज़बान में कुछ अशआर लिखे। उनमें से एक मिसरा बहुत मशहूर हुआ। फ़रमाया–

चल ख़ुसरो घर आपने सांज पई सब देस

ऐ ख़ुसरो! सारे देस में एक तारीकी मालूम होती है, तू चल अपने घर की तरफ़।

पीर और मुरीद की कभी न ख़त्म होने वाली मुहब्बत

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० पीर थे और अमीर ख़ुसरो रह० उनके मुरीद थे। उन दोनों में इतनी मुहब्बत थी कि ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० यूँ फ़रमाया करते थे कि अगर शरअ शरीफ़ की इजाज़त होती तो मैं यह वसीयत कर जाता कि मुझे और अमीर ख़ुसरो को एक ही क़ब्र में दफ़न किया जाए।

दूसरी तरफ़ अमीर ख़ुसरो रह० का यह हाल था कि एक बार ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० की ख़िदमत में एक सवाली आया। उसने सवाल किया। उस वक़्त हज़रत के पास कुछ न था। लिहाज़ा हज़रत रह० ने अपने जूते उसे दे दिए और कहा कि यही जूते हैं ले जाओ। जी हाँ जो सख़ी होते हैं वे अपने दर से किसी को ख़ाली नहीं जाने दिया करते।

वह आदमी हज़रत रह० के जूते लेकर जिस रास्ते से जा रहा

था अमीर ख़ुसरो रह० उसी रास्ते से ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० के पास आ रहे थे। वह जूते उस साइल के पास देखकर पहचान गए कि आज इस साइल को हज़रत के दरबार से यह नियाज़ मिली है। चुनाँचे कहने लगे, भाई! क्या तुम मेरे साथ सौदा करने को तैयार हो कि ये जूते मुझे दे दे और मैं कुछ पैसे तुम्हें दे देता हूँ। वह समझ गया चुनाँचे कहने लगा कि नहीं बल्कि मैं इसके बदले आपसे इतनी ज़्यादा क़ीमत लूंगा। अमीर ख़ुसरो रह० ने उसकी मन मर्ज़ी क़ीमत उसको दे दी और अपने शेख़ के जूते लेकर सर पर रखे और हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुए अमीर ख़ुसरो रह० अपने शेख़ की मुहब्बत में कहते थे—

मन तू शुदम तू मन शुदी मन तन शुदन तू जाँ शुदी
ता कस न गोयद बाद अज़ीं मन दीगरम तू दीगरी

मैं तू हो जाऊँ और तू मैं हो जाए और मैं तन बन जाऊँ और तू रूह बन जाए ताकि बाद मे कोई यह न कह सके कि तू और है और मैं और हूँ।

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का ग़म

हज़रत मुर्शिदे आलम की शफ़क़तें और इनायतें ज़िंदगी भर रुलाती रहेंगी। इसीलिए किसी आरिफ़ ने कहा :

حال من در ہجر حضرت کم تر از یعقوب نیست
اوں پسر گم کردہ بود و من پدر گم کردہ بود

हाल मन दर हिज्रे हज़रत कम तर अज़ याक़ूब नेस्त

ओं पिसर गुमकर्दा बूद ओ मन पिदर गुमकर्दा बूद

मेरा हाल याक़ूब अलैहिस्सलाम के हाल से मुख़्तलिफ़ नहीं है क्योंकि अगर उनका बेटा उनसे जुदा हो गया था तो मेरे तो बाप मुझ से जुदा हो गए।

ग़ौर तो कीजिए हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम पर क्या कैफ़ियत गुज़री थी, क़ुरआन मजीद गवाह है कि ﴿وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ (یوسف:٨٤)﴾ रो रो कर उनकी आँखें सफ़ेद हो गई थीं। कहने वाले ने गोया यूँ कहा कि अगर वे बेटे की जुदाई में इतना रो सकते थे तो बाप की जुदाई में कोई कितना रोएगा।

मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० पर शेख़ की वफ़ात का असर

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० जब फ़ौत हुए तो हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० को पंद्रह दिन तक ख़ून के दस्त आते रहे। उनके शेख़ के फ़ौत होने पर इतना सदमा हुआ। यक़ीनन एक फ़ितरी बात है कि जिसका जितना ताल्लुक़ ज़्यादा हो उस पर जुदाई का असर भी उतना ही ज़्यादा होता है।

अजीब व ग़रीब शख़्सियत

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० जैसी हज़ारों ख़ूबियों और फ़ज़ाईल वाली ज़ात हज़ारों साल में कोई पैदा होगी। उनके तक़्वे, ज़ोहद और इल्म व इरफ़ान पर आलमे इस्लाम के मशाइख़ और उलमा ने मुहर लगा दी थी। उनको अल्लाह तआला ने पूरी दुनिया में क़ुबूलियते आम्मा (आम) और क़ुबूलियते ताम्मा (पूरी) नसीब कर

दी थी। ऐसी हस्तियाँ बार बार दुनिया में नहीं आया करतीं।

سرود رفتہ باز آید کہ ناید
نسیم از حجاز آید کہ ناید
سرآمد روزگار آں چپے
دگر دانائے راز آید کہ ناید

मालूम नहीं ऐसी निराली हस्ती कोई और होगी या नहीं। इसी मज़मून को एक और शायर ने यूँ बयान किया—

हज़ारों साल नर्गिस अपनी बे नूरी पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता चमन में दीदावर पैदा

हज़रत मुर्शिदे आलम रहमतुल्लाहि के दिन व रात की एक झलक

मेरे पीर व मुर्शिद हज़रत उन हज़रात में से थे जिन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी ﴿اِنِّیْ دَعَوْتُ قَوْمِیْ لَیْلًا وَّنَهَارًا﴾ के मिस्दाक़ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के दीन की सरबुलन्दी केलिए लगा दी। उनके सारे दिन का प्रोग्राम रज़ाए इलाही को हासिल करना होता था। उनकी हर वक़्त की सोच ही यही हुआ करती थी। उनकी सालिकीन (मुरीदों) पर हर वक़्त नज़र होती थी। हर एक पर नज़र रखते थे। रोक-टोक के साथ तर्बियत करते थे। ग़लती पर डांटते भी थे और ऐब को छुपाते भी थे। उनके कमालात एक महफ़िल में नहीं गिने जा सकते। अगर वह आज इस महफ़िल में रौनक़ अफ़रोज़ होते तो महफ़िल का रंग ही जुदा होता। उनके मुनव्वर और रोशन चेहरे

को देखकर हमें ताज़गी नसीब होती। रहमतें और फ़ैज़ हासिल होते।

सहाबा किराम पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल का असर

मोहतरम जमाअत! यह सदमा सिर्फ़ हमें ही पेश नहीं आया बल्कि बड़ों के साथ भी पेश आया था। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं :

لما كان اليوم الذى دخل فيه رسول اللهِ صلى الله عليه وسلم المدينة

اضاء منها كل شئى ولما كان اليوم الذى مات فيه اظلم منها كل شئى.

जिस दिन रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुए तो मदीना की हर चीज़ मुनव्वर हो गई और जिस दिन रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वफ़ात पाई तो मदीना मुनव्वरा की हर चीज़ पर ज़ुलमत (अंधेरी) नाज़िल होने लगी।

फिर आगे एक और बात कही, फ़रमाया :

وما تقضا ايدينا عن التراب وانا لفى دفنه صلى الله عليه وسلم حتى انكرنا قلوبنا.

और हम ने अभी रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दफ़न की मिट्टी से हाथ नहीं झाड़े थे कि हमने अपने दिलों की कैफ़ियत को बदलते हुए देख लिया यानी वे अनवरात और फ़ैज़े नबुव्वत जो हर आपकी मुबारक ज़िंदगी में नसीब होते थे उनमें तब्दीली आ गई। आज हमारे ऊपर भी यही कैफ़ियत है, यह एक क़ुदरती बात है।

उस्वए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनाने की तलक़ीन

जब कोई मुफ़स्सिर या मुहद्दिस दुनिया से जाते और उनके मुरीद इकठ्ठे होते और एक दूसरे से मिलत तो उस वक़्त यह आयत पढ़ते ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾ इसका मतलब यह होता था कि तुम्हारे लिए रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उसवा में बेहतरीन नमूना है। इस पर एक शायर ने शे'र लिखे हैं उसका तर्जुमा ये है :

तुझ पर कोई भी मुसीबत और परेशानी आए तो तू उस पर सब्र कर और तू जान ले कि कोई भी इंसान हमेशा रहने वाला नहीं बना और तू सब्र कर कि इकराम और बुज़ुर्गी वाले लोग सब्र करते रहे हैं। इसलिए कि मुसीबत अगर आज आती है तो आख़िर कल यह चली जाएगी। और ऐ मुख़ातब! अगर तुझ पर कोई ऐसी मुसीबत आ जाए जिसकी वजह से मुँह खुला का खुला रह जाए तो याद कर उस मुसीबत को जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात की वजह से सहाबा किराम को पेश आई। रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुदाई के ग़म से बड़ा कोई ग़म भी मोमिन को पेश नहीं आ सकता।

इंक़लाब लाने वाली हस्ती का तर्ज़े अमल

अब सवाल यह पैदा होता है कि क्या इस जुदाई में रो-रो कर बुरा हाल कर लें? क्या आँसू बहाते चले जाएं। क्या आँखें सावन भादो की तरह बरसती चली जाएं। और क्या हम इसी तरह ग़म की हालत में अपना वक़्त गुज़ारते रहें? नहीं बल्कि हमें इस ग़म

पर सब्र करना है और यह देखना है कि हमारे शेख़ ने हमें क्या तालीमात दी हैं। दुनिया में जो भी हस्तियाँ दुनिया को संवारने वाली होती हैं उनकी मेहनतें और कोशिशें सिर्फ़ इन्फ़िरादी नहीं हुआ करतीं बल्कि इंक़लाब लाने वाली यह हस्तियाँ लोगों को एक तरीक़ा बताने वाली होती हैं और उनके अंदर उस मेहनत की जड़ें इतनी गहरी कर देते हैं कि जब वे इस दुनिया में नहीं भी रहते तो उनके साथ ताल्लुक़ रखने वाले उस रास्ते पर चलते रहते हैं।

सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का बसीरत आमूज़ ख़िताब

यही बात थी कि जनाब रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम की ऐसी तर्बियत की कि जब आप की वफ़ात हुई तो सहाबा किराम उस ग़म की वजह से होश खो बैठे थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे जलीलुल क़द्र सहाबी हाथ में तलवार लेकर कहने लगे कि जिसने यह कहा कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वफ़ात पा गए हैं तो मैं उसकी गर्दन उड़ा दूंगा। हुज़ूर तो अपने आक़ा से मिलने के लिए तशरीफ़ ले गए हैं। लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात भी उनके सामने थीं। एक रास्ता तय कर दिया गया था। एक काम करने का रुख़ था जिसकी जड़ें बहुत गहरी थीं। इसीलिए सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और हज़रत उमर की इस कैफ़ियत पर उस तरह ग़लबा पाया कि अपनी क़ौम को मुख़ातब करके कहने लगे, लोगो! सुनो अगर तुम रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत करते थे तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम फ़ौत हो गए हैं और अगर तुम अल्लाह की इबादत करते थे तो अल्लाह ज़िंदा है उसे कभी मौत नहीं आएगी, अल्लाहु अकबर। फ़रमाया :

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَائِنْ مَّاتَ اَوْقُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْئًا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ٥

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम फ़रमाते थे कि यह आयत हम पहले भी पढ़ते थे लेकिन मौक़े और महल पर इसकी तिलावत से हमें यूँ मालूम हुआ जैसे क़ुरआन की यह आयतें आज हम पर नाज़िल हो रही हैं—

गिरह कुशा है न राज़ी न साहिबे कश्शाफ़
तेरे वजूद पे जब तक न हो नुज़ूले किताब

जब तक किताब नाज़िल होने वाली कैफ़ियत न बना करे तब तक यह गिरह नहीं खुला करती। सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े होकर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाएब होने का हक़ अदा कर दिया। उन्होंने जब यह आयतें पढ़ीं तो वे हज़रात ग़म की उस कैफ़ियत से निकल गए जिसने उनको हवास को दूर कर दिया था।

हमारी ज़िम्मेदारी

आज हमारे ऊपर भी जुदाई का एक ग़म है। इस वक़्त हमारे सामने दो बातें हैं। या तो यह कि इस जुदाई के ग़म से हम नाउम्मीद होकर बैठ जाएं और दूसरा रास्ता यह है कि मुर्शिदे आलम रह० ने अपनी तालीमात में जिस तरह हमें भरा है और

पूरी ज़िंदगी दीन पर कारबंद होने के लिए मुस्तइद रहने की तालीमात दीं हम उन तालीमात को सामने रखते हुए नए अज़्म के साथ इस पर क़दम उठाएं। हमें इस रास्ते पर नए अज़्म और हिम्मत के साथ चलना है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमारे इस ग़म और बोझ के सदमे को जानते हैं। और याद रखना कि मोमिन पर जब कोई सदमा गुज़रता है तो उसकी ज़िंदगी कि कितनी ख़ताओं को बख़्श दिया जाता है। अगर इसमें हमने सब्र व ज़ब्त दिखाया और आपके तरीक़े को अपनाते हुए अपनी ज़िंदगी को तक़्वे और परहेज़गारी के मुताबिक़ गुज़ारा तो यक़ीनन हम इस दुनिया में भी कामयाब हो जाएंगे और आख़िरत में भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रज़ा नसीब होगी क्योंकि हदीस पाक में आया है ﴿المرء مع من احب﴾। बंदा रोज़े महशर उसी के साथ होगा जिसके साथ उसको मुहब्बत होगी। मेरे दोस्तो! हमें हज़रत मुर्शिदे आलम रह० से बेपनाह मुहब्बत थी अगर यह मुहब्बत आइन्दा भी हमारे दिलों में रहेगी और हम उनको इर्शादात व फ़रमानों पर पूरी जान व दिल के साथ अमल करते रहेंगे तो यक़ीनन यह मुहब्बत रंग लाएगी जैसे अल्लाह तआला ने दुनिया में उनका साथ नसीब किया। हौज़े कौसर पर भी हमें उनका साथ नसीब फ़रमाएंगे। यक़ीनन यह सही बात है। हम उनकी उम्मीदों पर पूरे उतरें। उनकी उम्मीदें थीं हम भी ऐसी मेहनत करें कि हमें भी मारिफ़ते इलाही के जाम भर-भर कर पिलाए जाएं क्योंकि माली जब एक पौधा लगाता है तो उसका जी चाहता है कि उसको फलता फूलता देखे। हम अगर शरिअत व सुन्नत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेंगे और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रज़ा जोई के लिए तन-मन-धन की बाज़ी लगा देंगे तो हज़रत मुर्शिदे आलम रह० की रूह को ख़ुशी होगी। आज

हम ने इस बात का अहद करना है बल्कि यूँ समझें कि नया करना है कि जो मामूलात हज़रत ने बताए और जो पैग़ाम वह दिन रात सुनाया करते थे, भले हम से पहले ग़फ़लत हुई, हम ने वक़्त की क़द्र नहीं की जैसी करनी चाहिए थे लेकिन आज वह ज़ख़म ताज़े हो रहे हैं, आज अंदर का इंसान जाग रहा है, चोट लगने से उसकी आँख खुली है, हम आइन्दा ज़िंदगी उनकी तालीमात के मुताबिक़ गुज़ारने का इरादा करें और इसके लिए जान व दिल से कोशिश करें। फिर अल्लाह तआला रहमत फ़रमाएंगे और हमें हमारे इन इरादों में कामयाब फ़रमा देंगे। ﴿وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ﴾ और अल्लाह तआला पर यह काम कोई मुश्किल नहीं है। कोशिश बंदे के ज़िम्मे है, इसीलिए किसी ने एक अजीब बात कही कि दुनिया का सबसे लंबा सफ़र एक क़दम उठाने से शुरू हो जाता है। हम दिल में यह इरादा करके क़दम उठाएंगे तो यक़ीनन अल्लाह तआला हमें मंज़िल नसीब फ़रमाएंगे। उसका मुशाहिदा, उसकी रज़ा और उसकी मुलाक़ात नसीब होगी।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत उतरने की पहचान यह है कि जब वह आ जाती है तो हमेशा बंदे की किश्ती को किनारे लगा दिया करती है। हम से अब तक जो ग़ल्तियाँ होती रही हैं या आइन्दा भी हों तो उन पर हसरत और अफ़सोस करते हुए नफ़्स के हाथों मात न खाएं बल्कि मंज़िल की तरफ़ बढ़ने की कोशिश करते रहें। जैसे दो पहलवान आपस में लड़ते हैं तो उनमें से हर एक दूसरे को गिराने की कोशिश करता है। अगर कोई नीचे भी आ जाए तो वह नीचे आने से भी हिम्मत नहीं हारता बल्कि नीचे आकर भी इसकी कोशिश में रहता है कि मैं ऊपर वाले को नीचे ले आऊँ। इसलिए की वह दांव आज़माता है, अक़्ल का नूर

इस्तेमाल करता है, कोशिश और फ़न को इस्तेमाल करके नीचे आने वाला फ़तेह पाने वाला बन जाता है। अगर कभी हम ठोकर भी खाएं तो दोबारा संभल जाएं और तौबा ताएब होकर मंज़िल को सामने रखते हुए क़दम उठाते चले जाएं। इसीलिए एक बुज़ुर्ग ने क्या ही प्यारी बात फ़रमाई—

न चित कर सके नफ़्स के पहलवाँ को
तो यूँ हाथ पाँव भी ढीले न डाले
अरे इससे कुश्ती तो है उम्र भर की
कभी वह गिरा ले कभी तू गिरा ले

अगर किसी मौक़े पर नफ़्स हमें दबाता है तो हम भी किसी दूसरे मौक़े पर नफ़्स को दबा लें। जैसे पहलवान खेलते हैं और एक के दूसरे से स्कोर ज़्यादा होते हैं। लेकिन वे पुरउम्मीद रहते हैं कि नहीं, इंशाअल्लाह हम जीतेंगे। इसी तरह इस नफ़्स की जंग में हम अपनी तरफ़ से कोशिश करते रहें और दिल में यह तमन्ना रखें कि जैसे हमारे हज़रत रह० का कामयाब और कामरान गए, उनके फ़ैज़ व बरकात से इस नफ़्स की जंग में इंशाअल्लाह आख़िरी फ़तेह हमारी होगी। क्या मतलब? मतलब यह है कि इंशाअल्लाह हमें भी कलिमे पर मौत आएगी और यही हमारी फ़तेह होगी।

मुर्शिदे आलम रह० के आख़िरी लम्हात की एक झलक

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० की मौत भी कितनी प्यारी थी। नवासे क़ुरआन मजीद की तिलावत कर रहे हैं, वे ये आयतें पढ़ रहे हैं :

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ (البقرة:١٥٣)

जब वह यह आयत पढ़ते हैं तो हज़रत उनको देखते हैं खुश होते हैं। उन्होंने आगे पढ़ा ﴿اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ﴾ हज़रत ने ये अल्फ़ाज़ सुने, चेहरे पर मुस्कराहट तारी हुई और जान जान बख़्शने वाले के सुपुर्द कर दी।

نشان مرد مومن با تو گویم

چوں مرگ آید تبسم برلب اوست

मैं तुम्हें मर्दे मोमिन की पहचान बता दूँ कि जब उस पर मौत आती है तो उसके लबों पर मुस्कराहट होती है। कल आप और हम सब ने देख लिया कि हज़रत रह० किस तरह मुस्कराते हुए दुनिया से तशरीफ़ ले गए। उनका कैसा खिला हुआ चेहरा था, नहलाते वक़्त बदन नरम व नाज़ुक महसूस हो रहा था। यूँ लगता था कि बस थोड़ी देर के लिए आराम कर रहे हैं। मेरे दोस्तो! हमारे लिए एक रास्ता तय है। हम दिल में यह अहद करें कि जो बाग़ उन्होंने लगाया है हम उसमें खिलने वाले फूल बनेंगे और हम अपनी खुशबू से इस बाग़ को महकाएंगें।

क़ुरआन पाक से ताल्लुक़ जोड़ें

आप अपने आख़िरी वक़्त में क़ुरआन सुनते हुए दुनिया से रुख़्सत हुए और अपनी ज़िंदगी में भी क़ुरआन पाक को अज़ीज़ बनाए रखा। अपनी मामूल की गुफ़्तगू में भी अकसर आयते क़ुरआनी का इस्तेमाल फ़रमाया करते थे। अपने बयानात में वह आयात को अपने मतलब के साथ इतनी रवानी और

सिलसिलावार पढ़ते थे कि लगता था कि उलूम व मआरिफ़ का एक दरिया है जो बहा चला जा रहा है। आपने अपने ताल्लुक़ वालों और मुरीदों को भी हमेशा यही नसीहत की कि क़ुरआन से अपना ताल्लुक़ मज़बूत कर लें। इसी में हमारी निजात है। आप फ़रमाया करते थे :

"हमें कहता है यह क़ुरआन, ओ मेरे मानने वाले मुसलमान!

तेरे हाथ में हो क़ुरआन फिर तू दुनिया में रहे परेशान,

तेरे हाथ में हो क़ुरआन फिर तू दुनिया में हो नाकाम,

तेरे हाथ में हो क़ुरआन और तू दुनिया में बने ग़ुलाम,

ग़ुलामी नफ़्स की हो शैतान की हो या किसी इंसान की हो, नाँ नाँ,

हमें कहता है यह क़ुरआन, ओ मेरे मानने वाले मुसलमान,

"इक़रा व रब्बुकल अकरम" तू पढ़ क़ुरआन तेरा रब करेगा तेरा इकराम,

तेरा रब तुझे इज़्ज़त व वक़ार देगा, तेरे ज़ाहिर व बातिन को निखार देगा।

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० की तालीमात का निचोड़

फ़क़ीर इस मौक़े पर वे तीन आयतें पढ़ता है जो हज़रत रह० अक्सर तिलावत फ़रमाया करते थे। हज़रत मुर्शिदे आलम रह० वे आयतें हमें अपनी तालीमात के निचोड़ के तौर पर सुनाते थे लेकिन उस वक़्त बात समझ नहीं आती थी। काश! अल्लाह तआला हमें आज समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे।

पहली आयत यह इर्शाद फ़रमाया करते थे :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنْ تَتَّقُوْا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا. (الانفال:٢٩)﴾

यह आयत हमारे लिए एक बहुत बड़ा भरोसा है और दिल के लिए तक़्वियत का सामान है। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं कि ऐ ईमान वालो! अगर तुम तक़्वा अख़्तियार करोगे तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त तुम्हें क़ुव्वत फ़ारेक़ा नसीब करेगा जिससे तुम्हें हक़ व बातिल की पहचान रहेगी। इसलिए हम अगर परहेज़गारी को अपनाएंगे और सर के बालों से लेकर पाँव के नाख़ूनों तक तक़्वा व तहारत की ज़िंदगी गुज़ारेंगे तो अल्लाह के क़ुरआन के मुताबिक़ हमें यह क़ुव्व्त फ़ारेक़ा नसीब हो जाएगी और अपनी आइन्दा ज़िंदगी में हक़ व बातिल की पहचान करते हुए गुज़ार पाएंगे।

दूसरी आयत यह इर्शाद फ़रमाया करते थे :

فَاَقِيْمُوْا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ هُوَ مَوْلٰكُمْ ج فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُo (الحج:٧٨)

तुम नमाज़ अदा करो और ज़कात दिया करो और अल्लाह को मज़बूती से पकड़ लो। (जब पकड़ लोगे तो) वह तुम्हारा सरपरस्त बन जाएगा। वह कितना बेहतरीन मौला है और कितना अच्छा मददगार है।

हज़रत रह० अपनी मज्लिस के ख़त्म पर अक्सर यह आयत भी पढ़ा करते थे ﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اصْبِرُوْا﴾ ऐ ईमान वालो! तुम अपने अंदर सब्र व ज़ब्त पैदा करो। मैं ये वही अलफ़ाज़ नक़्ल करने की कोशिश कर रहा हूँ जो हज़रत रह० फ़रमाया करते थे, ऐ ईमान वालो! तुम अपने फ़र्ज़े मंसबी पर मिटो ﴿وَصَابِرُوْا﴾ और

दूसरों को मर मिटने की तलक़ीन करते रहो ﴿وَرَابِطُوْا﴾ और तुम अपने आख़िरी दम तक उसके ऊपर डटे रहो ﴿وَاتَّقُوا اللّٰهَ﴾ अगर तुम परहेज़गारी को अख़्तियार करोगे तो ﴿لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ﴾ फिर कामयाबी तुम्हारे क़दम चूमेगी।

दिल के ज़ख़म के लिए मरहम

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें तक़्वा और परहेज़गारी के साथ हज़रत मुर्शिदे आलम रह० के नक़्शे क़दम पर चलने की और उनकी मुहब्बत को दिल में हमेशा बेहतर से बेहतरीन बनाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे। अल्लाह तआला आपके बेटों को लंबी उम्र नसीब फ़रमाए। ये हमारे हज़रत रह० की यादगारें हैं। इनके कंधों पर इस वक़्त बड़ा बोझ है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इनको इस बोझ का उठाना आसान फ़रमा दे। ﴿الولد سر لابيه﴾ अलहम्दुलिल्लाह हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान क़ासमी मद्देज़िल्लुहू हमारे दर्मियान मौजूद हैं। जैसे बाप वफ़ात पा जाए तो छोटे भाई बड़े भाई को देखकर कुछ सब्र और सुकून हासिल कर लिया करते हैं। आज इस महफ़िल में वह हमारे बड़े भाई की हैसियत से हैं। वह हमारे वालिद की जगह हैं। उनको देखकर फिर भी कुछ ढाढस बंध जाती है बल्कि दिल के ज़ख़्म पर मरहम आ जाती है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनका साया हमारे सरों पर सलामत रखे। हमारे ईमानों की हिफ़ाज़त फ़रमाए और हमारे मुहाफ़िज़ और हमारे निगहबान के चले जाने के बाद अल्लाह रब्बुइज़्ज़त हमें बेसहारा न बना दें और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें नफ़्स व शैतान के हवाले न कर दें। हम उसकी रहमत के तलबगार हैं। उससे उसकी बरकतें मांगते हैं। उसके सामने हाथ जोड़कर माफ़ी चाहते हैं कि ऐ

अल्लाह! तेरे एक मक़्बूल बंदे की दुआएं हमारे शामिले हाल होती थीं, हमारी ग़ल्तियाँ छिप जाती थीं, ऐ अल्लाह! आज वे दुआएं नहीं हैं लेकिन तू हमें वही हिफ़ाज़त अता फ़रमा देना। ﴿اللهم لا تحرمنا اجره ولا تفتنا بعده﴾ ऐ अल्लाह! अपने इस मक़्बूल बंदे के बाद हमें किसी फ़ित्ने में न डाल देना। ऐ अल्लाह! हम नाप तोल के क़ाबिल नहीं, कहीं हमारी आज़माईश न कर लेना। अगर तूने नाप-तोल करना शुरू कर दी तो हम मीज़ान पर पूरे नहीं उतर सकेंगे। रहमत का मामला फ़रमाना, हमारे हज़रत ने भी शफ़क़त का मामला फ़रमाया, हम पहले भी फ़ज़ली हैं, तेरा फ़ज़्ल रहा और उससे काम चलता रहा। ऐ अल्लाह! अब भी रहमत फ़रमा देना और हमारे बेड़े को पार कर देना। (आमीन सुम्मा आमीन)

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.﴾

अख़्लाक़े हमीदा

अच्छे अख़लाक़ का दूसरा नाम ''अच्छा किरदार'' है। याद रखना कि किरदार देखने में एक बेक़ीमत सी चीज़ नज़र आती है लेकिन इंसान उसके ज़रिए बड़ी से बड़ी क़ीमती चीज़ को ख़रीद लिया करता है। दुनिया तलवार का मुक़ाबला तो कर सकती है मगर किरदार का मुक़ाबला कभी नहीं कर सकती। हमेशा किरदार की फ़तेह होती है।

अख़्लाक़े हमीदा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!
فَاَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo
وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِى الْاَرْضِ. وقال رسول اللّٰهِ
صلى اللّٰه عليه وسلم الدين النصحية. او كما قال عليه
الصلوة والسلام. سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَo
وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ o وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ o

अच्छे अख़्लाक़ वाले इंसान का मक़ाम

एक आम दस्तूर है कि पेड़ अपने फल से पहचाना जाता है। इसी तरह इंसान अपने अख़्लाक़ से पहचाना जाता है। जिस पेड़ का फल अच्छा और मीठा हो, ख़ूबसूरत भी हो और ज़ाएक़े में भी लज़ीज़ हो, लोग उस पेड़ की हिफ़ाज़त भी करते हैं और उसे पानी भी पहुँचाते हैं। इसी तरह जिस इंसान के अख़्लाक़ अच्छे हों, जिस के पास बैठे तो फ़ायदा पहुँचाए और जो मुसीबत में दूसरों के काम आए। ऐसे बंदे को भी दूसरे लोग पसन्द करते हैं। इसीलिए अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया ﴿وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِى الْاَرْضِ. (سورة الرعد:١٧)﴾ और जो इंसानों को नफ़ा पहुँचाता है अल्लाह तआला उसे ज़मीन में जमा देते हैं। दीने इस्लाम क्योंकि दीने

फ़ितरत है इसलिए इसमें अच्छे अख़्लाक़ पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया गया है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि ईमान लाने के बाद सबसे अफ़ज़ल अमल ख़ुश ख़ल्क़ी है। एक और हदीस में फ़रमाया गया है ﴿اكمل المؤمنين ايمانا احسنهم خلقا﴾ ईमान वालों में से कामिल मोमिन वह है जिसके अख़्लाक़ सबसे अच्छे हों। गोया अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के पास यह बंदे को तोलने एक का मैयार है। इस मैयार के ज़रिए बंदा ख़ुद भी अंदाज़ा कर सकता है कि मैं कितने पानी में हूँ। अच्छे अख़्लाक़ वाले आदमी को लोग भी पसन्द करते हैं और परवरदिगार आलम भी उसे पसन्द करते हैं। लिहाज़ा जिस इंसान को ख़ुश ख़ल्क़ी नसीब हो जाती है उसे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से बड़ी नेमत नसीब हो जाती है। अच्छे अख़्लाक़ को इसांन की सीरत कहा जाता है। जिस तरह ख़ूबसूरत इंसान को देखने से आँखें ख़ुशी होती हैं इसी तरह ख़ूबसीरत इंसान के मिलने से दिल ख़ुश होता है। यही वजह है कि नेक सीरत इंसान से हर बंदा मुहब्बत करता है और जब किसी इंसान से मुहब्बत होगी तो यक़ीनन उसकी ख़ैरख़्वाही दिल में आएगी। वह फिर उसकी पीठ पीछे भी ख़ैरख़्वाही करेगा।

इसीलिए नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम यह दुआ मांगा करते थे ﴿اللهم حسنت خلقى فحسن خلقى﴾ ऐ अल्लाह! जिस तरह तूने मेरी सूरत अच्छी बनाई है तू मेरे अख़्लाक़ को भी अच्छा कर दे।

अच्छे अख़्लाक़ कमाले ईमान की अलामत हैं

किसी भी मोमिन के ईमान का उसके अख़्लाक़ पर सीधा असर पड़ता है। अगर उसका ईमान मज़बूत है तो उसके अख़्लाक़

अपने आप संवर जाएंगे क्योंकि ख़ौफ़े ख़ुदा उसको हर क़िस्म की बदख़ुल्क़ी को छोड़ने पर मजबूर कर देगा। वह हमेशा दूसरों के हुक़ूक़ का ख़्याल रखेगा और दूसरे को राहत पहुँचाने की हर मुमकिन कोशिश करेगा।

इसीलिए नबी अकरम सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मोमिनीन में सबसे कामिल ईमान वाला वह है जो उनमें अख़्लाक़ के एतिबार से अच्छा है।" सुब्हानअल्लाह कैसा पैमाना बताया है कि कमाले ईमान की निशानी कसरत इबादत नहीं बल्कि अख़्लाक़ का अच्छा होना है। एक और हदीस पाक में आया है :

﴿المؤمن ليدرك بحسن خلقه درجة قائم الليل وصائم النهار.﴾

बेशक मोमिन बंदा अपने अच्छे अख़्लाक़ की वजह से रातों रात नमाज़ में खड़े रहने वाले और दिन भर रोज़ा रखने वाले आदमी का दर्जा पा लेता है।

सबसे बेहतरीन चीज़

एक बार एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! सबसे बेहतरीन चीज़ कौन सी हो सकती है जो किसी को अता की गई हो। आपने जवाब में फ़रमाया ऐसी चीज़ हुस्ने अख़्लाक़ है।

अच्छे अख़्लाक़ सबसे बड़ी नेमत सबसे बड़ी दौलत और सब से बड़ा हथियार है। जिसके पास भी यह होता है उससे बहुत नफ़ा उठाता है।

किरदार की फ़तेह

अच्छे अख़्लाक़ का दूसरा नाम "अच्छा किरदार" है। याद

रखना कि किरदार देखने में एक बेक़ीमत सी चीज़ नज़र आती है लेकिन इंसान उसके ज़रिए बड़ी से बड़ी क़ीमती चीज़ को ख़रीद लिया करता है। दुनिया तलवार का मुक़ाबला तो कर सकती है मगर किरदार का मुक़ाबला कभी नहीं कर सकती। हमेशा किरदार की फ़तेह होती है। सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाया करती थीं ﴿فتحت المدينة بالاخلاق﴾ कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मदीने को अख़्लाक़ के ज़रिए फ़तेह फ़रमाया था।

अख़्लाक़ के मर्तबे

अख़्लाक़ के तीन मर्तबे हैं :

पहला मर्तबा

अख़्लाक़ का एक मर्तबा वह है जो यहूदिया को मिला उसे अख़्लाक़े हमीदा कहते हैं। वह यह था कि तुम लोगों के साथ बराबरी का मामला रखो। ﴿اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَ الْعَيْنَ بِالْعَيْنِ(المائده ٤٥)﴾ जान के बदले जान और आँख के बदले आँख। क्या मतलब? मतलब यह है कि जितना कोई तुम्हें तकलीफ़ पहुँचाता है अपना बदला लेने के लिए तुम भी उतनी ही तकलीफ़ पहुँचा सकते हो। अलबत्ता उससे ज़्यादा तकलीफ़ न पहुँचाना।

दूसरा मर्तबा

अख़्लाक़ का एक मर्तबा ईसाईयों को भी मिला है। उनको यहूदियों से बुलन्द मर्तबे का अख़्लाक़ मिला जिसे ''अख़्लाक़े करीमाना'' कहते हैं। वह अख़्लाक़ ये थे कि अगर तुम्हें कोई

तकलीफ़ पहुँचाए तो तुम उसको माफ़ कर दो। इसीलिए ईसाई जो पहाड़ी का वअज़ दोहराते हैं उसमें वे कहते हैं कि अगर तुम्हारे एक गाल पर कोई थप्पड़ लगाए तो तुम अपना दूसरा गाल भी उसके सामने पेश कर दो। वह इसे अख़्लाक़ का बड़ा मर्तबा समझते हैं।

तीसरा मर्तबा

अख़्लाक़ का एक मर्तबा उम्मते मुस्लिमा को भी मिला है जिसे "अख़्लाक़े अज़ीमा" कहते हैं चुनाँचे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴿وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ (آل عمران:١٥٩)﴾ और आप तो अख़्लाक़ के बहुत बुलन्द मर्तबे पर फ़ाइज़ हैं। अख़्लाक़े अज़ीमा ये हैं ﴿فَاعْفُ عَنْهُمْ﴾ ऐ महबूब! उन्हें माफ़ कर दीजिए। ﴿وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ﴾ और उनके लिए अल्लाह के हुज़ूर इस्तिग़फ़ार कीजिए, ﴿وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ (آل عمران:١٥٩)﴾ और उनको अपने मश्वरे में शामिल भी फ़रमा लीजिए यानी अपने भाई की ग़ल्ती को सिर्फ़ माफ़ ही नहीं करना बल्कि उसके लिए अल्लाह के हुज़ूर इस्तिग़फ़ार भी करनी है ओर फिर पहले वाले ताल्लुक़ात को बहाल भी रखना है। और उन्हें अपने मश्वरों में शामिल भी रखना है। इसीलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ईमान वालों की सिफ़्त क़ुरआन में इर्शाद फ़रमाई कि ﴿وَالْكَاظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ط وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ (آل عمران:١٣٤)﴾ वह ग़ुस्से को पी जाने वाले होते हैं और वह इंसानों को माफ़ कर देने वाले होते हैं। अल्लाह तआला ऐसे नेकोकारों से मुहब्बत फ़रमाते हैं। गोया हमने दूसरों को सिर्फ़ माफ़ ही नहीं करना बल्कि हमने उनकी ग़ल्तियों

के बावजूद उनको अपने क़रीब करना है। इसीलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ اِدْفَعْ بِالَّتِي هِيَ اَحْسَنُ.﴾

तुम बुराई को अच्छाई के साथ धकेलो। जब तुम बुराई का बदला अच्छाई के साथ दोगे तो नतीजा यह निकलेगा :

فَاِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ. (حم سجدہ:۳۴)

कि तुम्हारे और जिसके दर्मियान दुश्मनी है वह बंदा फिर तुम्हारा जिगरी यार बन जाएगा। यूँ दुश्मनी दोस्ती में बदल जाएगी और नफ़रतों की बजाए दिलों में मुहब्बतें पैदा हो जाएंगी। अल्लाह तआला ने जो यह इर्शाद फ़रमाया कि ﴿وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ﴾ और जो इंसानों को नफ़ा पहुँचाता है अल्लाह तआला उसे ज़मीन में जमा देते हैं। इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला उसको क़दम ज़मीन जमा दिया करते हैं। यह एक ख़ुदाई क़ानून है कि जो बंदा दूसरों के फ़ायदे के लिए ज़िंदगी गुज़ारेगा अल्लाह तआला उसके अपने क़दम ज़मीन में जमा देगा।

दीने इस्लाम का हुस्न

हमें चाहिए कि हम अल्लाह के बंदों से अल्लाह के लिए मुहब्बत करें। एक रिवायत में आया है कि ﴿الخلق عيال الله﴾ कि मख़्लूक़ अल्लाह तआला की अयाल है। याद रखना कि जो अल्लाह तआला की अयाल से मुहब्बत करता है अल्लाह तआला उस बंदे से मुहब्बत फ़रमाते हैं। इसीलिए फ़रमाया ﴿ارحموا من فی الارض یرحمکم من فی السماء﴾ तुम रहम खाओ जो ज़मीन पर हैं तुम

पर वह रहम करेगा जो परवरदिगार आसमानों में है। इसलिए अगर हम चाहते हैं कि अल्लाह तआला हम पर रहम फ़रमाएं तो फिर हमें चाहिए कि हम अल्लाह के बंदों पर रहम करें। अल्लाह के बंदों से अल्लाह की निस्बत से मुहब्बत रखें। दीन इस्लाम का हुस्न देखिए कि एक तो मोमिन से मुहब्बत करना होती है यह तो बड़ी बात है, यह तो होना ही चाहिए, आम इंसानों से भी रहम से पेश आने की तलक़ीन की गई है।

दुनिया में भाई की अहमियत

ईमान वालों से मुहब्बत इसलिए भी होनी चाहिए कि क़ुरआन मजीद में है कि ﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ (الحجرات:١٠)﴾ मोमिन एक दूसरे के भाई हैं। याद रखना कि दुनिया और आख़िरत में भाई ही काम आते हैं। क़ुरआन अज़ीमुश्शान से एक दलील सुन लीजिए। जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने नबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाया तो अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया ऐ मेरे प्यारे मूसा! ﴿إِذْهَبْ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى. (النزعت:٣٠)﴾ कि आप फ़िरऔन के पास जाएं क्योंकि वह बाग़ी और ताग़ी बना फिरता है। फ़िरऔन अपने लाओ लश्कर के साथ एक मुनज़्ज़म बादशाह था। उसकी अपनी गवर्मेन्ट थी। क्योंकि उसकी गवर्मेन्ट के निज़ाम से टकराना था। इसलिए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने महसूस किया कि मैं अकेला हूँ। इसलिए मेरा भी कोई मददगार होना चाहिए। अब मददगार की तलाश करने के लिए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की पहल नज़र अपने भाई पर बड़ी। जिसका ज़िक्र क़ुरआन पाक में यूँ फ़रमाया :

رَبِّ اشْرَحْ لِی صَدْرِی وَيَسِّرْلِی اَمْرِی وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِی. يَفْقَهُوْا قَوْلِی. واجْعَلْ لِّی وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِی. هَارُوْنَ اَخِی. (طٰهٰ ۲۵تا۳۰)

यानी दुनिया में भी जब सर पर बोझ पड़ता है तो भाई काम आता है। यह तो दुनिया का मामला है अब आख़िरत में देखते है हैं कि वहाँ भाई कैसे याद आएगा।

आख़िरत में भाई की अहमियत

क़यामत के दिन जब इंसान पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से अज़ाब आएगा और उस हैबतनाक और वहशतनाक दिन की हक़ीक़त उसके सामने खुलेगी तो फिर इंसान पनाहगाह ढूंढेगा। वहाँ भी मुजरिम बंदा अपने भाई की तरफ़ रुजू करेगा। क़ुरआन मजीद में इर्शाद रब्बानी है है ﴿يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ (عبس:۳۴)﴾ वह अपने भाई की तरफ़ रुजू करेगा। गोया दुनिया में और आख़िरत में भाई ही काम आएगा।

हमारी सख़्ती

लेकिन अजीब बात यह है कि आज हम जब सबसे पहले छुरी चलाते हैं तो भाई के रिश्ते पर छुरी चलाते हैं। आज हम मुसलमानों के घर में भी यही हाल है। छोटी-छोटी और मामूली-मामूली बातों पर रिश्तों नातों को तोड़ देते हैं।

झगड़ों का ख़ात्मा

एक हदीस मुबारक ऐसी है कि अगर उस पर अमल कर लिया जाए तो दुनिया के सब झगड़े ख़त्म हो सकते हैं। नबी

अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया :

﴿والذی نفسی بیده لا یؤمن عبد حتی یحب لاخیه ما یحب لنفسه﴾

क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कोई आदमी उस वक़्त तक मोमिन नहीं बन सकता जब तक अपने (मोमिन) भाई के लिए वही पसन्द नहीं करता जो वह अपने लिए पसन्द करता है।

अब बताएं जब हर बंदा दूसरों के साथ वैसा ही बर्ताव रखेगा जैसा कि वह अपने लिए पसन्द करता है तो फिर ताल्लुक़ात कशीदा होने की नौबत आएगी? बिल्कुल नहीं आएगी। आज जो भाईयों के दर्मियान नफ़रत की दीवारें खड़ी हो जाती हैं उसकी बुनियादी वजह यह है कि दूसरों की इज़्ज़ते नफ़्स का ख़्याल रखा जाता न उसके हुक़ूक़ की परवाह की जाती।

सिला रहमी का हुक्म

दीन इस्लाम ने हमें सिला रहमी का दर्स दिया है। अल्लाह तआला के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿صل من قطعك﴾ तू उससे जोड़ जो तुझ से तोड़े ﴿واعف عن من ظلمك﴾ और जो तुझ पर ज़ुल्म करे तू उसको माफ़ कर दे, ﴿واحسن من عصا اليك﴾ और जो तुझ से बुराई करे तो उससे अच्छा सुलूक करे। हमारे प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन तीन बातों के ज़रिए समुन्दर को कूज़े (घड़े) में बंद कर दिया है। जो आदमी इन तीन बातों पर अमल कर ले उसकी ज़िंदगी संवर सकती है। सुब्हानअल्लाह क्या ही जवामिउल कलिम (ठोस बातें) हमारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अता कर दिए गए

कि अगर उनमें से किसी एक बात पर अमल कर लिया जाए तो इंसान की हिदायत के लिए वह काफ़ी हो जाए।

क़ता रहमी (रिश्ते तोड़ने) का अंजाम

जो लोग रिश्तों नातों को तोड़ देते हैं वे अल्लाह तआला को बड़े नापसन्द होते हैं। एक रिवायत में आया है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त शबे क़द्र में बड़े-बड़े मुजरिमों को माफ़ फ़रमा देते हैं लेकिन कुछ बंदे ऐसे भी हैं जिनको अल्लाह तआला शबे क़द्र में भी माफ़ नहीं करते। उनमें से एक बंदा वह भी है जो क़ता रहमी करने वाला हो। मगर आज तो हालत यह है कि बहन-बहन से नहीं बोलती, भाई-भाई से नहीं बोलता, बच्चे माँ से नाराज़ फिरते हैं और वे रिश्ते जिनको अल्लाह तआला ने जोड़ने का हुक्म दिया आज लोग उनको तोड़कर खुश होते हैं। याद रखें कि यह क़यामत के क़रीब होने की निशानियाँ हैं। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि नौजवान अपने दोस्त के साथ रहकर खुश होगा और अपने माँ-बाप के साथ रहकर वह तंगी महसूस करेगा। आज के नौजवान का यही हाल है। किसी नौजवान से पूछ लें कि आप की क्या परेशानी है? तो वह कहेगा जी बस घरवाले पाबन्दियाँ लगाते हैं। अम्मी कहती है कि तुम्हें दस बजे से पहले घर आना चाहिए। अब्बू कहते हैं कि फ़ज्र की नमाज़ के लिए पाबन्दी से उठना चाहिए। बस उनको तो पाबन्दियों के लगाने के सिवा कोई काम है ही नहीं। और जब दोस्तों की महफ़िल में जाते हैं तो वे दोस्त उन्हें आज़ादी सिखाते हैं। इसलिए नौजवान अपनी फ़लाह इसी में समझते हैं कि घर की पाबन्दियों से हमारी जान

छूटे और दोस्तों में ज़िंदगी गुज़ारें। याद रखिए कि इसकी मिसाल ऐसे ही है कि बाज़ू यह सोचने लगे कि मैं तो जिस्म के साथ बंधा हुआ हूँ, कुछ कर ही नही सकता। इसलिए मेरी फ़लाह इसमें है कि मैं जिस्म से जुदा हो जाऊँ। अगर यह बाज़ू जिस्म से जुदा हो जाएगा तो इसमें कीड़े प्ड़ेंगे। इसको कुत्ते चबाएंगे, भंभोड़ेंगे और घसीटेंगे क्योंकि ये बेजान हो चुका है। उसकी ज़िंदगी में इसमें है कि यह जिस्म के साथ मिलकर रहे। इसी तरह औलाद की भी ज़िंदगी इसमें है कि वह माँ बाप के साथ मिलकर रहे क्योंकि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया ﴾البركة مع اكابركم﴿ तुम्हारे लिए बरकत बड़ों के साथ रहने में है। इसलिए हम बड़ों को साथ मिलकर रहने में अपनी भलाई समझें।

बेमिसाल किरादार

अच्छे अख़्लाक़ पैदा करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। ज़बानी बातें करना आसान है लेकिन किरदार को पेश करना बड़ा मुश्किल काम है। पिछले नबी अलैहिमुस्सलाम दुनिया में तशरीफ़ लाए तो उनकी क़ौमों ने उनसे पूछा कि आप के हक़ पर होने की क्या दलील है तो उन्होंने अपने मौजिज़े पेश किए। किसी ने ऊँटनी को पेश किया और किसी ने कहा कि मैं पैदाईशी अंधे को आँखों को वाला कर सकता हूँ। लेकिन जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से पूछा गया कि आपकी नबुव्वत की क्या दलील है? आपने उसके जवाब में फ़रमाया कि क्या मैंने तुम्हारे दर्मियान ज़िंदगी नहीं गुज़ारी? क्या तुम नहीं देखते कि मैं जवानी की ज़िंदगी तुम्हारे दर्मियान गुज़ार चुका हूँ। अजीब बात है कि नबी

अलैहिस्सलातु वस्सलाम को मजनून और जादूगर तो कहा गया मगर किसी को झूठा कहने की हिम्मत न हुई या यह कि मअज़ल्लाह उनकी आँख मैली थी या उनके किरादार की यह बात कच्ची थी। नहीं, काफ़िर उनके दुश्मन थे, मजनून और जादूगर तो कहते रहे मगर महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का किरदार इतना खुला धुला और साफ़ था कि जानी दुश्मनों को भी आपके किरादार पर बात करने की हिम्मत न हो सकी।

ख़ैरख़्वाही की तारीफ़

ईमान वालों को चाहिए कि उनकी सोच हमेशा मसबत (पोज़िटिव) हो, मन्फ़ी (नगेटिव) सोच से बचें। दूसरों की बुराईयों को भी नज़रअंदाज़ कर दिया करें और अपनी तरफ़ से उनके साथ अच्छाई का मामला करें। इसको ख़ैरख़्वाही कहते हैं। ऐसा बंदा अल्लाह तआला को बड़ा पसन्दीदा होता है जो दूसरों की ख़ैरख़्वाही करता है। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿الدين النصيحه﴾ कि दीन सरासर ख़ैरख़्वाही है। जैसे कहते हैं नाँ कि बंदे ने दो लफ़्ज़ों में बात समझा दी। इसी तरह नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इन दो लफ़्ज़ों में पूरा दीन समझा दिया।

दीन और ख़ैरख़्वाही का जोड़

अरबी में एक मुब्तिदा होता है और एक ख़बर होती है। आमतौर पर एक मोरिफ़ा होता है और दूसरा नकिरा होता है। लेकिन यहाँ अजीब मामला है लफ़्ज़ ﴿الدين﴾ अद्दीन भी मोरिफ़ा है और ﴿النصيحه﴾ अन्नसिहा भी मोरिफ़ा है। उलमा ने लिखा है

कि जब दोनों को मोरिफ़ा लाया जाए तो वे लाज़िम व मलज़ूम (एक दूसरे के लिए ज़रूरी) होते हैं और उनमें चोली दामन का साथ हुआ करता है। इसके यह माने बनेंगे कि जो दीन है वह सरासर ख़ैरख़्वाही है। और जो कुछ ख़ैरख़्वाही है वह सरासर दीन है। आप को जहाँ दीन मिलेगा वहाँ आपको ख़ैरख़्वाही मिलेगी और जहाँ आपको ख़ैरख़्वाही मिलेगी समझ लेना की वहाँ दीन मौजूद है और जहाँ आपको मुसलमान दूसरे मुसलमान का बदख़्वाह (बुरा चाहने वाला) नज़र आए तो समझ लेना कि दीन दर्मियान से निकल चुका है।

मोमिन और ख़ैरख़्वाही

मोमिन का तो काम ही यह है कि सारी दुनिया की ख़ैरख़्वाही करे। हर एक को उससे फ़ायदा पहुँचे। बजाए किसी को तकलीफ़ पहुँचाने के उनके दुख दर्द में काम आए। उसका तर्ज़े ज़िंदगी ऐसा हो कि उसके अज़ीज़ रिश्तेदार, पड़ौसी, मौहल्लेदार, दोस्त अहबाब सबको यक़ीन हो कि ऐसा बाअख़्लाक़ इंसान है कि हमें इससे तकलीफ़ नहीं पहुँच सकती।

एक बार कुछ लोग बैठे हुए थे कि इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तश्रीफ़ लाए और उनके पास खड़े हो गए। फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें यह न बताऊँ कि तुम में से अच्छा कौन है और बुरा कौन है? सब ख़ामोश रहे। आपने यह सवाल तीन बार दोहराया। फिर एक आदमी ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! ज़रूर बताइए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम में से बेहतरीन आदमी वह है जिसे लोग ख़ैर की उम्मीद रखते हों

और शर से इत्मिनान रखते हों और बदतरीन शख़्स वह है जिससे लोग ख़ैर की तो उम्मीद न रखते हों और उसके शर से ख़ौफ़ खाते हों।

देखें कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने किस क़द्र जामे अंदाज़ में यह बात की। यह नहीं फ़रमाया कि लोगों को तकलीफ़ न पहुँचाओ बल्कि फ़रमाया कि अपना तर्ज़े ज़िंदगी ऐसा रखो कि लोगों के दिल में यह बात बैठ जाए कि सारी दुनिया से हमें नुक़सान हो सकता है लेकिन इस बंदे से हमें नुक़सान नहीं पहुँच सकता।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० के पड़ौस की क़ीमत

"हमबर्ग" जर्मनी का एक शहर हैं। वहाँ हमारे एक दोस्त रहते हैं। वह जर्मन एयरलाइन में काम करते हैं। एक बार उनके घर ठहरना हुआ। मैंने उनसे पूछा कि मस्जिद यहाँ से एक घंटे के फ़ासले पर हैं आपने मस्जिद से इतनी दूर घर ले लिया? वह कहने लगा, यहाँ पड़ौसी बहुत अच्छे हैं। बड़े पढ़े लिखे जर्मन लोग रहते हैं और वे मुसलमानों को यहाँ किराए पर भी मकान नहीं नहीं देते। बस मुझे यहाँ मकान मिल गया और मैं यहीं रहता हूँ। मैंने पूछा कि ये लोग मुसलमान को किराए पर मकान क्यों नहीं देते? कहने लगे कि वे यह कहते हैं कि मुसलमान दूसरों के हुक़ूक़ का ख़्याल नहीं करते और जिस जगह मकान बना लेते हैं वह पूरी कम्युनिटी का गंदा प्वाइंट बन जाता है। इसलिए वे उनको किराए पर मकन नहीं देते।

मैंने कहा, अब मैं आपको एक बात बताऊँ? कहने लगा

बताइए। मैंने कहा कि जब हम सही मानों में मुसलमान थे तो उस वक़्त यह हालत थी कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० के पड़ौस में एक यहूदी रहता था। उसे मकान बेचने की ज़रूरत पेश आई। एक आदमी ख़रीदने के लिए आया तो उसने पूछा कि आप यह मकान कितने में देंगे? वह यहूदी कहने लगा, दो हज़ार दीनार का। उसने कहा, जी इस जैसा मकान तो यहाँ एक हज़ार दीनार का मिलता है। यहूदी उसके जवाब में कहने लगा कि वाक़ई एक हज़ार दीनार तो इस मकान की क़ीमत हे और दूसरा हज़ार दीनार अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० के पड़ौस की क़ीमत है, सुब्हानअल्लाह।

मोमिन बंदे का मक़ाम

अबूदाऊद शरीफ़ की एक रिवायत है कि एक बार नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम तवाफ़ फ़रमा रहे थे। तवाफ़ करते हुए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काबा की तरफ़ देखा और फ़रमाया, ऐ काबा! तुझे अल्लाह ने बड़ी शान अता की है लेकिन ﴿حرمة المؤمن ارجح من حرمة الكعبة﴾ मोमिन का एहतिराम अल्लाह के नज़दीक तेरे एहतिराम से ज़्यादा है। इससे मालूम हुआ कि शरिअत मुताहरा ने मोमिन को एक मक़ाम अता किया है। ज़रा ग़ौर कीजिए कि हम काबा की तरफ़ तो मुँह करके सज्दा करें और काबा के ग़िलाफ़ को पकड़कर दुआएं भी मांगे और बोसे भी दें लेकिन मोमिन से नफ़रत करें। उसे ईज़ा पहुँचाएं और उसकी बदख़्वाही करते फिरें तो फिर हमारा ईमान कैसा होगा? मोमिन अपनों और परायों सबका ख़ैरख़्वाह होता है। हम दीन को समझने

की कोशिश करें कि दीन हम से चाहता क्या है। किसी ने क्या ख़ूब कहा—

شنیدم کہ مردان راہ خدا
دل دشمناں ہ نہ کردند تنگ
ترا کے میر شود ایں مقام
کہ با دوستاں ہست پیکار جنگ

कि अल्लाह वालों के बारे में हमने सुना कि वे तो दुश्मनों के दिलों को भी तंग नहीं किया करते थे। तुझे यह मक़ाम कहां से नसीब हुआ कि तू अपनों से लड़ने पर आमादा है। हम अपनों को दुख देते फिरते हैं।

ग़ल्तियों की तलाश

चुनाँचे हालत यह होती है कि बीवी ने अपने मियाँ की ग़ल्तियों पर दूरबीन फ़िट की होती है और मियाँ ने अपनी बीवी की गल्तियों पर दूरबीन फिट की होती है। कहने को तो वह मियाँ बीवी होते हैं और ज़िंदगी के साथी होते हैं मगर हालत यह होती है कि वह इसकी ग़ल्तियों की तलाश में है और यह उसकी ग़ल्तियों की तलाश में है। वह इसको नीचा दिखाने की कोशिश में है और यह उसको नीचा दिखाने की कोशिश में है। क्या मुसलमानी बाक़ी रही? जिनको अल्लाह तआला ने लिबास कहा उनकी यह हालत है। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया ﴿هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ (البقرة:۱۸۷)﴾ वह तुम्हारा लिबास हैं और तुम उनका लिबास हो। लिबास इंसान की बदसूरती को ख़ूबसूरती में बदल

देता है और जिस्म के ऐबों को छिपा देता है। जिसको अल्लाह तआला ने लिबास कहा हम उसकी कमियाँ ढूंढ रहे होते हैं बल्कि सच्ची बात यह है कि जो हम से ज़्यादा क़रीब होता है उतना ही हम से ज़्यादा तंग होता है। यह कितनी अजीब बात है।

सतरपोशी की फ़ज़ीलत

मेरे दोस्तो! शरिअत मुताहरा ने माफ़ कर देने को बहुत पसन्द फ़रमाया है। हदीस पाक में आया है कि जो इंसान जितना जल्दी दूसरों की ग़ल्तियों को माफ़ करेगा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उतना ही जल्दी क़यामत के दिन उसकी ग़ल्तियों को माफ़ फ़रमाएंगे। और जो इंसान दूसरो के ऐबों को छुपाएगा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़यामत के दिन उसके ऐबों को छिपाएंगे। ये बातें आज दिलों में बिठाने के क़ाबिल हैं।

मोमिन के दिल को ख़ुश करने की फ़ज़ीलत

एक रिवायत में है कि जिसने किसी मोमिन के दिल को ख़ुश किया अल्लाह तआला उस ख़ुशी से एक फ़रिश्ता पैदा फ़रमा देते हैं। वह फ़रिश्ता क़यामत तक अल्लाह तआला की हम्द व सना बयान करता रहता है और उसके ज़िक्र का सवाब उस बंदे के आमालनामे में लिखा जाता है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लत ने फ़रमाया कि जिसने मेरे किसी उम्मती की हाजत पूरी की ताकि उसका दिल ख़ुश करे तो उसने मुझे ख़ुश किया और जिसने मुझे ख़ुश किया उसने अल्लाह को

ख़ुश किया और जिसने अल्लाह तआला को ख़ुश किया अल्लाह तआला उसको जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।

इन हदीसों के पढ़ने के बाद हम अपने ऊपर भी ग़ौर करें कि क्या हमने कभी कोई काम सिर्फ़ इसलिए किया है कि मेरे मोमिन भाई का दिल ख़ुश हो जाए।

अपने दूसरे भाईयों की छोटी से छोटी ज़रूरतों का पूरा करना बंदे के उम्र भर के गुनाहों की बख़्शिश का सबब बन सकती है।

एक और हदीस में फ़रमाया गया कि जब कोई मोमिन अपने मोमिन भाई के काम के लिए कोशिश करता है तो अल्लाह तआला उसको जहन्नम से तीन ख़न्दक़ दूर कर देते हैं और हर ख़न्दक़ की चौड़ाई ज़मीन व आसमान के दर्मियान में फ़ासले के बराबर है।

एक हदीस में है कि जिसने किसी पेरशान हाल की मदद की ख़ुदा उसके लिए तेहत्तर मग़फ़िरतें लिख देगा। उनमें से एक में उसके सब काम बन जाएंगे और बहत्तर क़यामत के दिन उसके दर्जे बुलन्द करने के लिए होंगे, सुब्हानअल्लाह।

ज़बान की आफ़तें

मेरे दोस्तो! अगर हम किसी के दिल को ख़ुश नहीं कर सकते तो उसके दिल को रंज भी न पहुँचाया करें। याद रखना कि बीमारियों में सबसे बुरी बीमारी दिल की बीमारी है और दिल की बीमारियों में सबसे बुरी बीमारी दिल आज़ारी (तोड़ना) है। मगर हम बड़ी दिलेरी से दूसरों की दिल आज़ारी कर रहे होते हैं। ख़ाविन्द बीवी को कोई ऐसी बात कर देता है कि वह बेचारी सारा

दिन रोती रह जाती है और बीवी ख़ाविन्द को ऐसी बात कह देती है कि उस बेचारे का सुकून बर्बाद हो जाता है। इसीलिए कहते हैं कि तलवार के ज़ख़्म तो हल्के पड़ जाते हैं मगर ज़बान के ज़ख़्म हल्के नहीं हुआ करते। यह ज़बान उन रिश्तों को तोड़ देती है जिन रिश्तों को इंसान तलवार के ज़रिए भी नहीं तोड़ सकता। आज हमें ज़बान चलाने की बड़ी आदत है। हर वक़्त ही बोलते रहते हैं। सुनने की आदत नहीं, सिर्फ़ बोलने की आदत है।

बदज़बानी का अंजाम

एक बार एक आदमी ने आकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम से अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! फ़लाँ एक औरत है जो नमाज़, रोज़ा और सदक़ा कसरत से करती है लेकिन वह अपने पड़ौसियों से बदज़बानी करती है, उसके बारे में क्या हुक्म है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह औरत दोज़ख़ में जाएगी। फिर उस आदमी ने अर्ज़ किया कि एक औरत नफ़्ल रोज़े, नमाज़ें और सदक़ात कम अदा करती है लेकिन दूसरों को अपनी ज़बान से तकलीफ़ नहीं देती। यह सुनकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह औरत जन्नत में जाने वाली है।

इससे पता चलता है कि बदखुल्क़ी किसी क़द्र बुरी चीज़ है कि दूसरों से बदज़बानी करने और तकलीफ़ पहुँचाने वाले की नफ़्ली इबादतें भी उसके काम नहीं आतीं।

गुस्सा पीने की फ़ज़ीलत

हदीस पाक में आया है कि जिस बंदे को कोई तलकीफ़ पहुँचे

ओर वह उसका बदला भी ले सकता हो मगर वह अल्लाह के लिए माफ़ कर दे और ग़ुस्से का घूंट पी जाए तो इस ग़ुस्से के घूंट को पीने पर अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस बंदे को अपने चेहरे का दीदार अता फ़रमाएंगे। सुब्हानअल्लाह! यह कितने नफ़े का सौदा है। इसलिए हम अल्लाह के लिए अल्लाह के बंदों को माफ़ कर दिया करें। हम बदला ले भी सकते हों तो न लिया करें।

बीवी से हुस्ने सुलूक का बदला

हज़रत अक्दस थानवी रह० ने एक वाक़िआ लिखा है कि एक आदमी की बीवी से ग़लती हो गई। इतना बड़ा नुक़सान था कि अगर वह चाहता तो उसे तलाक़ दे देता क्योंकि वह हक़ पर था। लेकिन उसने उसे अल्लाह की बंदी समझकर माफ़ कर दिया। कुछ अरसे बाद उसकी वफ़ात हो गई। किसी ने उसे ख़्वाब में देखा तो उससे पूछा, सुनाओ भई! आगे क्या बना? कहने लगा, बस अल्लाह तआला ने मुझ पर मेहरबानी फ़रमा दी और मेरे गुनाहों को माफ़ कर दिया। उसने पूछा किस वजह से आपकी माफ़ी हुई? वह कहने लगा कि एक ऐसी बात थी जो मैं भूल ही गया था। हुआ यह था कि एक बार मेरी बीवी से कोई ग़लती हो गई थी। मैं अगर चाहता तो सज़ा देता। तलाक़ दे देता। मगर मैंने उसे अल्लाह की बंदी समझकर माफ़ कर दिया। परवरदिगार ने कहा, तूने उसे मेरी बंदी समझकर माफ़ कर दिया था। आज मैंने तुझे अपना बंदा समझकर माफ़ कर देता हूँ।

तर्बियत की कमी

बल्कि कई दफ़ा तो यह भी देखा कि दो बंदे बहस कर रहे

होते हैं और वे दोनों बोल रहे होते हैं और एक दूसरे की बात कोई भी नहीं सुन रहा होता है। यूँ लगता है कि हमें किसी ने ज़िंदगी गुज़ारने का सलीक़ा ही नहीं सिखाया। तालीम तो स्कूलों और कालिजों में पा लेते हैं मगर हम तर्बियत किससे लेते हैं किसी से भी नहीं।

मेरे दोस्तो! तर्बियत अल्लाह वालों से मिलती है। आज अल्लाह वालों के पास नहीं आते और तर्बियत पाते नहीं, इसलिए इंसान नहीं बन पाते और अल्लाह के बंदों को दुख पहुँचाते हैं। एक छोटी सी बात बताता हूँ। एमए पास बंदा गाड़ी चला रहा होता है। उसे पता होता है कि फाटक बंद है, वह बजाए लाईन में खड़ा होने के उधर से मोड़कर आने वाले ट्रेफ़िक के रास्ते में गाड़ी को खड़ा कर देगा। तेरे एमए पास होने का क्या फ़ायदा? तुझे तो इतनी भी समझ नहीं कि जब फाटक खुलेगा तब ही गाड़ी आगे जाएगी। फिर जब फाटक खुलता है तो एक दूसरे के लिए हार्न बजा रहे होते हैं और एक दूसरे को खा जाने वाली नज़रों से देख रहे हे।ने हैं। हम में इतनी भी अहलियत नहीं है कि इतनी तालीम के बाद हम महसूस कर सकें कि दूसरों को हुक़ूक़ क्या होते हैं। यह तर्बियत अल्लाह वालों की सोहबत में बैठकर मिलती है। आज इस ताल्लुक़ को अख़्तियार करना बड़ा बुरा समझते हैं क्योंकि उसके बाद कोई रोक-टोक करेगा और समझाएगा जबकि हमारा नफ़्स तो नहीं चाहता कि कोई हमें समझाए। हम समझते हैं कि हम समझे समझाए पैदा हुए हैं। उसकी वजह से हम समाज में दूसरों को सुख पहुँचाने के बजाए उल्टा दुख पहुँचा रहे होते हैं।

सोहबत का असर

हम सातवी आठवीं जमाअत में पढ़ते थे। मेरा एक क्लास फ़ैलो एक देहात से आता था। वह हमें देहात के बारे में बातें सुनाया करता था कि गेहूँ ऐसे उगते हैं, ऐसे हल चलाते हैं, ऐसे पानी लगाते हैं और ऐसे कुँए होते हैं। हमने ये चीज़ें कभी देखी नहीं थीं क्योंकि शहरी ज़िंदगी गुज़ारने वाले थे। इसलिए हमें उसकी बातें बड़ी अजीब लगती थीं।

एक बार उसने हमें दावत दी और कहा कि जुलाई और अगस्त दो महीने की स्कूल की छुट्टियाँ हो रही हैं, आप छुट्टियों में हमारे हाँ आना। हम आपको देहात दिखाएंगे। हमने दावत क़ुबूल कर ली। चुनाँचे हमने घर आकर तज़्किरा भी कर दिया कि हमारा एक अच्छा क्लास फ़ैलो है, उसने हमें अपने हाँ आने की दावत दी है और हमारा भी जी चाहता है कि हम जाकर देहात देखें। भाई ने कहा, बहुत अच्छा। हम किसी दिन आपको ले जाएंगे। चुनाँचे एक दिन भाई ले गए। हम देहात में ख़ूब घूमे फिरे।

वहाँ पर जब हम एक खेत में पहुँचे तो हमने देखा कि वहाँ गोबर पड़ा हुआ है। हमारी समझ से यह बात बाहर थी कि ख़ुश्क गोबर का ढेर खेत में क्यों पड़ा है। हमने एक किसान को देखा कि वह उस गोबर को मिट्टी में मिला रहा है। अब हमें और भी ज़्यादा अजीब बात लगी। लिहाज़ा हमने हैरान होकर उस किसान से पूछा, जी आप यह क्या कर रहे हैं? उसने कहा, यहाँ में सब्ज़ी बीजूंगा। हमने कहा, इधर तो सब्ज़ी का बीज डालेंगे और उधर आप यह गंदगी और बदबूदार चीज़ मिट्टी में मिला रहे हैं। वह

कहने लगा, आप शहर के रहने वाले हैं, आपकी नज़र में तो यह गंदगी और बदबूदार नजासत है लेकिन हक़ीक़त बात यह है कि हम इसको ज़मीन में इसलिए मिलाते हैं कि जब इसके बाद हम ज़मीन में सब्ज़ी बोएंगे तो यह सब्ज़ी को फ़ायदा देगी, गोया हमारे लिए यह खाद का काम देती है।

उस वक़्त मेरी उम्र छोटी थी। लिहाज़ा बात को पूरी तरह न समझ सका। आज कभी कभी लड़कपन का वाक़िआ याद आता है तो तब यह बात समझ में आती है कि ऐ बंदे जिसे हम गंदगी कहते हैं और उससे नफ़रत करते हैं अगर उस गंदगी को भी किसी खेती में डाल देते हैं तो वह भी साथ वाली खेती को फ़ायदा देती है तो मोमिन होकर भी अगर साथ रहने वाले को फ़ायदा नहीं देता तो मालूम हुआ कि तू गंदगी ओर निजासत से भी गया गुज़रा है।

ग़ौर तलब बात

आज हम ज़रा अपनें समाज पर नज़र डालें। दिन-ब-दिन हमारी अख़्लाक़ी हालत गिरती जा रही है। वह मेहर व मुहब्बत और वफ़ाएं नहीं रहीं जो पहले हुआ करती थीं। रंजिशें और कदूरतें हमारे समाज में कुछ इस तरह उतर चुकी हैं कि बुग़्ज़ व इनाद और झगड़ा फ़साद अब आम बातें हो गयी हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लत ने फ़रमाया कि उस क़ौम पर रहमत नाज़िल नहीं होती जिस में कोई क़ता रहमी करने वाला मौजूद हो। आज हमारे समाज में भी बेबरकती इसी वजह से है कि हमारी क़ौम में इत्तिहाद और यगानगत की बजाए कीना व हसद

और नाइत्तिफ़ाक़ी का दौर दौरा है। अब ज़रूरत इस बात की है कि हम अपना हौसला बड़ा करें और दूसरों की ख़ैरख़्वाही करना सीखें। इस के लिए हमें अपने आप से पहल करना होगी और बदखुल्क़ी का जवाब खुशखुल्क़ी से देना होगा।

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० की नसीहत

एक बार हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० के पास एक आदमी आया। उसने आपके सामने अपने भाई की शिकायतें शुरू कर दीं कि जी वह मुझे बड़ा तंग करता है और हर वक़्त वह मेरे रास्ते में कांटे बोता रहता है और मेरा दिल चाहता है कि मैं उससे बदला लूँ। हज़रत ख़्वाजा साहब रह० ने यह सुनकर उसको नसीहत फ़रमाई कि ऐ भाई अगर तेरे रास्ते में कोई कांटे बिछाए तो तू उसके रास्ते में कांटे न बिछाना वरना पूरी दुनिया में कांटे ही कांटे हो जाएंगे।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें अच्छे अख़्लाक़ वाली ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए।

मुनाजात

दिले मग़मूम को मसरूर कर दे
दिले बे नूर को पुर नूर कर दे
फ़िरोज़ा दिल में शमए तूर कर दे
ये गोशा नूर से मामूर कर दे
मेरा ज़ाहिर संवर जाए इलाही
मेरे बातिन की ज़ुलमत दूर कर दे
मए वह्दत पिला मख़मूर कर दे
मुहब्बत के नशे में चूर कर दे
न दिल माइल हो मेरा उनकी जानिब
जिन्हें तेरी अता मग़रूर कर दे
है मेरी घात में ख़ुद नफ़्स मेरा
ख़ुदाया उस को बे मक़दूर कर दे
दिले मग़मूम को मसरूर कर दे
दिले बेनूर को पुरनूर कर दे

मुनाजात

आह जाती है फ़लक पर असर लाने के लिए
बादलो! हट जाओ दे दो राह जाने के लिए
ऐ दुआ! अर्ज़ कर अर्शे इलाही थाम कर
ऐ ख़ुदा! अब फेर दे रुख़ गर्दिशे अय्याम के
सुलह थी जिनसे वो अब बरसरे पैकार हैं
वक़्त और तक़्दीर दोनों दर पए आज़ार हैं
ढूंढते हैं अब मदावा सोज़िशे ग़म के लिए
कर रहे हैं ज़ख़्मी दिल फ़रियाद मरहम के लिए
रहम कर अपने न आईने करम को भूल जा
हम तुझे भूले हैं तू न हम को भूल जा
ख़ल्क़ के रांदे हुए दुनिया के ठुकराए हुए
आए हैं अब तेरे दर पर हाथ फैलाए हुए
ख़्वार हैं बदकार हैं डूबे हुए ज़िल्लत में हैं
कुछ भी हैं तेरे महबूब की उम्मत में हैं
हक़ परस्तों की अगर की तूने दिलजोई नहीं
ताना देंगे बुत कि मुस्लिम का ख़ुदा कोई नहीं

(आग़ा शरर)